* प्रस्तावना *

॥ श्री जिनायनमः । श्रीसद्गुरुभ्योनमः ॥

इस संसार मयी महा अरण्य में अनादि काल से जीव श्री जिन प्ररूपित मार्ग से विमुख होके कुगुरु हीणा चारियों की संगति से कुमार्ग अङ्गीकार कर परिभ्रमण कर रहा है, नरक निगोदादि के अनन्तानन्त दुःखों का उप भोगी हो अपनी पवित्रात्मा को पाप कर्मरूप अशुचि से अपवित्र करता है, ज्ञान दर्शन चारित्रादि निजगुनों को विसार पञ्च इन्द्रियों की विषय विकारों में लिप्त होके उन्हे ही अपना कर्त्तव्य समझ रहा हैं, जैसे कोई मनुष्य मदरा पान के नशे में पागल होके अपने अच्छे २ प्रासादों की सुख सय्या को छोड महा दुर्गन्ध भूमिको ही सुख सय्या समझ किसी चतुर पुरुष का कहना न मान वहीं लोटना अपना परम कर्त्तव्य जानता है वैसे ही जीव मोह मिथ्यात्व मयी नशेकी मतवाल में मतवाला बन जिन कथित सुख सय्या को छोड इन्द्रियों के काम भोगादि सय्या को ही सुख सय्या जान उसही में रञ्जरत्ता रहना अत्यावश्यकीय कार्य्य समझता है, यदि सच्चा और स्वच्छ वीर मार्ग में चलने वाले महाऋषी शुद्ध निःस्नेही मोक्ष मार्ग बतावें तो उलटी उन्ही महात्माओं को अ मान कर उन निरारम्भी निष्परिग्रहों की निन्दा करने को तत्पर बने रहते हैं, किन्तु जिन कथित मार्ग क्या है इस को पहचानने की कोशिश नहीं करते, संसारी मार्ग जिन कथित मार्ग से एकदम विरुद्ध हैं इसलिए चतुर्गति संसार अटवी में भ्रमण करने वालों को मुक्ति मार्ग अच्छा नहीं लगता है यदि कभी वीतराग मार्ग जानने की कोई हलु कर्म्मी जीव इच्छा करें तो हीनाचारी

कुगुरू कु दृष्टान्त लगाके भोले लोकों को बहका देते हैं, परंतु न्यायी और विद्वान पुरुष तो सत्या सत्यका निर्णय किये बिना नहीं रहते, जिन हलु कर्म्मी को संसार के सुखों सें अरुचि हो गई है वे सपदृष्टी तो जानते है कि जितने जितने सावद्य जोगों का त्याग किये सो धर्म्म और आगार रक्खा सो अधर्म्म है, जिस कार्य्य को साधु मुनिराज सावद्य जानके त्यागा है उस कार्य्य को करने कराने और अनुमोदनें में पाप है, जिन आज्ञा में धर्म आज्ञा बाहर अधर्म श्रद्धना ही सम्यक्त है, जिस कार्य्य की जिन तथा मुनी आज्ञा देवे नहीं और अनुमोदना भी नहीं करते तथा अनुमोदना करनें सें साधूको प्रायश्चित आवे वो वही कार्य्य गृहस्थ करे करावे और भला जाने सो एकान्त पाप हैं, बस यही जिन मार्ग की कुञ्जी है इसे जो अच्छी तरें सें जान लिया है उसी के निगृन्थ प्रवचन अर्थ और परम अर्थ है।

सद्गुरुओं नें कृपा पूर्वक भव्य जीवों को संसार रूपी समुद्र से तैरने के लिये जिनागमानुसार अनेक ग्रन्थ सरलता सें बना के उपकार किया है इसके लिये उन्ह महा पुरुषों को जितना धन्यवाद दिया जाय सो थोड़ा है निन्दक लोक भलें ही उन जितेन्द्रियों की निन्दा करो परंतु जो संसार मार्ग सें विमुख और मोक्ष मार्ग सें सन्मुख विज्ञजन है सो तो उनका हृदय सें आदर करते हैं, स्वामी श्री भीखनजी के चतुर्थ पाट श्रीमद्जया-चार्य्य (श्री जीतमलजी स्वामी नांव) महा प्रभाविक और शास्त्र वेत्ता हुए हैं उन्हो नें भगवती आदि कई सूत्रों की जोड ढाल बंध सरल भाषा में बना के जिन बचनों को यथा तथ्य प्रगट किया है तथा अनेक गृन्थ बनाये हैं जिन्हे पढ़ने सुनने

सें न्यायाअर्थीयों को तत्थ्या तथ्य का संपूर्ण ज्ञान-होता है, यह हित शिक्षावली "प्रश्नोत्तर तत्वबोध,, स्वामी काही बनाया हुआ है

॥ प्रश्नोत्तर तत्वबोध बनने का कारण ॥

सम्वत १६३३ की साल में अजीमगंज (मकसुदाबाद) शहर सें बाबू कालूरामजी १ प्रश्न पात्रि का ५२ दोहा में बनाके लाड णो के श्रावकों को स्वामी श्री जीतमलजी महाराज सें मालूम करने को भेजा जिसकी नकल—

॥ प्रश्न पत्रिका ॥

॥ श्री जिनायनमः ॥

॥ दोहा ॥

चरण कमल जिन राज का, जामें मुज मन लीन ।
मधु कर जिहां गुंजत रहै, ज्ञाना मृत रसपीन ॥१॥
नाभेयादिक जिनेश्वरा, तीर्थंकर चोवीश ।
गणधर पाठक साधु पद, ध्यावत विश्वा वीश ॥२॥
जिनवर भाषित सुद्ध नय, आगम उदधि अपार ।
भ्रमत इण कलि काल में, जिन प्रतिमां आधार ॥३॥
स्वर्ग निवाशी देवगण, वलि पाताल कुमार ।
साश्वत जिन प्रतिमां भणी, नित प्राति करत जुहार॥४॥
एहवी प्रतिमां जिन तणी, प्रणमी तेहना पाय ।
पत्र लिखुं अति प्रेम सुं, मुनिवर नां गुण गाय ॥५॥

क्रोध लोभ मद मोह सवे, त्यागी विषय विकार ।
जीत मल महाराज कूं, नमत सकल नर नार ॥६॥
दोष वँयालीश टाल ते, लेते शुद्ध आहार ।
भवि जन कुं प्रति बोधता, विचरै धरा मजार ॥७॥

॥ सोरठा ॥

तीन करण थिर धार, जीते बावीश परि सह ।
जपते दिल नवकार, सुद्ध करि संजम निर वहे ८

॥ दोहा ॥

सतावीश गुणे करी, पालो निज . आचार ।
पंच महाव्रत पालता, एहवा तुम अणगार ॥९॥
निर जित मद उनमाद पणो, वर्जित विषय विकार ।
तर्जित कर्मादिक अशुभ, गर्जित नाण उदार ।१०।
सहर लाडणुं अति भलो, विचरो तिहां धर नेह ।
अप्रति बंध विहार करी, बैठा सम्बर गेह ॥११॥
तुम गुण गण मकरंद से, भविजन भमर लोभाय ।
देश विदेशे मानवी, कर जोडी गुण गाय ॥१२॥
में पिण गुण श्रवणे सुणी, भेटण की मन चाय ।
ते दिन सफल गीणिसहूं, वंदी तुम रा पाय ।१३।
कर्म ईंधन कूं जालवा, प्रत्यक्ष अग्नि समान ।
इन्द्रिय पांचु वश करी, एहवा तप की खान ॥१४॥

गुण सगला तुम अङ्ग में, दीखत है प्रत्यक्ष ।
आगम अर्थ विचार के, किम ताणो इक पक्ष ॥१५॥
पक्षा पक्ष कोइ मत करो, ज्ञान दृष्टि मनलाय ।
जिनवर प्रतिमां देख तां, दुःख दोहग टलजाय ।१६।
च्यार निक्षेपा जिन कह्या, भाव थापना नाम ।
सप्त नये करी देखल्यो, वखाण ठामों ठांम ॥ १७ ॥
अम्बड श्रेणिक राय तिम, रावण प्रमुख अनेक ।
विवध परः भक्ति करी, पाम्या धर्म विवेक ॥१८॥
पंचम् अंगे भाषियो, प्रगट पणों अधिकार ।
सूर्याभे जिन वंदिया, राय प्रश्रेणी मंजार ॥ १९ ॥
विजय देवता ये करी, जिन पूजा जिन राज ।
पक्ष पात कूं छोडके, सारो आतम काज ॥ २० ॥
छठे ज्ञाता अङ्ग में, द्रोपदी पांडव नार ।
मन वचकाया वश करी, पूज्या जिन इकतार ॥२१॥
जंघा विद्या चारण, मुनिवर गुण की खान ।
ते पिण प्रतिमां वंदिता, पंचम् अङ्ग वखान ॥२२॥
जिन प्रतिमां जिन सारखी, भाखो श्री महावीर ।
कोई शङ्का मत आण ज्यो, जिम पामो भवतीर ।२३।
जिनवर मत स्याद्वाद है, मत जाणो करी एक ।
दया दान मन धारल्यो, जद आवे विवेक ॥२४॥

जीव दया पाल्यां थकां, निश्चै होय उपगार ।
दया धर्म को मूल है, एहवो आगम सार ॥२५॥
घात करंता जीव की, छोडावै कोई जाय ।
अभय दान तेह नें कह्यो, आगम में जिन राय ।२६।
ज्यो न छुडावो जीव कूं, तो अनु कंपा नांय ।
अनु कंपा विन जीव कूं, समकित पुष्टि न थाय ।२७।
गोशालो जलता थकां, जिनजी दियो विचार ।
शीतल लेस्याये करी, तेजु लेस्या वार ॥ २८ ॥
ज्यानैं कहता चूकिया, ते तो मिथ्या वात ।
कल्पातीत स्वभाव है, तीन लोक के नांथ ॥२६॥
नेम कुँवर तोरण चढ्यां, देखी जीव विनाश ।
अनु कंपा मन लायके, छोडाई प्रभु पाश ॥३०॥
आप बडे अणगार हो, पिण ए मोटी खोट ।
ज्यो नवि जीव दया करो, बंधै पाप शिर पोट ।३१।
पंच अधिक चालीशतो, कह्या सूत्र जिन राय ।
द्वात्रिंश तुम्ह मानता, कुण हेतु के न्याय ॥ ३२ ॥
भाखा नहिं सूत्र में सहु, आगम के नाम ।
ते बत्तीशां बीच है, देखो चित करी ठांम ॥ ३३ ॥
सांचा बत्तीश मानता, और न मानों सांच ।
के कोइ प्रगटयो ज्ञान तुम्ह, अथवा मन की खांच ।३४।

सत्य परुपणा ज्यो करो, तो मानो महाराज । गहन
अर्थ आगम तणा, भाख्या श्री जिन राज ॥३५॥
मुखपती मुख बांधता, कुंण सूत्रें अनुसार ।
मनकी भ्रमता मिटी नहिं, ऐ२ विषम प्रकार ॥३६॥
स्तवसमाके संजोग सुं, उपजत जीव असंख्य ।
जीव समूर्च्छिम इान्द्रियन, यामें नाहिं को वंक ।३७।
गण धर गौतम स्वाम कूं, मिया देवी कह्यो एम ।
मुख वांधो वस्त्रें करी, गंध न आवे जेम ॥ ३८ ॥
ज्यो पहलां वंधी हुंती, वलि वंधन किम होय ।
एह व्यतिकर तुम जाण जो, सूत्र विपाके जोय ।३९।
जम्भा छिंका कारणे, मुख ढांके मुनि राय ।
दशवे कालिक सूत्र में, देखो मन चितलाय ।४०।
सूत्र सभे तुम देखल्यो, वंधण का नाहिं पाठ ।
भगवती ज्ञाता आदि में, साख सूत्र की आठ ।४१
इत्यादिक सूत्रां तणां, मानो नाहिं वचन्न ।
आप मते नहिं मानता, करल्यो लाख जतन्न ।४२।
लिख्या अजीमगंज सहर सुं, पत्र अधिक उच्छरंग ।
खमत खामणा मान ज्यो, करि तीन करण इक संग ४३
मुनि गुण आति मुज अल्पथी, कैसे लिखुं बणाय ।
जैसें जल सब उदधि को, घट विच नाहिं समाय ।४४।

कुशल खेम वरतै तिहां, धर्म थकी जय कार ।
इहां पिण सु गुरु पसाय थी, आणंद हरष अपार ।४५।
भक्ति पत्र भावे लिख्यो, धरज्यो चित अधिकाय ।
अधि को ओछो ज्यो हुवे, ते खम ज्यो मुनिराय ।४६।
लिखज्यो उत्तर एह नो, मत धरज्यो मन रीश ।
मुज मति सारू में लिख्यो, धरज्यो मन सु जगीश ४७
एहवि परुपणा ज्यो करो, तो होय लाभ अपार ।
मुग्ध जीव संसार का, उतरै पैलै पार ॥ ४८ ॥
देखो बुंटे रायजी, तिम वलि आतम राम ।
त्यागी मन भ्रम आपणो, सारया भविजन काम ४९
थावो ज्यो तुम एहवा, आगम अर्थ विचार ।
मारवाड ढुंढाड में, बहु जन पामे पार ॥ ५० ॥
सकल संघ श्रावक सहु, वांची धर ज्यो प्रीत ।
उत्तर पाछा अपाव ज्यो, ए पंडित जन रीत ।५१।
मुनिवर ना गुण गावतां, होता चित आराम ।
मन तन कपट तजी करी, वंदत कालूराम ॥५२॥

॥ कलश ॥

इम करी रचना अतिही सुंदर, वांचता मन उल्लसै ।
देवाधि देवतिलोय स्वामी अंतर जामी मन वशै ॥
संवत उगणी सै साले तेतीस माश आश्विन सुद पखे।
मुनि विनय चंद पशाय करीनें, गोपी चंद इम उपदिसे

पूर्वोक्त प्रश्न पत्रिका अजीमगंज से लाडनूं आई सो वहां के श्रावकों नें महाराज से मालुम करी तब स्वामी नें हित शिक्षावली प्रश्नोत्तर तत्वबोध बनाया जिसको श्रावकों नें कण्ठाग्र धार के लिखाकर अजीमगंज बाबू कालुरामजी के पास भेजा था।

यह प्रश्नोत्तर तत्वबोध सूत्रों के प्रमाणो सहित जिन प्रणीत वचनों को यथा तथ्य बताने वाला और आतमार्थी भव्यों को लाभ दायक है इसको बांचने से निष्पक्षी हलु-कर्म्मी जीव जिन मारग को सहज में अच्छी तरहें जान कर यथा शक्ति व्रत पचखाण अङ्गीकार करके अपनी आत्मा का कल्याण कर सके हैं; क्यो राग द्वेष राहित वीतराग कथित मार्ग है जिस आतमार्थी को पुद्गलीक सुखों से अरुचि है उन्हो के लिए यह ग्रन्थ मानू अमृत समान मिष्ट है; इस में से कितनेक दोहा आगे श्रा० खवसी जीवराजनें मुम्बई में एक पुस्तक में छपाए थे परंतु सम्पूर्ण ग्रन्थ यह आजतक छपा नहीं यंव शहर जयपुर में निम्न लिखित श्रावकों नें धारया जिन्हों के नाम।

गणेशीलालजी सींधड़, जोरावरमलजी बोठिया,
गुलाबचन्द लूणीयां, सुजानमलजी खोड़,
चन्दनमलजी दूगड़, नाथुलालजी सरावगी;

उपरोक्त पांचो श्रावकों के पास से पत्र लेकर मैंने संग्रह करके लिखा और सर्व साधारण को लाभ पोंहचने के निमित्त मेरी लघु बुद्धि प्रमाण शुद्ध करके छपाया है, यदि कोई अक्षर या लघु दीर्घादि मात्रा की गलती रही होय उसका मुझे वारंवार मिच्छामि दुकडं है, पण्डित और गुणी जनों से मेरी यही प्रार्थना है कि कोई अशुद्धि रही हो उसके लिए क्षमा चाहताहूं।

आप का हितेच्छु और गुणवानो का दास.

श्रा० जोहरी० गुलाबचंद लूणीयां जयपुर.

॥ प्रश्नोत्तर तत्वबोध ॥

॥ दोहा ॥

नमुं देव अरिहन्त नित, जिनाधिपति जिनराय ।
द्वादश गुणों सहित जे, वन्दू मन वच काय ॥१॥
नमुं सिद्ध गुण अष्ट युत, आचार्य मुनिराज ।
गुन षट तीश संयुक्तजे, प्रणमुं भव दधि पाज ॥२॥
प्रणमुं फुन उवज्झाय प्रति, गुण पणवीश उदार ।
नमुं सर्व साधू निमल, सतवीश गुन सार ॥३॥
द्वादश अठ षटतीश फुन, वलि पणवीश प्रमट्ट ।
सतवीश ये सर्वही, गुणवर इकशय अट्ठ ॥४॥
नवकरवाली नां जिके, मिणियां जगति मझार ।
एक एक जे गुण तणों, इक इक मिणियो सार ॥५॥
इकसो अठगुण सहित ए, परमेष्टी पद पंच ।
तेतो भाव निक्षेप हैं, हूं प्रणमुं तज खंच ॥६॥
ए सहुनैं प्रणमीं करी, सखर समय रश सार ।
तत्व बोध अविरोध तर, आखुं अधिक उदार ॥७॥

॥ इति मङ्गलाचरणम् ॥

॥ अथ प्रथम विजयसुर्याभाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै जे विजय सुर, वलि सुर्याभ विचार ।
प्रतिमांनीं पूजा करी, हिव तसु उत्तर सार ॥१॥
प्रतिमां पूजी विजय सुर, जीव अनन्ती वार ।
विजय पणें सहु ऊपनां, पाम्यां नहिं भव पार ॥२॥
शक्र सामानिक संगमो, देवलोक स्थित हेत ।
पूजै जिन प्रतिमांदिते, राज बैसतां तेथ ॥३॥
तिम हिज सुर्याभादि सुर, राज बैसतां तेह ।
प्रतिमां पूतलियादि प्रति, वहु वाना पूजेह ॥४॥
सुर्याभे सुर लोकनीं, स्थितिनां वशथी जांण ।
पूजा जिन प्रतिमां तणीं, कीधी कही पिछांण ॥५॥
बृत्ति उंघ निर्युक्तनीं, तेह विषैं एख्यात ।
आचार्य गंध हस्त कृत, छे तिहां वहु अवदात ॥६॥
मिथ्याती वा समकती, विमान अधपति देव ।
देवलोकनीं स्थित हुंती, प्रतिमांदि पूजेव ॥७॥
समदृष्टी पूजै तिमज, मिथ्याती पूजंत ।
देवलोकनीं स्थित वशात् पिण धर्म कार्य नहिं हुन्त ॥८॥

सुर्याभे जिन वन्दियां, प्रभु षट वच आख्यात ।
एह पुराण आचार तुम्ह, जीत आचार सुजात ॥९॥
यह तुम्हारो कार्य छै, वलि तुम्ह करवा योग ।
ए तुम्हनैं आचरणं छै, है मुम्ह आंण अरोग ॥१०॥
नाटकनीं पूछा करी, तिहां आदर न दियो सांम ।
मनमैं भलो न जाणियो, प्रगट पाठमैं तांम ॥११॥
वलि मौन राखी प्रभू, देखो पाठ प्रसिद्ध ।
जे भाव निच्चेपे आगलै, नाटक आंण,न दिद्ध ॥१२॥
वलि मनमैं भलो न जाणियो, ए पिण पाठ मम्हार ।
आज्ञा विन नहिं धर्म पुराय, देखो आंख उघार ॥१३॥
तो तास स्थापन आगलै, आज्ञा किम दे वीर ।
यह न्यायछै पाधरो, धारो धर चित धीर ॥१४॥

॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय द्रोपदी अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै समकित छतां, द्रुपदसुता अवलोय ।
प्रतिमांनीं पूजा करी, तसुं उत्तर हिवै जोय ॥१॥
वृत्ति उंघ निर्युक्तनीं, गंधहस्त कृत मांहि ।
जे इक पुत्र थयां पछै, द्रोपदी समकित पाय ॥२॥

पूर्व कृत निदान करि, प्रेरी छती सुं आय ।
पांच पाराडव त्यां द्रोपदी, कह्यो सुज्ञाता मांय ॥३॥
तीव्र भोग अभिलाष तसु, निदांन विन पूरेह ।
समकित किम पामैंतिका, देखो वर चित देह ॥४॥
दशा श्रुत स्कंध सूत्रमैं, केइक जेह निदांन ।
पून्यां समकित नवि लहै, दुर्लभ वोधी कह्या जान ५
निदांन दोय प्रकार है, न्याय थकी अवलोय ।
द्रव्य प्रते धुर भेदहै, भव प्रत्येय फुन जोय ॥६॥
निदांन द्रव्य प्रत्ये तणां, दोय भेद पहिछाण ।
प्रथम भेद जे मंदरश, द्वितीय तीव्र रश जाण ॥७॥
द्रव्य प्रत्येय मन्दरश तणुं, पूरयां थकांजु तेह ।
समकित चारित बेहुं लहै, द्रोपदी नींपरे एह ॥८॥
द्रव्य प्रते तीव्ररश तणों, समकित चर्ण न पाय ।
दशाश्रुतस्कंध विषैंजवै, दुर्लभ वोधिया थाय ॥९॥
भव प्रत्येय नां भेद बे, धुर मंदरशनूं होय ।
द्वितीय तीव्र रशनुं वली, न्याय विचारी जोय ॥१०॥
भव प्रत्येय मंद रश तणों, समकित प्रति पामेह ।
पिण चारित पामैं नहीं, वासुदेव जिम यह ॥११॥
भव प्रत्येय तीव्ररश तणां, समकित नहिं पामंत ।
वलि चारित पामैं नहीं, ब्रह्मदत्त जिम हुन्त ॥१२॥

द्रव्य प्रत्येयनें भव प्रत्येय, मंद तीव्ररश स्यात ।
तेह न्यायथी संभवे, वलि जाणौं जगनाथ ॥१३॥
ते माटै ये द्रोपदी. निदांन विन पूरेह ।
प्रतिमां पूजी तिण समें, समकित किम पामेह ॥१४॥
ज्ञाता वृत्ती विषैं कह्युं, येक वाचना मांहि ।
द्रोपदी जिन प्रतिमां तणीं, अरचा कीधी ताहि ॥१५॥
दीसे येतोहिज इम कह्यो, तेह वृत्तिरे मांहि ।
नमुंत्थुणं नुं पाठ त्यां, आख्यो दीसे नांहि ॥१६॥

॥ वार्त्तिका ॥

कोई कहै द्रोपदी समकित धारणी प्रतिमां क्युं पूजी ॥ तेह नुं उत्तर ॥ उंघनिर्युक्ती ग्रन्थ में अभिप्राय द्रोपदी प्रतिमां पूजी तिण वेल्यां सम्यक्त धारणी नहीं ते देखाडे छै; "दव्वं पि जिणहरा" इति व्याख्या ॥ उंघ निर्युक्ति रव्याख्येयं ॥ द्रव्यलिङ्गी परिग्रहितानि चैत्यानि किं सम्यगदृष्टीनं संभावितानि इति कस्मात द्रव्यलिङ्गी मिथ्यादृष्टीत्वात् ॥ यद्येवं तर्हि दिगम्बर संबधीनि चैत्यानि किं सम्यक दृष्टी न संभावितानि एतत्सत्यं यद्ये तत्सत्यं तर्हि स्वर्गलोकेषु शास्वतानि चैत्यानि सूर्याभाद्यादेवाः सम्यक दृष्टयः प्रपुज्यंते तच्चैत्यानि संगमवद् अभव्य देवाः मदीयं मिति बहुमानात् प्रपूज्यं ति पुर्वी परं विरुद्धं न स्यात् ननुसूर्याभाद्यादेवाः तत्कल्पास्थिति वसानुरोधात् अतः एव विरुद्धं न संभवति यद्येव तर्हि द्रोपद्या सम्यक्त धारण्यायानि चैत्यानि नमस्कृतानि किं द्रव्यलिङ्गी परिग्रहीतानि न

भवंतीसाह द्रौपदी न सम्यक्त्व धारणी स्यात् ॥ उंघनिर्युक्तथा इत्युक्तं ॥ इत्थी जण संघट्टं तिविहं तिवहेणं वज्ज ए साहु इति वचनात् ॥ स्त्री जनस्पर्शो त्रिविधः त्रिविधेन साधूनां वर्जनीयः साधोश्च अकल्पनीयः कर्माचारतः सम्यक्त्वभावात् द्रौपदी आगमेषु श्रूयते ॥ लोमहत्थेयं परामुसई ॥ लोमहस्तेन परामृशति परामार्जयतीत्यर्थः तत् परमार्जनेन जिनस्पर्शो जातः जिनस्य स्त्री जनस्पर्शेन आशातनास्यात् आशातनात्सम्यक्त्वभाव् अतः एव द्रौपदी न सम्यक्त्व धारणी संभाव्यते पुनः उंघनिर्युक्ति चिरंतन टीकायां गंधहस्त्याचार्येण उक्तं द्रौपद्या नृप पुत्रिका निदान कृति भर्त्तार पंचस्यैकना निदान भोजितवान जातेक पुत्रः पुनः पश्चात्साधू सकाशमागत्य भवंत सम्यक्त्व मार्गो धरंते ॥ इति ॥

॥ एहनुं अर्थ वार्त्तिका करी कहे छे ॥

इहां कह्यो द्रव्य लिङ्गी परिगृहीत चैत्यप्रति प्रतिमा ते स्यूं सम्यक् दृष्टी संभावित नहीं ते किण कारण थकी इसो कोई प्रश्न पूछे तेहनुं उत्तर द्रव्य लिङ्गी मिथ्या दृष्टी छे ते कारण थकी जो इम छे तो दिगम्बर संबंधी चैत्य प्रतिमा स्यू सम्यक् दृष्टी संभावित नहीं ए सत्य जो ए सत्य तो स्वर्ग लोक नें विषै सास्वता चैत्य सुर्याभादि देवता समदृष्टी पूजे ते माटै ये पूर्वापर विरुद्ध नहीं हुवे कांई एहवीतर्क कीधै छतैं हिव यहनुं उत्तर कहे छे, सुर्याभादि देव स्वर्ग लोक नें विषै सास्वता चैत्य पूजै ते कल्प देवलोकनी स्थित वस अनुरोध थकी इण कारज थकी ज विरुद्ध नहीं हुवे जो इम छे तो द्रौपदी समकित धारी चैत्य नें नमस्कार कियो ने स्यूं द्रव्य लिङ्गी परिगृहीत न हुई

काईं एहवीतर्क कीधैं छै हिवै एहनुं उत्तर कहै छै। द्रौपदी समकित धारणी न हुईं इम कहे छै वलि पूछ्यो द्रौपदी समकित धारणी किम नहीं तेहनुं उत्तर ओघनिर्युक्ति नैं विषै इम कह्यो स्त्रीजन नैं स्पर्श साधू नें त्रीविध २ वरजवो साधू नें अकल्पनीय कर्म आचरवाथकी समकित नुं अभाव हुवै ते कारण थकी साधू ने स्त्री जननुं स्पर्श त्रिविध २ वरजवूं द्रौपदी आगम नें विषै सांभली थेछैं "लोमहत्थं परमूसई" लोमहस्त करिके फरसे पूंजे इसर्थ, ते पूंजवै करी जिन नूं स्पर्श हुवै जिनने स्त्री जन स्पर्श वं करी अशातना हुवै आशातना करिवे करी समकितनुं अभाव इण कारण थकी द्रौपदी समकित धारणी न संभाविये, वाले ओघ निर्युक्तीनीं चिरंतन टीका नें विषै गन्धहस्त आचार्ये कह्यो द्रौपदी नृप पुत्री नियाणानीं करण हारी तणे भर्तार पंच नें वरी नियाणो भोगवी येक पुत्र थयां पछे साधू समीपे समकित पामीं एहवो ओघ निर्युक्तीनीं टीका नै विषै गंधहस्त आचार्यै कह्या ते मिथ्यात्वना वस थकी पुस्पादिक करी प्रतिमां पूजी।

॥ अथ तृतीय निक्षेपा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोईं कहै वावींश जिन, तसुं मुनि प्रतिक्रमणेह ॥
किस्युं करै चोवीस्यो, द्वितीय आवश्यक जेह ॥१॥
तसु कहिये महाविदेहनां, मुनि प्रतिक्रमण विषेह ॥
द्वितीय आवश्यक स्यूं करै, न्याय विचारी लेह ॥२॥

नहीं तिहां अवशर्पणी, उत्सर्पणी पिण नांहि ॥
ते माटै नहिं षट अरा,सम श्रद्धा कहि वाहि ॥३॥
तिहां अनन्ता शिवगया, जासे मुक्ति अनन्त ॥
मेल नहीं चोवीश नुं, देखोजी बुद्धिवन्त ॥४॥
इक इक विजय विषे वली, येक येक जिनराज ॥
वर्तमान काले हुवे, उत्कृष्ट पणों समाज ॥५॥
हिव ते क्षेत्र विदेह नां, जिनथया सिद्ध अनन्त॥
तसुं वांदयां चोवीश नीं, संख्या नथी रहन्त ॥६॥
थासे सिद्ध अनन्त जिन, तसुं वंदै जे कोय ॥
तो पिण जिन चोवीस नीं, संख्या न रहै सोय ॥७॥
विजय विषे ज्यो वर्त्तता, वंदै इक जिनराय ॥
तो पिण जे चोवीसत्थो, किण विध कहिये त्हाय ।८।
विदेह क्षेत्रनां मुनि करै, द्वितीय आवश्यक जेह ॥
विचला जिन वावीसनां,मुनि पिण तिम हिज करेह६
बे टक नूं तसु नियम नहीं, पिण ज्यो किणहि कवार॥
पडिक्कमणा में स्युं करै, द्वितीय आवश्यक सार ।१०।
ज्ञाता अध्ययनें पंच में, शेलक ऋषिनां पाय ॥
पंथक पडिक्कमणों करत, वांद्या आख्या ताय ।११।
ते माटै जे जिन हुवे, तेह तणों ले नांम ॥
द्वितीय आवश्यक नुं तदा, नाम उकिता तांम ।१२।

जिन चौवीस तणों जिहां, नियम नहीं छै तांम ॥
तिण सुं चोवीस्था तणों स्थान उत्कीर्तन नांम ॥१३॥
अनुयोग द्वार विषे अमल, आवश्यक षट मांय ॥
अर्थ तणां अधिकार षट, आख्या श्री जिन राय॥१४॥
द्वितीय आवश्यक नें विषें, उत्कीर्तन आख्यात ॥
कह्यं अर्थ अधिकार ये, जिन गुन नांम विख्यात ॥१५॥
विदेह क्षेत्र मैं मुनि तणो, द्वितीय आवश्यक जान॥
स्व स्व जिन गुन नांम ते, उत्कीर्त्तन अभिधान॥१६॥
जेह विजय नहीं जिन तदा, द्वितीय आवश्यकमांहि॥
पूर्व जिन गुन नांम ते, इसो संभवै ताहिं ॥ १७ ॥
विचला जिन बावीसनां, मुनि नैं स्वजिन नांम ॥
उत्कीर्त्तन अभिधान तसु, द्वितीय आवश्यक तांम १८
धुर जिन नां मुनि ले तिमज, स्वजिन गुन फुन नांम॥
द्वितीय आवश्यक संभवे, उत्कीर्त्तन अभिराम ॥१९॥
वा धुर जिननां मुनि तणों, चोवीस्थो ज्यो होय ॥
तो गत चौवीसी हुई, जाणों केवली सोय ॥ २० ॥
थया नहीं चोवीस जिन, तसुं बारै अवलोय ॥
द्वितीय आवस्यक नें विषें, चोवीस्थो किम होय ॥२१॥
चोवीसमां शाशण धणीं, तेहतणीं अपेक्षाय ॥
आख्युं छै चोवीस्थो, द्वितीय आवश्यक मांय ॥२२॥

द्वितीय आवश्यक नां कह्या, उभयनाम अवलोय ॥
उक्कीत्तन चोवीस्थो, तसुं हेतु हिव जोय ॥ २३ ॥
पंचम् अङ्ग धुरकह्युं, इन्द्रभूती सुप्रसिद्ध ॥
बृत्ति विषैं कह्यो नांम ये, मात पिता नूं दिद्ध ॥२४॥
गौतम गौत्र करि तसुं, गौतम नांम कहाय ॥
उत्तराध्ययन तेवीस मैं, गाथा छट्टी मांय ॥२५॥
तिम जिनवर चोवीसमां, तसुं वारै अवलोय ॥
गुणौं नांम चोवीस जिन, ते चोवीस्थो होय ॥२६॥
ते चोवीस्था नैं विषैं, उत्कीरतन अभिराम ॥
अर्थ तणां अधिकार छै, पिण मुख्य चोवीस्थो नांम२७
विदेह क्षेत्र मैं बीस जिन, तसुं सुनि स्व जिन नांम ॥
अर्थ तणां अधिकार करि, ते उत्कीर्तन तांम ॥२८॥
सुत्र उववाई नैं विषैं, तपनां द्वादश भेद ॥
तृतीय भेद भिक्षाचरी, वारुं नाम संवेद ॥ २९ ॥
समवायंग विषै कह्या, बारै भेद अभिराम ॥
भिक्षाचरी नैं स्थान जे, बृत्ति संक्षेप सु नांम ॥३०॥
भिक्षाचरीनां नाम बे, द्वितीय आवश्यक तेम ॥
उत्कीर्तन चोवीस्थो, उभय नाम तसुं एम ॥३१॥
नवमां जिननां नांम बे, सुविध अनैं पुफदन्त ॥
आख्या लोगस मैं प्रगट, देखोजी बुद्धिवन्त ॥३२॥

पुष्प सरिसा दन्त तसुं, पुष्प दन्त अभिराम ॥
इम अर्थ तणां अधिकार करि,उत्कीर्त्तन पिण नांम ३३
कृष्ण अनें बलभद्र नौ, केशव रांम आख्यात ॥
उत्तराध्ययन बावीसमें,तिम द्वितीय आवस्यक ख्यात
किहां च्यार महा ब्रत कह्या, तास कह्या चिहुं याम ॥
उत्तराध्ययन तेवीस में, केशी मुनि गुण धाम ॥३५॥
द्वितीय आवश्यकनां तिमज,उभय नांम अवलोय ॥
उत्कीर्त्तन चोवीस्थो, सहु भावे जिन जोय ॥३६॥
चोवीशम जिननां मुनी, करे चोवीस्थो तांम ॥
विदेह तेवीस तणां मुनी, उत्कीर्त्तन जिन नांम ।३७।
मुक्त नें भ्यासे यहवा, बारूं न्याय विचार ॥
वलि केवली जे वंदे, तेहिज सत्य उदार ॥३८॥
भाव निक्षेपे भरत्तनीं, चोवीसी वर्तमान ॥
पाठ वंदे बहु ठाम छै,लोगस मांहि सुजान ।३९।
भाव निक्षेपे ऐरवत, चोवीसी वर्तमान ॥
पाठ वंदे वहु ठाम छै, समवायंगे जान ॥ ४० ॥
चोवीसी भरत ऐरवत, अनागत जिन नांम ॥
द्रव्य निक्षेपो तुर्य अङ्ग, वंदे पाठ न तांम ॥४१॥
अष्ट अनें चालीश नां, वर्तमान जिन नांम ॥
भाव निक्षेपो ते भणीं,पाठ वंदे वहु ठांम ॥ ४२॥

अट अनैं चालीसनां, अनागत जिन नांम ॥
द्रव्य निक्षेपो ते भणीं, वंदे टाल्यो सांम ॥ ४३ ॥
द्रव्य निक्षेपै यह जिन, गणधर वंद्यां नांहि ॥
तो चोवीस्यो करतां छतां, द्रव्य जिन किम वंदाहि ४४
तीर्थंकर घर में छतां, द्रव्य निक्षेपै जेह ॥
तेहनैं मुनि वंदै नहीं, तुझ लेखै पिण तेह ॥ ४५ ॥
तो होणहार जिनवर भणीं, चोवीस्या विषेह ॥
मुनिवर किम वंदै तसुं, न्याय विचारी लेह ॥४६॥
वलि कह्यो अनुयोग द्वार में, जे आवश्यक नूं जांण ॥
होस्यै पिण न थयो हजी, ते द्रव्य आवश्यक पिछांण
तिम जे कोई इक मुनि हुस्ये पिण हिवडां ग्रहस्थ पणेह
कहिये द्रव्य साधू तसुं, आवश्यक वत् येह ॥ ४८ ॥
जो वन्दो द्रव्य निक्षेपनैं, तो तिण द्रव्य मुनींश पाय॥
तुम्हे वंदता क्युं नथी, तुम्ह श्रद्धारे न्याय ॥ ४६ ॥
चोवीसी वर्तमान नैं वन्दे वहु ठामेय ॥
अनागत वांद्या नथी, देखो तुर्य अंगेय ॥ ५० ॥
तृतीय निक्षेपो द्रव्य तसुं, गणधर वंद्यो नांहि ॥
तो द्वितीय निक्षेपो स्थापनां, किम वंदी ज ताहि॥५१॥
द्रव्य तीर्थंकर कृष्णथा, दीधा नेम बताय ॥
नेम तणां साधु साध्यां, त्यां क्युं नहीं वंद्या पाय५२

उलटो कृष्ण भणी तिणां, दीधो पगां लगाय ॥
तो चोवीस्थो करतां छतां। किम बंदे मुनिराय ॥५३॥
द्रव्य जिन श्रेणिक नृप हुंतो, दीधो बीर बताय ॥
बीर तणां साधु साध्वियां त्यां क्युं नहिं बंधाणाय ५४।
तीर्थंकर बंदन तणुं, तसु रागणां रे चाहि ॥
तो कृष्ण अनें श्रेणिक तणां, त्यां क्युं नहिं बंधा णाहि।
उलटी करी विडम्बना, जाणीं नैं भरतार ॥
तो चोवीस्थो करतां छतां, किम बंदे अणगार ॥५६॥
जिन बंदे तिहुं कालनां, नमोत्थुणं रे अंत ॥
किणी सूत्र में ते नहीं, देखोजी बुद्धिवंत ॥ ५७ ॥
जे कोई जीव अजीव नूं, नांम आवश्यक देह ॥
ते आवश्यक नों प्रभु, नांम निक्षेप कहेह ॥५८॥
अनुयोग द्वार विषे इसो, प्रगट पाठ पहिछाण ॥
तिम हिज तीर्थंकर तणुं, नांम निक्षेपो जांण ॥५६॥
जिम कोई जीव अजीव नूं, ऋषभ नांम छे जेह ॥
ऋषभ देव भगवान नों. नांम निक्षेपो तेह ॥ ६० ॥
जो वांदो नांम निक्षेप नैं, तो तिण ऋषभारा पाय ॥
क्युं नहिं वांदो छो तुम्हे, तुम्ह श्रद्धारे न्याय ॥ ६१ ॥
किणरो नांम दियो वली, अरिहंत नें भगवान ॥
नांम अरिहंत बंदो तुम्हे, तो क्युं नहिं बंदो जान ।६२।

सिद्ध निरंजन नाम पिरा, दीसे बहु जग मांहि ॥
नाम सिद्ध वंदो तुम्हे, तो क्युं नहिं वंदो पाहि ॥६३॥
केईक मनुषांरा कारटा, ते पिरा बाजे आचार्य त्हाय ॥
वंदो नाम आचार्य तुम्हे, तो क्युं नहिं वंदो पाय ।६४।
केईक ब्रह्मण लोक में, वाजे छै उपाध्याय ॥
नाम उपाध्याय वंदो तुम्हे, तो क्युं नहिं वंदो पाय।६५।
जोगी संन्यासी प्रमुख, साधू नाम कहाय ॥
नाम साधु वांदो तुम्हे, तो क्युं नहिं वंदो पाय ॥६६॥
ज्ञान दर्शन चारित्र नां, गुरा नही छै जे म्हांय ॥
तेह वंदवा योग किम, निमल विचारो न्याय ॥६७॥
कोई कहे आचार्यनां, उपाध्यायनां ताहि ॥
उपकरण नीं आशातनां, कहि टालवी कांहि ॥६८॥
ज्ञान दर्शन चारित तणां, तेह उपधिरे मांहि ॥
कहवा गुन छै ते भर्णी, उपधि संघट्टवुं नांहि ॥६९॥
नवमें दशवे कालिके, द्वितीय उद्देशे ख्यात ॥
इम कहे उत्तर तेहतुं, सांभल जो अवदात ॥७०॥
सूत्र विषै तो इम कह्यो, गुरू कायाइं करेह ॥
तिम हिम्फ गुरूनां उपाधि कारि, संघटे थयें कृतेह ।७१।
मुझ अपराध खमों तुम्हे, वलि न हूं करूं कोय ।
इम भाषे सुविनीत शिष्य, तास न्याय हिव जोय ७२

आचार्य्यनां उपधि ए. तास प्रयोगे आय ।
जिम गुरु के सहवर्त्ती तनुं, तेम उपधि पिण होय ७३
भाव निक्षेपे गणपती, तास उपधि तनुं जेम ।
ताणु संघट्टथयां खामवुं, आख्यूं सूत्रे एम ॥७४॥
थयुं वलि अपराध मुझ, खमूं तुम्हे अवलोय ।
ए बच प्रत्यक्ष गुरू तणों, न्याय विचारी जोय ॥७५॥
जो खमायवो हुवे उपधिनें, तो देखो चित देह ।
बंदना करी खमायवे, उपग्रण स्युं जाणेह ॥७६॥
येवो उपधि सहितजे, आचारजनीं जोय ।
कही अशातना टालवी, नथी अन्यथा कोय ॥७७॥
सयनाशन गणपति तणां, तास संघट्टवूं नांहि ।
ते हिज आचार्य विहार करि,गया हुवे जो तांहि ७८
सयणाशण तेहिज तब, शिष्य सेवेके नांहि ।
भोगवियां आशातना, लागे के नहिं ताहि ॥७९॥
जे पृथिवी शिल ऊपरे, बैठा श्री भगवान ।
कालान्तर गोयम सुधर्म, बैठेके नहीं जान ॥८०॥
छायागणीनां तनु तणीं, शिष्य अक्रमीं तास ।
चाले के चाले नहीं, जोवो हिये विमास ॥८१॥
तुझ लेखे छाया भणीं, आक्रमवूं पिण नांहि ।
संघटो पिण करवुं नहीं, गुरू छायानुं तांहि ॥८२॥

ते माटे ए स्थापना, वंदन योग न होय ।
ज्ञान दर्शन चारित तणां, तिणमें गुण नहिं कोय ८३
अथवा आचार्य तणां, पगला तणीं पिछाण ।
तुम्हे करोछो स्थापना, तेहनैं वंदो नांण ॥८४॥
तो चाले गुरू केइ शिष्य, गमन करंता जोय ।
धरती ऊपर गुरू तणां, पगला मंडे सोय ॥८५॥
शिष्यना पगते ऊपरे, पड़ियां दंड स्युं आय ।
बन्दनीक पगला कहो, ते लेखे दंड पाय ॥८६॥
चारित सहित जे गुरू भणीं, वंदे तीर्थ च्यार ।
काल कियां तसुं कायनैं, भस्म करे तिह वार ।८७।
ज्ञान दर्शन चारित तणां, तिणमें गुण नहीं कोय ।
तिणसुं दहन क्रया कियां, अशातना नहिं होय ८८
करी स्थापना तेहनैं, बांद्यां कहोछो धर्म ।
तो ए सागे तनु बालियां, लागै आशा तनाकर्म ८९
आवश्यकनों जाणथो, काल कियो तिहवार ।
द्रव्य आवश्यक तनु कह्यो, देखो अनुयोग द्वार ९०
तिम मुनि काल कियां छतां, जीव रहित जे देह ।
द्रव्यसाधु कहिये तसुं, न्याय विचारी लेह ॥९१॥
बंदनीक द्रव्य मुनि कहो, तो तुम्ह लेखे त्हाय ।
द्रव्य साधु बाल्यां छतां, अशातना पिण थाय ।९२।

जम्बू द्वीप पन्नतीमें कह्यो, जिन जनम्यां सुर राय।
जन्म भुवन जिनवर तणां, तसुं प्रदिक्षणावे आय ९३
जिननैं वा जिनमात प्रति, प्रदक्षणा त्रण वार।
देई कर जोडी करी, वंदे शक्र अवधार ॥९४॥
हेधरण हारी रतन कूंखिनीं, थावो तुम्म नमस्कार।
इह विध सुरपति ऊचरै, ए पिण जीत आचार ।९५।
इण लेखे मरु देवी प्रति, इन्द्र कियो नमस्कार।
पिण समकित किणपे लही, वारू न्याय विचार।९६।
ग्रहस्थ पणै जिन जनकनां, पद प्रणमें अव लोय।
लौकीक हेते जाणवुं, धर्म हेतु नहिं कोय ॥९७॥
ज्ञाता अध्ययन आठमें, मल्लिनाथ भगवान।
लागी पगां पिता तणों, लोकिक हेते जान ॥९८॥
मल्लिनाथ थया केवली, तठा पछे मा तात।
वांणि सुणीं श्रावक थया, पाठ विषै अवदात ॥९९॥
इण लेखे मल्लिनौं पिता, पहिलां श्रावक नांहि।
तास पाय प्रणम्यां मल्ली, धर्म नहीं तिण मांहि।१००।
तिम हिज द्रव्य जिनवर भणीं, इन्द्र करै नमस्कार।
ए तसु जीत आचारछै, श्रीजिन आज्ञा बार ॥१०१॥
जीवरहित जिन देहते, द्रव्य जिन तास कहेह।
ते वंदनींक किण विध हुवै, न्याय विचारी लेह १०२

जो वंदनींक ते द्रव्य हुवे, तो तुम लेख कहेह ।
तनुं मते दग्ध कियां छतां, आशातन लागेह ।१०३।
ज्यो द्रव्य निक्षेप वंदो तुम्हे, तो जमाली आदि ।
द्रव्य साधु कहिये तसुं, वंदो क्यूं न संवाद ॥१०४॥
भावे जे साधू हुंतो, सेव्यो तिण अणाचार ।
भाव निक्षेपो तसुं गयो, के गयो द्रव्य जिवार १०५
मुनि वेसें सेव्यो तिणें, अणाचार अवधार ।
ते द्रव्य मुनि वंदो के नहिं, धर्म हेत घर प्यार ॥१०६॥
कृष्णादिक नरकें पड्या, द्रव्य जिनवर कहि वाहि ।
भावे कहिए नेरिया, वंदनींक ते नांहि ॥१०७॥
तीर्थंकर जनम्यां पछे, ते पिण द्रव्य जिनराय ।
भाव निक्षेपे तेहनें, ग्रहस्थी कहिये त्हाय ॥१०८॥
तीर्थंकर दीक्षा लियां, तसुं द्रव्य जिन कहिवाय ।
भावे ते मोटा मुनीं, वंदनींक तसुं पाय ॥१०९॥
चौतीस अतिशय उंपता, वाणी गुण पैंतीस ।
केवल ज्ञान थयां पछै, भावे जिन जगदीश ।११०।
वंदनींक भावे मुनी, वलि भावे जिनराय ।
उंलख नैं जपियां थकां, पातिक दूर पुलाय ।१११।

॥ इति निक्षेपाधिकार ॥

॥ अथ चतुर्थम् अम्बडाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै अम्बड कह्युं, अरिहन्त त्रिण अवलोय ।
वलि अरिहन्तनां चैत्य विन, नथी वंदवा मोय ॥१॥
प्रथम उपाङ्ग विषे इसो, आख्यो श्री जिनराय ।
ते अरिहंत नां चैत्य कुण, तसु उत्तर कहिवाय ॥२॥
अरिहंत तो घुरपद विषे, प्रतिमां चैत्य कहाय ।
तो मुनिवर नहीं वंदवा, अन्य वर्ज्या तिणन्याय ३
मुनि पद तो है पंचमों, ते धुरपद में नहीं आय ।
तिण कारण अरिहन्तनां, चैत्य मुनी कहिवाय ॥४॥
जिन प्रतिमां जिन सारसी, तुम्हे कहो तिण न्याय ।
प्रतिमां तो धुरपद हुई, मुनि धुरपद नहीं आय ५
अरिहन्त तो ए देवहैं, अरिहंत चैत्य सु संत ।
तेह गुरु ए देव गुरु, विना न अन्य वंदंत ॥ ६ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ पञ्चम् आनन्दाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे आनन्द कह्यो, अनतीर्थक संग्रहीत ।
अरिहंतनां जे चैत्य प्रते, वन्दू नहीं प्रतीत ॥ १ ॥

एह सातमां अङ्गमैं, दाख्यो गणधर देव ।
ते अरिहन्तनां चैत्यकुंण, उत्तर तासु कहेव ॥२॥
आनन्द कह्यु अण तीर्थनैं, अणतीर्थक नां देव ।
अन्यतीर्थक परिग्रहीत जे, अरिहंत चैत्य कहेव ३
ए तीनूं नैं वंदना, करवीं कल्पै नांहि ।
नमस्कार करिवूं नहीं, ए तीनूं नैं ताहि ॥४॥
पहिलां बोलाव्यां बिनां, बोलूं नही इकवार ।
बार बार बोलूं नहीं, नहीं आपूं तसु आहार ।५।
चैत्य इहां प्रतिमां हुवै, तो बोलावै केम ।
वलि आपै अशणादि किम, न्याय विचारो एम ६
कोई कहै तसु देवनैं, किम बोलावै ताय ।
वलि अशणादिक किमदिये,निमल सुणों तसुं न्याय ७
पुत्र सुजेष्टा नूं कह्यो, महादेव तसु देव ।
नवमैं ठाणें अर्थमैं, ते वीर थकां स्वय मेव ॥८॥
चेडाराजानीं सुता, तेह सुजेष्टा जांण ।
तिण कारण तसु देवते, विद्यमान पहिछाण ।६।
तेहनैं बोलावै नहीं, वलि नहीं आपै आहार ।
वलि चैत्य मुनी अरिहन्तनां, भ्रष्ट थया तिण वार १०
ते अन्य तीर्थिकमैं जई मिल्या,अन्य तीर्थिक पिण तास
ग्रहण किया निजमत विषै,अन्य तीर्थिक ग्रहित विमास११

नहीं बोलावूं तेहनें, वलि नहीं आपूं आहार ।
अभिग्रह ए,आनन्द लियो, बारूं न्याय विचार ।१२।

॥ इति ॥

अथ षष्टम् जंघा विद्याचारणाधिकार ।

॥ दोहा ॥

कोई कहै मुनि लब्धिधर, जंघा विद्याचार ।
जावे रुचक नन्दीश्वरे, वन्दे चैत्य तिंवार ॥ १ ॥
बीसम शतके भगवती, नवम उद्देश विषह ।
प्रभु आख्या ते चैत्य कुंण, उत्तर तास कहेह ॥२॥
जंघा विद्या चारणा, रुचक नन्दीश्वर जाय ।
तिहां वन्दे पाठछे, पिण नमंसई नांहि ॥ ३ ॥
मानुषोत्तर गिरी विषे, कूंट च्यार आख्यात ।
नथी कह्यु सिद्धायतन, तुर्य ठाण अवदात ॥४॥
वृत्ति विषे द्वादश कह्या, तिहां देवता वास ।
आख्यापिण सिध्दायतन, कूंट कह्यो नही तास ॥५॥
तिहां चैत्य वन्दे किसा, तिणसूं चैत्य सुज्ञान ।
करै तास गुन ग्राम अति, देखीनें जे स्थान ॥६॥
धन भगवन्त नौं ज्ञान ए, धन्य भगवन्तरो ज्ञान ।
जेम कह्यु तिमहिज सहु, इम करै स्तुती जान ।७।

नमंसई तिहां पाठ नहीं, वन्दई पाठज येक ।
तेहनुंछे स्तुती अर्थ, देखो धर सु विवेक ॥८॥
प्रश्न हजारां पूछिया गोयम पञ्चम अङ्ग ।
तिहां वन्दई नमंसई छै विहुं पाठ सुचङ्ग ॥ ९ ॥
एतो छै अति अजब गति,रुचक द्वीप लग जाहि ।
तिहां नमंसई पाठ नहीं, नमो त्थूणं पिण नांहि ॥१०॥
श्रावक तुङ्गियां नां प्रवर, आया स्थिवरां पास ।
तिहां बन्दई नमंसई, उभय पाठ गुण रास ॥११॥
जो प्रतिमां बन्दन गया, तो करता नमस्कार ।
नमोत्थूणं गुणता वलि, देखो हृदय विचार ॥१२॥
तथा चैत्यने जिन बहू, तेह तणां गुण गाय ।
धन्य प्रभू ? इमकहे तसुं, सत्य वचन सुख दाय ॥१३॥
कोई कहै प्रभुजी भणीं, चैत्य किहां आख्यात ।
उत्तर तेह नैं आखिए, सुणज्यो सुगण सुज्ञात ॥४१॥
सूर्याभे मन चिन्तव्युं, कल्याण कारी स्वाम ।
दूरितोपसम कारी थकी, मंगलीक अभिराम ॥५१॥
तीन लोकनां अधपति, तिणसुं देवत नांथ ।
हेतु सुप्रसन्न मनतणां, तिणसुं चैत्य आख्यात १६
राय प्रशेणी बृत्तिमें, चैत्य अर्थ जिन ख्यात ।
तेमाटे इहां संभवे, बहु जिनगुण अवदात ॥१७॥

बहु जिनेन्द्र वा जिनकहै, रुचक नन्दीश्वर मांहि ।
भाव कह्या तिमहिज सहु, देखि हिये हुलसाय १८
धन्य जिनेन्द्र धन्य केवली, गिरी कुंटा दिकजेह ।
जेम कह्या तिम हीज ए, इम तसुं स्तुति करेह॥१९॥
तेमाटे इहां चैत्यते, वहु जिन कहिए सोय ।
वन्दइ तसु स्तुती करे, एह अर्थ पिण होय ॥२०॥
विन आलोयां ते मुनी, काल करे जो कोय ।
तास विराधक प्रभु कह्यो, पाठ विषे अवलोय ॥२१॥
जब को तर्क करै इसी, दिसा गोचरी जाय ।
पाछा आवी पडिक्कमैं, ईर्या वही मुनिराय ॥२२॥
तिम ए पिण आंवीकरी, ईर्या वही गुणेय ।
तासु उत्तर कहीजिये, सांभलज्यो चित देय ।२३।
दिसां गोचरी मुनी जई, आवंतां कियोकाल ।
तेह विराधक नही हुवै, जोवो नयण निहाल ।२४।
जंघा विद्याचारणा, काल कियां अन्तराल ।
तास विराधक प्रभु कह्या, नथी आराधक न्हाल २५
तिणसुं ईर्या वही तणूं, नथी मिले ए न्याय ।
लब्धि फोडवी तेहनौं, दंड कह्यो जिनराय ।२६।

॥ वार्त्तिका ॥

कोई कहै जंघाविद्याचारण लब्धि फोडि नैं नन्दीश्वर द्वीपे जाय ते आलोयां विना मरै तो विराधक कह्यो ते आलो-

यणां ईर्यावही नी कही छै दिसां गौचरी जाय तेहनी पिण ईर्या वही गुणें तिम-ए पिण लब्धि फोडनें नन्दीश्वर द्वीपगया तेहनी पिण ईर्या वही जाणवी इम कहे तेहनें कहियो इम ईर्यावही गुण्या विना विराधक हुवे तो गौचरी पिण जाणो नहीं कदा ठिकाणो आयां विना पहिलां मरिजाय तो विराधक हुवे, वलिगाम बाहिर दिसां जाणों नहीं। विहार करणों नहीं। पडिलेहणा करणी नहीं। खण भंगूर काया है सो ईर्या वही गुणियां विना पहिलां ही मरजाय तो विराधक होवणो पडे ते माटे; साधू गौचरी गयो पाछो आवतां बीच में काल करे ईर्यावही पडिकमियां विना जब तो ओ पिण विराधक हुवे; इम विहार करतां विचे ईर्यावही पडिकम्यां विना काल करे-तो उणारी श्रद्धारे लेखे ओ पिण विराधक हुवे, इम तो पडि-लेहणा कियां पछे अथवा विचे ईर्यावही पडिकमियां विना काल करे तो उणारी श्रद्धारे लेखे ओ पिण विराधक हुवे, धर्म कारणों जातां धर्म कारण आवतां ईर्यावही पडिकमियां विना काल करे तो उणारे लेखे ओ पिण विराधक हुवे, जद तो तीर्थंकर नें वांदवा जातां आवतां ईर्यावही पडिकमियां विना काल करे तो उणारे लेखे ओ पिण विराधक, अरिहन्त गणधर आचार्य उपाध्याय महामोटा पुरुषां नें वाले साधू सा-ध्वियां नें वांदण जातां नें आवतां, ईर्यावही पडिकमियां विना काल करे तो उणारे लेखे ओ पिण विराधक; इम इत्यादिक अनेक कार्य कियां ईर्यावही पडिकमवी छै, जद ते पिण कार्य करतां ईर्यावही पडिकमियां विना काल करे तो उणारै लखे ओ पिण विराधक, इम ईर्यावही पडिकमियां विना वि-राधक हुवे छै तो साधू नें पहिलां हीज ईर्यावही पडिकमवा

वालो कार्य्य करणो हिज नहीं, यथा पाडिलेहणा कियां पछै अथवा विचै ईर्यावही पडिकमियां विना काल करै तो उणारै लेखै श्रो पिण विराधक हुवै, इम विहार करतां विचै ईर्यावही पडिकमियां विना मरै तो उणारै लेखै श्रो पिण विराधक हुश्रे, जो इम विराधक हुश्रे जद तो तीर्थंकर नें वन्दवा जातां नें आवतां विचै ईर्यावही पडिकमियां विना काल करै तो उणारै लेखै श्रो पिण विराधक हुश्रे, अरिहन्त गण धर आचार्य्य उपाध्याय महा मोटा पुरुषां नें वलि साधु साध्वियां नें वन्दवा जातां नें आवतां विचै काल करै तो उणारै लेखै श्रो पिण विराधक छै; इम ईर्यावही पडिकमियां विना विराधक हुश्रे तो साधांनें पहिलां हीज ईर्यावही पडिकमवारो कार्य्य करणो हीज नहीं, इण श्रद्धारै लेखैतो साधूनें हालणो चालवो इत्यादि क्युंही कार्य्य करणो नही, अरिहन्तनें भगवन्तनें तीर्थंकरनें गणधरनें आचार्य्य नें उपाध्याय नें महा मोटा पुरुषां नें साधां नें साध्वियां नें किणही नें वन्दवा जाणो नही कदा विचैही काल करै तो विराधक पणों पावछै आउखारो भरोसो छै नहीं तिणसूं, उणारी श्रद्धा रै लेखैतो धर्मरो कार्य्य करणें नें कठैही जाणों नहीं जातां नें आवतां ईर्य्यावही पडिकमियां विनामरै तो विराधकपणों पावछै, इण श्रद्धारै लेखै तो शासन सर्व ऊठजावै यातो महा विपरीत श्रद्धा छै; अरिहन्त भगवन्त तो यूं कह्यो छै साधू चारित्रयानें कर्मयोगें अनेक भारी कार्य्य कीधा छै मोटा मोटा दोष सेव्या छै पछै गुरु. कनैं अनेक कोसां लगे आलोवण चाल्यो छै कदा गुरु पासै नहीं पुगो विचै ही आलोयां विना काल करै तो तिणनें भगवन्त आराधक कह्यो छै, तो जंघा चारण नें विद्या चारणनी ईर्यावही पडिकमवारी

सरधा नहीं थी कांई? ये विराधक किसे लेखे हुवै तो ऐसा ये कांई भोलाछ्या अनें वलि यां रे ईर्यावही पडिकमवारी सरधा न हुवै, तो गौचरी दिसां विहार प्रमुखनी गुरु कनें आज्ञा मांगे तो आज्ञा पिण देणी नही विचमें मरिजायतो विराधक हुवै, वलि नन्दी उतरवारी पिण आज्ञा माँगे तो आज्ञा देणी नहीं विचें मरिजायतो विराधक हुवै ते वारें नीकलियां पहिलांही ईर्यावही तो न गुणीं इथजो विराधक हुवै तो नन्दी उतरतां मोक्ष किम जाय; सागारी संथारो पचखी नावामें बैसे एहवुं आचाराङ्ग अध्येयनै तीसरे कह्यो छै, जो ईर्यावही गुणियां विना विराधक हुवै तो नावा में सागारी संथारो पचखी किम बैसें, वलि नन्दी उतरवारी साधांनें भगवान आज्ञा दीधी अनें गौचरी प्रमुखनीं पिण आज्ञा दीधी छै तिणसुं नन्दी नावा उतरतां गोचरी प्रमुख पूर्वे कार्य्य कह्या ते करतां मरे तो अ-थवा गौचरी प्रमुख कार्य्य करी ठिकाणें आयां ईर्यावही गुण्यां पहिलां मरेतो आराधक पिण विराधक नहीं।

॥ दोहा ॥

धर्म हेतु हिन्सा कियां, तुम्हे दोष कहो नांहि ॥
पुष्पादिक आरंभ में, धर्म कहो छो ताहि ॥२७॥
तो यात्रा करवा भणीं, लब्धि फोडवी जेह ॥
धर्म हेतु ए कार्य नों, किम प्रभू दण्ड कहेह ॥२८॥
यात्रा अर्थे लब्धि जे, फोडवियां दण्ड आय ॥
तो पुष्पादिक कार्य में, धर्म पुण्य किमथाय ॥२९॥

॥ इति ॥

॥ अथ सातमों धर्मार्थ हिन्सा न गिणें तेहना उत्तर नुं अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै धर्म कारणें, जीव हणें जो कोय ॥
पाप न लागै तेहनें, हिव तसु उत्तर जोय ॥ १ ॥
देवल प्रतिमा कारणें, हणै जु पृथिवी काय ॥
मन्द बुद्धि तेहनें कह्या, दशमा अङ्गरे म्हांय ॥२॥
अर्थ धर्म नैं हेतै हणें, मन्द बुद्धि कह्या तास ॥
ए पिण दशमा अङ्ग में, प्रथम अध्येयन विमास ॥३॥
जन्म मर्ण मूंकायवा, हणें जे पृथिवी काय ॥
कह्या अहेत अवोध तसु, प्रथम अङ्गरे म्हांय ॥४॥
धर्म हेतु जंतू हणें, दोष इहां नहीं कोय ॥
ए अनार्य नूं वचन, आचाराङ्गे जोय ॥ ५ ॥
जिनाला सावद्य सहु, वचन मात्र पिण सोय ॥
मुझ नें आचरवा नही, प्ररुपवा नहीं कोय ॥६॥
महानिशीथरे पंच में, कमल प्रभाः इम ख्यात ॥
सावद्य पाप सहित मैं, धर्म पुराय किम थात ॥७॥
ग्रन्थ संघ पट्टक कियो, जिन वल्लभ सुरेण ॥
जिन प्रतिमा यात्रा भणीं, किस्यूं कह्यो छै तेण ॥८॥

लोहना कांटा ऊपरे, मान्स डली प्रति ताहि ॥
मूंकी पकडे मीननैं, धीवर नर जग मांहि ॥९॥
तिम जिन विम्भ जिन नाम करि,मुग्ध लोक जेमीन।
जिन यात्रादि उपाय करि,कुगुरू ठगत मत हीन।१०।

॥ काव्य ॥

अत्र जिन वल्लभ सूरिकृत संघ पट्टानीं काव्य ॥
आकृष्टुं मुग्धमीनान् वडिशपिशितवद्बिंबमाद-र्श्य जैनं ॥ तन्नाम्ना रम्यरूपान पवर कमठान् स्वेष्ट सिद्ध्यै विधाप्य ॥ यात्रा स्नात्रोद्युपायै र्नम-सितक निशा जागराद्ये श्छलैश्च । श्रद्धालुर्नामजैने श्छलित इव शठै र्वञ्च्यतेहाजनोऽयम् ॥२१॥

॥ दोहा ॥

भस्म ग्रह कारिके वली, दशम् अछेर करेह ॥
मिथ्या मत कह्यु संघपट्टे, जिन वल्लभ सूरेह ॥११॥
इन्दू विम्भ प्रतिवाल बिन, ग्रहवूं कुण वंछेह ॥
तृतीय काव्य भक्तामरे, न्याय विचारी लेह ॥१२॥
तिम हिज जे जिन विम्भ प्रति,जिन जाणी नैं जेह ॥
बाल अजाण विना कँवण, अङ्गीकृत करेह ॥१३॥
द्रव्य पूजा सावद्य छै, के निरवद्य आख्यात ॥
उत्तर हिये विचारिये, छोडी नैं पक्षपात ॥१४॥

निरवद्य छै तो मुनि करै, गृही सामाइक म्हांय ॥
ते पिण द्रव्य पूजा करै, तुम्ह श्रद्धारे न्याय ॥१५॥
जो सावद्य द्रव्य पूजा हुश्रै, तिण सुं मुनि न करेह॥
तो सावद्य मांही धर्म पुन्य, केम कही जे तेह ॥१६॥
आरंभ जे छकाय नूं, पचण पचावण जास ॥
निज वा पर अर्थे किया, निन्दू गरहूं तास ॥१७॥
इम कह्युं वन्देतु विषैं, सप्तम गाथा जोय ॥
तो साहम्मी वच्छल विषैं, धर्म पुण्य किम होय ॥१८॥

॥ इति ॥

॥अत्र वन्देतु नीं गाथा॥ छकाय समारंभे, पयण पयावण ने दोसा ॥ अत्तट्ठा परट्ठा ए, उभयट्ठा चेव तं निन्दे ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ आठमों सुर्याभाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे सुर्याभसुर, प्रतिमां पूजी तांम ॥
तिहां हित सुहाम पाठ है, निसेस्सा ए अनुगाम ॥१॥
ते निसेस्सा नूं अर्थ तो, मोक्ष अमर पद होय ॥
ते माटै शिव हेतु ए, तसुं उत्तर हिव जोय ॥२॥
राय प्रशेणी में कह्युं, जे सुर्याभ सु देव ॥
ऊपाजियो तब चिन्त व्युं, मन मांही स्वय मेव ॥३॥

स्युं मुज नैं करिवो हिवे, पाहिलां पछै ज्ज काज ॥
स्युं मुज पाहिलां श्रेय जे,श्रेय फुन पछै समाज ॥४॥
स्युं मुज पाहिलां नें पछै,हित सुख्खम निस्सेसाहि॥
अनुगामी केडै हुइं,इम चिन्तव्यो मन मांहि ॥५॥
सामानिक पारिषध सुरे,जाणी ए अध्यव साय ॥
कर जोडी सुर्याभ प्रति, बोल्या एम बधाय ॥६॥
जिन प्रतिमां दाडां प्रते, आप भणी अवलोय ॥
अन्य बहु वैमानीक सुरा,सुरी प्रते फुन जोय ॥७॥
अरचणा जोगज जाव फुन, सेवा जोगज जेह ॥
ते माटे पाहिलां पछै, तुम नें करिवुं एह ॥८॥
पाहिलां पछैज ए श्रेय, पूर्व पच्छा पिण जोय ॥
हित सुखम निस्सेसाए हैं,अनुगाामिक अवलोय॥९॥
इम सांभल्ल सुर्याभसुर, हृष्ट तुष्ट सलहीज ॥
यावत विकस्यो हृदय फुन,ऊठ्यो सेज्म थकीज ॥१०॥
पवर सभा उप पातथी, निकली द्रह विषेह ॥
आवी नें ते द्रह प्रते, तथा प्रदच्चणा देह ॥११॥
द्रह मैं ऊतर स्नानकरे, जिहां सभा अभिषेक ॥
तिहां आवी सिंघाशणे, बैठो पूर्व सम्पेख ॥१२॥
सामानिक प्रषध प्रमुख, सुर सुर्याभ प्रतेह ॥
अष्ट सहस्र नैं चौशट फुन,जल भरिया कलशेह ॥१३॥

इन्द्राविषेक करी कहे, सुरगण में जिम इन्द्र ॥
तारा गण में चन्द्र जिम, असुर विषे चमरिन्द्र ॥१४॥
नाग विषे धरणेन्द्र जिम, भरत चक्री मनु मांहि ॥
वहु पल्योपम लग तुम्हे, वहु सागरोपम ताहि ॥१५॥
च्यार सहस्र सामानिका, यावत सोलहजार ॥
आतम रक्षक देवता, तेह तणों अवधार ॥१६॥
अधपती फुनस्वामी पणों, करतां थकांज सोय ॥
पालंता विचरो तुम्हे, इम कहै सुर अवलोय ॥१७॥
अलंकार सभातिहां, आवी करे अलंकार ॥
आवी व्यवसाए सभा, पुस्तक वांच तिवार ॥१८॥
पछे आय सिद्धायतन, प्रतिमादिक पूजेह ॥
सूत्रे विस्तार छै बहू, इहां कह्यु संक्षेपेह ॥१९॥
इम प्रतिमां दाढां पनग, पूतलिया दिक पेख ॥
वहु वाना पूजा तिणों, स्वर्ग स्थित थी देख ॥२०॥
ऊपाजियो सुर्याभ तव, चिन्तवियो मन जेय ॥
पूर्व पछें करिवुं किस्युं, मुझ पूर्व पछे स्युं श्रेय ॥२१॥
जेह कार्य कीधें छतें, पूर्व पछे स्युं मोय ॥
हित सुख प्रमुख भणीं हुइं, इम चिन्तवीयो सोय ॥२२॥
धर्म कार्य तो जाणतो, सम दृष्टी थो जेह ॥
तेह तणुं स्यूं चिन्तवे, किम तसु अमर वदेह ॥२३॥

पिण राज बेसतां कृत्य जे, करितुं पूर्व पछेह ॥
तेह कार्य संसार नां, मङ्गल हेतु कहेह ॥२४॥
तेह रीत नवी जांणतो, नवो ऊपनो एह ॥
तिण स्यूं चिंत्यो मुज किस्युं, कारिवो पूर्व पछेह ।२५।
एह भाव सुर्याभनां, सामानिक सुर धार ॥
वलि परिषधनां देवता, जांण लिया तिण वार।२६।
ए जूना था ते भणीं, राज बेसतां त्हाय ॥
कारज करवो तेहनां, जांण हुंता अधिकाय ॥२७॥
ते माटे सुर स्थिती हुंती, ते दीधी तिणें बताय ॥
जिन प्रतिमां दाढा भणीं, कह्यो पूजवुं ताय ॥२८॥
स्वर्ग रीत जाणी कह्युं, सुर सुर्याभ प्रतेह ॥
पूजा हित सुख प्रमुख विणा, प्रभु न कह्या वच एह२९
पुव्वी पच्छा पाठ त्यों, पाहिलां पछे सुजोय ॥
हित सुख आदि कह्यो सुरे, पिण पेचा पाठ न कोय३०
पूर्व पछा ते इह भवे, द्रव्य मङ्गल कहिवाय ॥
विघ्नोपशम अर्थे किया, राज बेसतां त्हाय ॥३१॥
श्रावक तुंगियां नां स्थिवर, वन्दन जातां कीध ॥
सरिशव द्रोबाच्चत दही, द्रव्य मङ्गलीक प्रसिद्ध ॥३२॥
उत्तराध्ययन बावीश में, द्रव्य मङ्गल संवाद ॥
तोरण जातां नेम कृत, दधी अच्चत द्रोबादि ॥३३॥

तिमहिज सुर्याभे करी, संसारिक मंगलीक ॥
पूजा जिन प्रतिमांदि नीं,स्वर्ग स्थिती तह तीक ३४
प्रभू वन्दन अवशर कह्युं, पेचा हित सुख आदि ॥
पेचा ते पर भव विषे, देखो तज असमाधि ॥३५॥
प्रतिमां त्यां पूज्वी पच्छा,फुन वन्दन जिन राय ॥
पेचा पाठ कह्यो तिहां, राय प्रश्रेणी म्हाँय ॥३६॥
पंचमा अङ्ग दूजे शतक, प्रथम उद्देसक पेख ॥
खंधक दिक्ता अवशरे, इह विध कह्युं विशेख ॥३७॥
धन काढे ग्रही लायथी, पच्छा पूराए ताय ॥
बंछित काल थकी पछे,फुन पहिलां काहिवाय ।३८।
ते ग्रही जाणें मुझ हुसे, ए धन हित सुख काज ॥
क्षम समरथ निस्सेसाय जे,फुन अनुगामिक साज३६
तिम जरा मरणारी लायथी,स्वात्म काढयां ताय ॥
परलोके हित सुख भणीं,वलि मुज क्षम निस्सेसाए
मेघ कह्युं धन लायथी, काढयां पूर्व पश्चात ॥
हित सुखक्षम निस्सेसाय फुन,पिणपेचा पाठ नख्यात४१
तिम जरा मणीरी लायथी, स्वात्म काढ्यां सोय ॥
हुसे विछेद संसारनूं, ज्ञाता प्रथम सु जोय ॥४२॥
प्रतिमांनीं पूजा तिहां, लायथकी धन वार ॥
काढे तिहां पच्छा प्रथम, ते इह भवमें धार ॥४३॥

जिन बन्दन पेच्चा कह्युं, चारित गृह्यां परलोग ॥
ते परभव हित सुख प्रमुख, देखो दे उपियोग ॥४४॥
कोई कहै प्रतिमां तणीं, पूजा छै निरदोख ॥
हित सुखखम निस्सेसाए कह्युं, निस्सेसाय ते मोख४५
तसुं कहिए धन लायथी, काढै तसु पिण सोय ॥
हित सुखखम निस्सेसाए कह्युं, इहां मोच्च स्यूं होय४६
धन काढै जे लायथी, इह भव पूर्व पश्चात ॥
दारिद्रथी मूंकायवो, ते मोच्च दारिद्रनीं ख्यात ॥४७॥
तिम पूजा मंगलिक अरथ, इह भव पूर्व पश्चात ॥
विघ्नथकी मूंकायवो, ते मोच्च विघ्ननीं ख्यात ॥४८॥
शतक पन्नर में भगवती, आणंद थिवर प्रतेह ॥
गोशाले जे वणिक नुं, आख्युं दृष्टान्त देह ॥४९॥
चौथो वल्मू फोडतां, बृद्ध पुरुष तिहवार ॥
फोडक हाला पुरुष नुं, हित सुख बंछण हार ॥५०॥
पथ्य आनन्द कारण तणुं, बंछण हारो तेह ॥
अनुकम्पा कारक तिको, निश्चय यश बन्छेह ॥५१॥
निस्सेसाए नुं अर्थ जे, आख्यो बृत्ति विषेह ॥
बंछे मोच्चज विपतनीं, विपत मुंकाय वूं जेह ॥५२॥
तिम प्रतिमां पूजे तिहां, निस्सेसाय आख्यात ॥
विघ्नतणी ए मोच्च हैं, विघ्न मुंकाय वूं ख्यात ॥५३॥

ए द्रव्य मंगल राज बैसतां, जे जग मांहि गिणेह ॥
विघ्न पड़े नहीं राज में, दधी अक्षत जिम जेह ॥५४॥
कोई कहै प्रतिमां तणीं, पूजाथी कहिवाय ॥
अनुगामिया ए कह्युं, फल तसुं केड़े आय ॥५५॥
तसुं कहिये धन लायथी, काढे तसुं पिण सोय ॥
अणुगामिया ए इसो, पाठ सरीसो जोय ॥५६॥
जे धन काढे लायथी, इह भव पूर्व पश्चात ॥
तसुं फल धन काढण तणुं, जिहां जाय तिहां आत ५७
विमान अधपती अभव्यथा, स्वर्ग तणी स्थिती मंत ॥
सहु सुर्याभ तणीं परें, प्रतिमां दिक पूजंत ॥५८॥
तिम पूजा प्रतिमां तणीं, ए भव पूर्व पश्चात ॥
तसुं फल द्रव्य मंगल तणुं, जिहां जाय तिहां आत ५९
शुभ सूचक संसार में, दधी अक्षत द्रोवादि ॥
तिम पिण ए सुरलोक में, शुभ सूचक संवाद ॥६०॥
भाषा श्री जिनराय नीं, गावे विवाह विषेह ॥
तिम पूजा प्रतिमां तणीं, वलि णमोत्थुणं गुणेह ॥६१॥
राज बैसतां कार्य्य जे, सहु संसारिक हेत ॥
स्वर्ग स्थिती माटे कियां, धर्म पुण्य नहीं तेथ ॥६२॥
कोई कहै पूजा कियां, ए भव विघ्न मिटेह ॥
पुण्य बंध किम नवि कहो, हिंव तसुं उत्तर लेह ॥६३॥

चढथो शूर संग्राम में, कर बहु जन संहार ॥
आज्यूं जीत फते करी, सुयस करे नर नार ॥६४॥
सावद्य युद्ध तिणों करी, अशुभ कर्म बंधाय ॥
ते अशुभ कर्मे करी, सुयस हुवै किम त्हाय ॥६५॥
नाम कर्मनी प्रकृत्ती, यसो कीर्त्ती पुन्य जेह ॥
ते तो पाछल भव बंधी, वर शुभ योग करेह ॥६६॥
ते यसो कीर्त्ति पुराय प्रकृत्ती, युद्ध समय सुविचार॥
उदय आवी तिण कारणों, सुयस करे नर नार ॥६७॥
जन बहु जाणें युद्धथी, सुजस थयो जग मांहि ॥
पण नहीं जाणें पूर्व बंध, पुराय थकी जस पाय ।६८।
तुंगियानां श्रावक किया, विघ्न हरण रे काज ॥
दधी अत्तत द्रोवादि जे, इम हिज नेम समाज ॥६९॥
दधी अत्तत द्रोवादि करी, अशुभ कर्म बंधाय ॥
विघ्न मिटे किम तेहथी, किम सुख सम्पाति पाय ।७०।
विघ्न मिटे अरिजन हटे, सुख सम्पाति पामेह ॥
ते पुराय प्रकृत्ति पूर्व भवे, बंधी शुभ जोगेह ॥७१॥
ते पुराय प्रकृत्ती कदा, मङ्गल कियां पछेह ॥
उदयं आयां सुख सम्पजे, वलि बहु विघ्न मिटेह ।७२।
जन जाणें मङ्गल थकी, हित सुख प्रमुख जे पाय॥
पण नहीं जाणे पूर्व बंध, पुराय थकी ए थाय ॥७३॥

पुत्रादिक परणायवे, आरा मोसर आदि ॥
सुयस हुवे ते पूर्व बंध, पुराये करी सम्वाद ॥७४॥
ब्रह्मा विष्णु महेश फुन, देवी पूजा आदि ॥
कीधां सुख सम्पती मिलै, तै पूर्व पुराय प्रसाद ॥७५॥
महा आरम्भ महा परग्रही, करे पंचेन्द्री घात ॥
मांस भक्षण ए चिहुं थकी, नरकायु बंधात ॥७६॥
नरके पंचेन्द्रीय पणों, पुराय प्रकृती छै जेह ॥
ते तो छै पूर्व बंध्यो, बर शुभ जोग करेह ॥७७॥
पण महा आरम्भ आदिजे, चिहुं कारण करि जोय ॥
पंचेन्द्री पणुं नहीं बंधे, न्याय हिये अवलोय ॥७८॥
तिम प्रतिमां पूज्यां छतां, हित सुख प्रमुख न थाय ॥
पूर्व बंध पुराये हुवे, हित सुखक्षम निस्सेसाय ॥७९॥
नर सुर्याभ विमाननों, अधपती देव किवार ॥
मिथ्या दृष्टी पिण हुअे, भव्याभव्य विचार ॥८०॥
जे सुर्याभे सांचवी, तेहिज रीत तिवार ॥
राज बेसतां सांचवे, विमान अधपती धार ॥८१॥
प्रतिमां दिक पूजे तिके, वलि नमोत्थूणं गुणेह ॥
तिण सूं ए स्थिती स्वर्ग नीं, मङ्गलीक हेतेह ॥८२॥
बहु सागर सुर सुरी तणुं, अधपती पणों करेह ॥
ए पिण बच हे देव नूं, देखो पाठ विषेह ॥८३॥

आयू जे सुर्याभनुं, च्यार पल्योपम ख्यात ॥
बहु सागर लग किम रहैं, पेखो तज पखपात ॥८४॥

॥ गीतक छन्द ॥

प्रतिमां तणीं पूजा तिहां सुर्याभनैं सुर आखियो पुव्वी अनें पच्छा हीयाए । आदि पाठ सुभाखियो पुव्वी पच्छा ते इह भवे संसार नां मंगलीक ही । तुन्गियादि नां जिम विघ्न हरवा । द्रोव सरसव तिम वही ॥ १ ॥ सुर्याभ जिन वन्दन तणी मन मांहि धारी छै तिहां । पेच्चा हियाए पाठ आदज प्रगट अन्तर ए जिहां । पेच्चा तिको पर भव विषे हित सुख प्रमुख पहिछाण वूं । पच्छा अनें पेच्चा उभय नुं अर्थ दिल में आंणि वूं ॥ २ ॥ खन्धक कह्यो धन लायथी काढै तिको चिन्ते सही। पच्छा पूराए हिया सुहाए आदि पाठ सु प्रगट ही । तिम जश मरणाज लाय थी निज आतम प्रति काढ्यां थकें । मुझ हुसे परलोके हियाए । प्रमुख पाठ कह्या तिकै ॥ ३ ॥ प्रतिमां तणी पूजा अनें धन लायथी काढै वही । पच्छा हियाए पाठ छै पिण पेच्चा वां परभव नहीं । सुर्याभ जिन वन्दन अनें

जे खन्धकें दीक्षा ग्रही । पेच्चा तथा परभवे यह वुं पाठ पिण पच्छा नहीं ॥ ४ ॥ चंपा तणा जन वृन्द जिन वन्दन समय ए विध कही । प्रभु वन्दतां फल पेच्चा भव वा इह भव हित सुख प्रमुख ही । फुन तु न्गियानां श्रावकें पिण स्थिवर वन्दन समयहीं । फल वन्दना नूं इह भवे वा परभवे होसे सही ॥ ५ ॥ शिवराज ऋषी फुन ऋषभ दत्तें कह्युं प्रभु वन्दन तणुं । फल इह भवे वा पर भवे हित सुख प्रमुख हुसे घणुं । इम जिन मुनी प्रतें वन्द वे फल पेच्चा वा परभव वही । पिण पाठ पच्छा शब्द किहां ही सूत्र में दाख्यो नहीं ॥६॥

॥ इति ॥

॥ अथ नवमूं चैइट्ठी निज्झराठी शब्दार्थ अधिकार ॥ प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे प्रतिमां तणीं, व्यावच करवी सार ॥
आखी दशमां अङ्ग में, तीजे संवर द्वार ॥ १ ॥
उत्तर तसुं निसुणों हिवे, तिण ठाणे इमवाय ॥
आराधे ए तृतीय व्रत, ते केहवुं मुनिराय ॥२॥

उपाधि भात पाणी जिको, प्रतीत घरथी आंण ।
संग्रह करिवूं कुशल वलि, कुशल दानमें जांण ॥३॥
ते केहनें आपै तिको, अत्यन्त गाढोबाल ।
दुरबल ते बल रहितजे, वलिग्लान मुनि न्हाल ४
वृद्ध तिको कहिये स्थिवर, खमग मास खमणादि ।
प्रवर्त्तावे जे योग्य तिम, प्रवर्त्तक ते सम्वाद ॥५॥
आचारज उवझाय फुन, नव शिष्य साधर्मीक ।
तपसी कुल गण संघ ए, तसुं व्यावच तहतीक ६
कुलते गच्छ समुदाय छै, चन्द्रादिक कहिवाय ।
गण ते कुल समुदायछै, संघते गण समुदाय ॥७॥
इतलानीं व्यावच करै, चैत्य ज्ञान अर्थेह ।
निरजरानूं अरथीछतो, कर्मक्षयां थी तेह ॥८॥
पूजा श्लाघा रहित चित, दश विध वहु विध जेह ।
करै व्यावच तृतीय व्रत, आराधे मुनि तेह ॥९॥
अप्रतीत कारी घर विषै, प्रवेश न करै जान ।
अप्रतीत कारी घर तणूं, नहीं लेवै अन्न पांण ।१०।
इहां कह्युं जे उपाधि करि, वलि भत्त पांण करेह ।
अत्यन्त बाल प्रमुख तणी, करै व्यावच्च तेह ॥११॥
कोई कहै प्रतिमां तणी, व्यावच करवी ख्यात ।
तो प्रतिमां रे ये त्रिहुं, वस्तु कांम न आत ॥१२॥

प्रतिमां अन्न खाती नथी, पीती नथी ज पांण ।
वस्त्र ओढती-पिण नथी, नथी पहरती जांण ।१३।
ते मांडे इम सम्भवै, चैत्य ज्ञान अर्थेह ।
निरज़रा नूं अर्थी छतो, करै व्यावच जेह ॥१४॥
चैत्य ज्ञान अर्थे करै, एक अर्थ ए होय ।
द्वितीय अर्थ कहिए हिवै, सांभल जो अवलोय १५
आराधै ए तृतीय व्रत, ते केहवुं मुनिराय ।
इम शिष्य प्रश्न किये छतैं, हिव गुरू भाषै वाय ।१६।
उपधि भात पांणी जिको, प्रतीत घरथी आंण ।
संग्रह करिवा में कुशल, कुशल दांन में जांण १७
ते केहनैं आपै तिको, अत्यंत गाढो बाल ।
दुर्बल रोगी बृद्ध फुन, खमग प्रवर्त्तक न्हाल ॥१८॥
आचारज उवज्झाय शिष्य, साधर्मीक पिछांण ।
तपसी कुल गण संघ ए, चैत्य तिको जिन जांण।१६।
पूर्व कह्या ते सर्व नूं, अर्थ प्रयोजन जेह ।
निरजरानुं अर्थी छतो, करै व्यावच तेह ॥२०॥
पूजा श्लाघा रहित चित, दश विध आचार्यादि ।
वहु विध भत्त पांणादि करि, करै अनेक प्रकार सम्वाद२१
चित्त अहलादक ते भणीं, चैत्य केवली जांण ।
भात पांणी तसुं आंणिदे, वलि उपधादिक दे आंण २२

सूत्र भगवती मैं कह्यो, सीहो मुनी सुजाण ।
पाक बीजोरा वीर प्रति, वहरी आप्या आंणि ॥२३॥
अन्य केवली तेहनैं, उपधादिक दे आंणि ।
आराधे इम तृतीय व्रत, महा मुनी गुण खांन ।२४।
राय प्रश्रेणी मैं कह्या, वीर तणां चिहुं नाम ।
कल्याणं मंगल चलि, दैवत चैत्य सु तांम ॥२५॥
मलियागिरि कृत वृत्ति मैं, अर्थ इसो आख्यात ।
कल्याणकारी ते भणीं, कल्याणिक जग नांथ ।२६।
दुर्त्त विघ्नज तेहनां, उपशम कारी स्वांम ।
ते मांटे जगनांथ नैं, कह्यो मंगलं तांम ॥२७॥
तीन लोकनां अधपती, तिणसुं दैवत ख्यात ।
हेतु सुप्रश्न मन तणां, तिणसुं चैत्य संजात ।२८।
चैत्य शब्द नूं अर्थ इम, आख्यो छै तिण स्थान ।
ते मांटै ए चैत्य जिन, तास वेयावच जांन ॥२९॥
मुनि नां ए पिण नांम चिहुं, आख्या छै बहु ठांम ।
कल्याणकारी ते भणीं, मुनि कल्याणिक नांम ३०
दुर्त्तोपस्म कारि पणैं, मंगल मुनि कहिवाय ।
च्यार मंगल मैं देखल्यो, तीजो मंगल वाय ॥३१॥
दैवत कहतां देव ए, पंच देवमैं ताहि ।
धर्म देव मुनि नैं कह्या, सूत्र भगवती मांहि ॥३२॥

भवद्रव्य देव भवान्तरे, देव हुसे ते त्हाय ।
चक्री ते नर देव हैं, धर्म देव मुनिराय ॥३३॥
देवाधि देव तीर्थंकरा, तिणसुं दैवत बीर ।
तीन लोकनां अधपती, युग केवल गुण हीर ।३४।
भाव देव चिहुं जातिनां, भवन पत्यादिक जेह ।
बारम शतकें भगवती, नवम उद्देश विषेह ।३५।
ते माटे ए चैत्य जिन, तास वेयावच तांम ।
निरजरानूं अर्थी छतो, करे मुनी गुण धाम ॥३६॥
कोई कहे ए चैत्य नूं, अर्थ इहां जिन होय ।
तो छेहडे ए किम कह्युं, तसुं उत्तर हिव जोय ।३७।
चैत्य तुम्हे प्रतिमां कहो, तो छेहडे किम ख्यात ।
तुम लेखे तो धुर कही, पछे अन्य मुनी आत ३८
जिन प्रतिमां जिन सारषी, तुम्हे कहोछो सोय ।
ते मांटे ए आदि में, कहिवुं चैत्य सु जोय ॥३९॥
इहां बाल अत्यन्त धुर, दुर्बल ग्लान पश्चात ।
स्थिवर प्रवर्त्तक धुर कही, पछे आचारज ख्यात ४०
आचार्य्य पदतो प्रथम, कहिवुं धुर अह्लाद ।
ठाम ठांम व्यावच विषे, आचारज पद आदि ।४१।
इहां प्रथम बालादि कही, पछे आचारज जोय ।
तेहनुं कारण को नहीं, देखो दिल अवलोय ।४२।

तिमहिज अंते चैत्य जिन, इहां आख्युं छै सोय।
तेहनुं पिण कारण नहीं, हिये विचारी जोय ।४३।
मुनि सहचारी पणां थकी, प्रथम कह्या अणगार।
पछै चैत्य ते जिन कह्या, तसुं नहीं दोष लगार ।४४।
गिणूं अनुपूर्वी तुम्हें, पद तसुं इकशय बीस।
पच्छानु पूर्वी विषै, पहलां मुनी जगीस ॥४५॥
उवझाया आचार्य सिद्ध, अरिहन्त अन्त कहेह।
अनानुपूर्वी विषै, आघा पाछा लेह ॥ ४६ ॥
अनुयोग द्वारे आखीयो, पूर्वानुपूर्वी जान ॥
पच्छानु पूर्वी वलि, अनानु पूर्वी आन ॥ ४७ ॥
पूर्वानुपूर्वी तिहां, ऋषभ जाव वर्ध मान।
महावीर यावत ऋषभ, पश्चानु पूर्वी जान ॥४८॥
आघा पाछा नाम ले, अनानुपूर्वी तेह।
ए त्रहुं अनु पूर्वी कही, देखोजी चित देह ।४६।
सामाचारी दश विध कही, अनुयोग द्वार विषेह।
इच्छा मिच्छा धुर अखी, पूर्वानु पूर्वी एह ॥५०॥
उत्तराध्ययन छब्बीस में, आवास्सिया धुर जोय।
अनानु पूर्वी यह छै, तसुं दोषण नहीं कोय ।५१।
ज्ञान दर्शन चारित्र तप, शिवमग ए चिहुं सार।
उत्तरा झयण अट्ठबीस में, प्रथम ज्ञान सुविचार ।५२।

तिण हिज अध्यय नें कृया, रुचि दर्शन ज्ञान चरित्त ।
इहां दर्शन धुर आखियो, तसुं कारण न कथित्त ।५३।
अभिणि वोधिक धुर कही, पछै कह्यो श्रुत ज्ञान ।
भगवती आदि विषैं प्रभु, प्रगट पाठ पहिछान ।।५४।।
उत्तराध्ययण अट्ठ बीस में, कह्यो प्रथम श्रुत ज्ञान ।
अभिणि वोध कह्यो पछै, तसुं दोषण नहीं जान ।५५।
पूर्वानु पूर्वी किहां, किहां द्वितीया अवलोय ।
अनानु पूर्वी कही किहा, तसुं दोषण नहिं कोय ।५६।
पंच ज्ञान में देखलो, छेहडै केवल ज्ञान ।
छेहडै दर्शन च्यार में, केवल दर्शन जान ।।५७।।
च्यार ध्यान मांही वलि, छेहडै शुक्ल ध्यान ।
छेहडै गुण ठाणा मझै, अजोगी गुण स्थान ।।५८।।
छेहडै चिहुं विध देव में, वैमानिक सुरख्यात ।
चारित्र में छेहडै कह्यु, यथा ख्यात जगनाथ ।।५९।।
वलि षठ नियट्ठानें विषै, छेहडै स्नातक जान ।।
इत्यादिक बहु सूत्र में, भाष्या श्री भगवान ।।६०।।
अनानु पूर्वी करी, इहां चैत्य जिन अन्त ।
उपधि भात पाणी करी, तसुं व्यावच मुनी करंत।६१।
आराधै इम तृतीय व्रत, महा मोटा मुनीराय ।
द्वितीय अर्थ ए आखीयो, निमल विचारो न्याय६२

चैत्य ज्ञान धुर अर्थ कह्युं, द्वितीय अर्थ जिन जोय ।
वलि केवल ज्ञानी वदे, तेहिज सत्य सुहोय ।६३।

॥ इति ॥

॥ अथ दशमूं चमर सुधर्मांगत अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे असुरेन्द्र जे, स्वर्ग सुधर्मैं जाय ।
त्यां प्रतिमां नूं शरण कह्युं, तसुं उत्तर काहिवाय ।१।
सूत्र भगवती तृतीय शत, द्वितीय उद्देशा मांय ।
चमर बीर नूं शरण ले, स्वर्ग सुधर्मैं जाय ॥ २ ॥
जई सुधर्मै शक्र प्रति, बोल्यो विरुई वान ।
शक्र कोप कर मूंकीयो, वज्र सु ज्वाजल मान ॥३॥
पछे इन्द्र विचारियो, विन नेश्राय सुजोय ।
आवे चमर सुधर्म ए, इसी शक्ति नहिं होय ॥४॥
अरिहंत अरिहंतचैत्य फुन, भावितात्म अण गार ।
आवे ए तिहुं शरण ले, चमर सुधर्मैं धार ॥५॥
ते मांटे महा दुःख ए, अरिहंतनीं अवलोय ।
भगवन्त नें अणगार नीं, अति आशातन होय ।६।
इम चिन्तव अवधें करी, प्रभु कहे मुज प्राति देख ।
शीघ्र गमन कर संग्रह्यो, वज्र प्रते सुविसेख ॥७॥

इहां तिहुं शरणा में प्रथम, अरिहंत केवल धार ।
अरिहंत चैत्य छद्मस्थ जिन, चिहुं ज्ञानी सुविचार।८।
भावितात्म अणगार फुन, यह तिहुं शरणा मंत ।
इहां चैत्य ते ज्ञान वंत, चिहुं ज्ञानी भगवन्त ।।९।।
वलि मन शक्र विचारियो, अरिहन्त नीं अवलोय ।
भगवन्त नें अणगार नीं, अति आशातन होय।१०।
चैत्य स्थान भग शब्द कह्यो, भग नुं अर्थ सुज्ञान ।
चिहुं ज्ञानी अरिहन्त ए, पिण प्रतिमां नहिं जान।११।
कोई शरण तो त्रण कहै, आशातन कहै दोय ।
अरिहन्त नें प्रतिमां तणीं, येक कहै छै लोय।१२।
शरण विषै तो पाठ त्रण, आशातन में जोय ।
दोय पाठ दाख्या हुंता, तो आशातन बे होय।१३।
शरण विषै तो पाठ त्रण, आसातन में जोय ।
तीन पाठ छै ते भणी, आशातना त्रण होय ।।१४।।
प्रत्यक्ष सूत्रे शरणा तिहुं, कही आशातनां तीन ।
अरिहंत नें भगवंतनीं, वलि मुनि तणीं कथीन ।१५।
तीन आशातन नैं विषै, चैत्य शब्द नहीं ख्यात ।
चैत्य ठिकाणें भग कह्युं, देखो तज पखपात ।।१६।।
अरिहंत नें प्रतिमां तणों, मुनिनों शरण जु थाय ।
तो छद्म जिन नुं शरण ग्रह्युं, ते किण शरणा मांय।१७।

अरिहंत तो केवल धरा, तेह विषै सुविचार ।
जिन छद्मस्थ तणों शरण, आवै किण विध सार ।१८।
जिन प्रतिमां नूं शरण कहै, तिण में पिण नहीं आय ।
तृतीय शरण जिन विन मुनी, किम तिण विषे कहाय॥
तिण सुं छद्म जिन तणुं, द्वितीय शरण ए होय ।
जो प्रतिमां नुं सरण हुवे, तो किम आवे मनु लोय २०
सभा सुधर्मा थी निकट, सिद्ध आयतन जाय ।
जिन प्रतिमां नुं शरण तो, ग्रहण करंतो त्हाय ।२१।
ते मांटे इहां चैत्य नुं, अर्थ ज्ञान अवलोय ।
अन्य ठांम पिण चैत्य नुं, अर्थ ज्ञान कह्यु सोय ॥२२॥
चौबीस तीर्थंकर तणां, चैत्य रूंख चौबीस ।
समवायङ्ग विषे कह्या, ए ज्ञान रूंख सु जगीस ॥२३॥
चैत्य ज्ञान केवल लह्युं, जिण तरु तल जिनराय ।
चैत्य वृत्त ए जाणवा, ए ज्ञान वृत्त कहिवाय ।२४।
तिमहिज अरिहंत चैत्य प्रति, चिहुं ज्ञानी अरिहंत ।
द्वितीय शरण ए जांणवो, देखोजी मतिवंत ॥२५॥
द्वितीय आशातन नें विषे, चैत्य स्थान भगवंत ।
इहां अर्थ जे भग तणों, कहिए ज्ञान सुतंत ॥२६॥
ते मांटे अरिहंतनी, प्रतिमांनी अवलोय ।
शरण कहै छै ते इहां, नथी संभवे सोय ॥ २७ ॥

॥ अथ इग्यारमुं वली कम्मा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै वलीकम्म शब्द, सूत्र विषे बहु स्थान ।
तेह तणुं स्युं अर्थ है, हिव तसु उत्तर जान ॥१॥
पंचमुद्देशे द्वितीय शत, तुङ्गिया तणां विचार ।
श्रावक स्थिवर सु वांदवा, त्यार थया तिह वार ॥२॥
स्नान करी वली कर्म कृत, तास अर्थ वृत्ती कार ।
कीधो छै ग्रह देवता, देखो हिये विचार ॥३॥
इमहीं उववाइ मैं कह्यो, प्रवृत्ति वाउक कीधं ।
वलि कर्म स्वग्रह देवता, वृत्ती विषे सु प्रसिद्ध ॥४॥
केइक इहां ग्रह देवता, जिन प्रतिमा कहै हेव ।
पिण इतलो जाणैं नहीं, ए किण घरनां देव ॥५॥
तीर्थंकरतो छै सही, तीन लोकनां देव ।
ते किम जिन प्रतिमा भणीं, घरनां देव कहेव ॥६॥
जिन प्रतिमा जिन सारषी, इम पिण कहता जाय ।
वलि स्थापे घर देवता, ए किण विध मिलसे न्याय ७
कदापि कुल देवी प्रते, कहिये घरनां देव ।
लोकीक हेतैं पूजता, श्रावक पिण स्वमेव ॥८॥

जेह देवता शब्द नित, स्त्री लिङ्ग वाची होय ।
कह्युं अमर में ते भर्णौ, न्याय हिये अवलोय ॥६॥
नवम उद्देशे सप्तशत, वर्णं कीध वलीकर्म ।
अर्थ देवता नूं कियो, वृत्ति विषे ए मर्म ॥ १० ॥
वली कर्म नुं अर्थ घर्मसी, स्नान तणों ज विसेख ।
कीधो वालि कर्म शब्द करी, आया कारज सेख ॥११॥
ज्ञाताध्येयनें दूसरे, सुत वन्छा नैं हेत ।
नाग भूत यत्त पूजवा, गई सुभद्रा तेथ ॥१२॥
पुष्करणी में स्नान कर, कीधा वलीकर्म जोय ।
ए वाव मधे किणा देवनीं, प्रतिमां पूजी सोय ॥१३॥
भीनी साडी उडणौं, एहवी छतीज तेह ।
कमल वहु ग्रही नींकली, पुष्करणी थी जेह ॥१४॥
वहु पुस्प गन्ध धूपणों, माल्य प्रमुख अवलोय ।
कांठे जे मूंक्या प्रथम, तेह ग्रही नें सोय ॥१५॥
पछै नाग घर आय नें, प्रतिमां पूजी आंम ।
जाव वेश्रमण नीं वलि, पूजी आखी तांम ॥१६॥
वलीकर्म पुष्करणी विषे, कीधो धुर आख्यात ।
ते पुष्करणी नें विषे, किणा देवनीं जात ॥१७॥

॥ सोरठा ॥

मल्ली पिता नैं पासरे, आवंता न्हाया कह्या। जाव
शब्द मैं तासरे, वली कम्मा ए पाठ छै ॥१८॥
वलि मल्ली षट राजानरे, समझावा आवी तदा।
जाव शब्द में जानरे, वली कम्मा ए पाठ छै ॥१६॥
देखो मली भगवानरे, प्रतिमां पूजी केहनी।
अध्ययन अष्टम् जानरे, आख्यो ज्ञाता नैं विषे।२०।
वलीकम्मा नुं जांणरे, अर्थ कहै पुजा तणों।
ए जिन प्रतिमां नीं मांणरे, कै पूजा कुल देवनीं।२१।
जो स्थापे जिन विम्बरे, तो मल्ली तीर्थंकर छतां।
पूजे तेह अचम्भरे, वलि प्रतिमां किण जिन तणीं २२
जिन प्रतिमां नीं तायरे, मल्ली नांथ पूजा करी।
तो भावे मुनि पायरे, देखी प्रणामें के नहीं।२३।
वलि अढी द्वीपरे म्हांयरे, भावे जिन उत्कृष्ट थी।
इक सौ सित्तर थायरे, जघन्य वीस थी नवि घटे॥२४॥
त्यां द्रव्ये जिन घर मांयरे, भावे जिन वंदे के नहीं।
वलि तसुं वाणा सुहायरे, तसुं लेखै किम नहिं सुणें२५
मलिनांथ घर मांहिरे, जिन प्रतिमां पूजीकहै।
तो द्रव्ये जिन पिण ताहिरे, भावे जिन वन्दे न किम२६

जो स्थापे कुल देवरे, मल्लिनाथ पूजा करी ।
सुर सहाय स्वय मेवरे, किम न करे श्रावक समकती २७
स्नान तणुं ज विसेखरे, अर्थ कहे वली कर्म नूं ।
तो टालियो क्लेश असेषरे, सहु ठाम वसेल स्नान नूं २८

॥ दोहा ॥

भगवती नवमां शतक में, तेतीस में उद्देश ।
जमाली मंजन घरे, स्नान वली कर्म सेष ॥२९॥
अलंकार कर नींकल्यो, मंजन घर थी हेव ।
इण न्हावा नां घर विषे, केहवो पूज्यो देव ॥३०॥
देवा नन्दा ब्राह्मणी, वलीकर्म मंजन गेह ।
तिण न्हावा नें घर किसो, पूज्यो देव कहेव ॥३१॥
द्वितीय उपाङ्ग प्रदेशी नृप, देव पूजवा जाय ।
पहिलां न्हावा घर विषे, वली कर्म कीधो ताय ।३२।
इण न्हावा नां घर विषे, किसो पूजीयो देव ।
देव पूजवा तो हिवे, जावे छै स्वय मेव ॥ ३३ ॥
ज्ञाताध्ययनें सोल में, द्रोपदी मंजन गेह ।
स्नान वलीकर्म कौतुकः, पवर वस्त्र पहरेह ॥३४॥
मंजन घर सुं नींकली, आवी जिन घर मांय ।
इतरा सुधी पाठ छै, देख विचारो न्याय ॥ ३५ ॥

पहलां तो न्हावो कह्यो, पछै कह्यु वलिकर्म ।
पछै वस्त्र पहरया कह्या, हिव जोवो ए मर्म ।३६।
स्त्री जाति सुभाव नग्न, थई न्हावा बैठी जेह ।
त्यां न्हावा नां घर विषे, केहवो पूज्यो देव ॥३७॥
वलीकर्म कर जिन घर विषे, प्रतिमां पूजी आय ।
तो वली कर्म मंजन घरे, ते केहनी प्रतिमां थाय ।३८ ।

॥ सोरठो ॥

अपात चिलाती न्हायरे, कय वलि कम्मा पाठ त्यां ।
जम्बू द्वीप पन्नती मांयरे, किसो देव त्यां पूजीयो ३९

॥ दोहा ॥

कोणिक जिन वन्दन गयो, कह्यो स्नान विस्तार ।
वली कम्म शब्दजमूलगो, नथी तिहां अवधार ।४०।

॥ अथ कोणिक जिन वंदवा गयो त्यां न्हावा नूं पाठ उववाई सूत्र में कह्यो ते लिखीये छै॥

जेणेव मज्जण घरे तेणेव उवागच्छइ गच्छइत्ता मज्जन घरं अणुप्पविसइ२त्ता समुत्ताजाला उलाभिरामे विचित्त मणिर-यण कुट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाण मंडवंसि णाणामणिरयण भत्ति चित्तं सि ण्हाण पीढंसि सुहणिसण्ण सुद्धोदगेहिं गंधोद-गेहिं पुप्फोदगेहिं सुभोदगेहिं पुणो२कल्लाणग पवरमज्जण वि-

हिए मा०िभफए नत्थ कोउपसणाहि बहुविहेहिं कल्माणगपवर मज्झ-
णावसाणे पम्हल सुकुमालगंध कासाइय लूहियंगे सरस सुरहि
गोसीस चंदणोणु लित्तगत्ते अहय सु महग्घ दूसरयण सु संवए
सुइ माला वण्णग विलेवण आविद्ध मणि सुवर्णे कप्पिय हार-
द्धहार तिसरय पालंब पलंबमाणे कडिसुत्त सुकय सोहे पिणद्धगे
विज्झे अंगुलिज्जे कल लियंगयं ललियं कया भरणे वरकडग
तुडिय थंभियभूय आहिय रूवमासिसरीया मुद्दिया पिंगलंगुलिय
कुंडल उज्जोवियाणणो मउड दित्त सरए हारोत्थय सुकयं रइवच
वत्थे पालंब पलंबमाण पडसुकय उत्तरिज्झे णाणामणि कणग-
रयण विमलमहरिह हाणिउणा विधामि समसंत विरइय सु सिलिठ
विसिट्ठ लट्ठ आविद्ध वीर वलये किं बहुणा कप्परूक्खए चेव
अलंकिय विभूसिए णरवई सकोरंट मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्झ-
माणेणं चउ चामर वालवीजयंगे मंगल जय सद्द कयालोए म-
ज्झण घराउ पडिणिक्ख मइयमऽ २ त्ता ॥ इति ॥

॥ सोरठा ॥

वली कर्म शब्दे जेहरे, पूजा जिन प्रतिमा तणी
तो कोणिक अधिकारेहरे जिन वंदन समय ए
न किम ॥ ४१ ॥ जम्बूद्वीप पन्नती एमरे, भरतेश्वर
नां स्नान नूं, विस्तार कोणिक जेमरे त्यां वली
कम्मा पाठ नहीं ॥ ४२ ॥ स्नान तणों जिण
स्थानरे, विस्तार पणों नवि वरणव्यूं, त्यां वली
कम्मा जानरे पाठ देख निरणय करो ॥ ४३ ॥

जलांजली प्रमुखरे, स्नान करंतो जे करे, कुरला-
दिक प्रतखरे, स्नान विषेसण यह छै ॥४४॥ ते मांटे
अवलोयरे, वली कम्मा जे पाठ नुं, स्नान विषेसण
सोयरे, अर्थ धर्म सी इम कियो ॥ ४५ ॥ वृत्तिकार
कह्यु सोयरे, वली कम्मे ते ग्रह देवता, तसु पूजा
अवलोयरे, इहां कुल देवी सम्भवे ॥४६॥ स्नान
विषेसण होयरे, वा पूजी ग्रह देवता, उभय अर्थ
अवलोयरे, सत्य सर्वग्य वदे तिको ॥ ४७ ॥

॥ अथ असहेजाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

वलि कहे श्रावक समकती, च्यार जाति नां देव ।
तास साम्फ वंछे नहीं, सूत्र विषे ए भेव ॥ ४८ ॥
ते मांटे वली कम्मे ते, जिन प्रतिमां पूजंत ।
पिण कुलदेवी अर्थ नाहिं, हिव तसु उत्तर मंत ।४९।

॥ सोरठा ॥

असहेज्का पाठ नूं जाणरे, अर्थ दोय है वृत्ति में ।
आपद पड्यें सुजाणरे, साम्फ न वंछे देव नूं ।५०।

पोतै कीधा पापरे, ते पोतैहीज भोगवै ।
अदीन मनो बृत्ति स्थापरे, एक अर्थ तो इम कियो ५१
वलि पाखंडी आयरे, चलावै समकित आदि थी ।
तो नहीं बंछै सहायरे, शमर्थ स्वयमेव हटायवा ।५२।
वलि जिन शासन मांयरे, अत्यन्त भावित आशता ।
ते मांटै असहायरे, अर्थ दूजो इम बृत्ती में ॥५३॥
तुन्गिया नें अधिकाररे, उभय अर्थ ये आखीया ।
तास न्याय सुविचाररे, चित्त लगाई सांभलो ।५४।
दूजो अर्थ पहिछाणरे, समकित व्रत सैंठा पणौं ।
प्रवर मूल गुण जांणरे, यह अवश्य गुंण वांछिजे ।५५।
ए गुंण खण्डित थायरे, तो हुवै विराधक पांति में ।
शुद्ध हुआं सुतायरे, आराधक पद आखीयो ॥५६॥
जो पाखंडी नैं जेहरे, जाब देवा समर्थ नहीं ।
पर सहाय बिन तेहरे, तासु चलायो नवि चलै ।५७।
तो पिण मूल गुण तासरे, तेहनुं न गयुं सर्वथा ।
समकित ब्रत नीं राशरे, अखंड पणौ राखी तिणैं ।५८।
आपद पड़ियां आयरे, सुर सहाय बंछै नहीं ।
ए धुर अर्थ कहायरे, उत्तर गुंण ते जांणवुं ।५९।
मुनि धुर पहिर सज्झायरे, द्वितीय पहिर मैं ध्यान वर ।
तृतीय गौचरी जायरे, चौथे पहिर सज्झाय फुन ।६०।

उत्तर गुंख ए च्यारेरे, कह्या विचक्षण मुनि तणों ।
ज्यों नकैरे अणगाररे, तो संयम में भंग नहीं ।६१।
तिम श्रावकैरे यहरे, उत्तर गुंण असहायता ।
सुर सहाय वंछेहरे, तो समकित में भंग नहीं ।६२।
सूत्र उववाई मांहिरे, अम्बड नैं अधिकार पिण ।
जान शब्द में ताहिरे, असहेज्भा ए पाठ है ।६३।
तास अर्थ वृत्ति मांयरे, एक इज कीधो अछे ।
आपद सुर असहायरे, ए अर्थ कीधो नथी ॥६४॥
कु तीर्थक प्रेरित्तरे, समकित सें अविचल पणों ।
पर सहाय नवि चित्तरे, उववाई वृत्ति में कह्यो ।६५।
रायप्रशेणी वृत्तिरे, असहेज्भा नूं अर्थ जे ।
कीधो अधिक पवित्तरे, चित्त लगाई सांभलो ।६६।
कु तीर्थक प्रेरितरे, समकित सें अविचल पणों ।
पर सहाय नवि चित्तरे, यह अर्थ इक हिज तिहां ।६७।
आपद सुर असहायरे, यह अर्थ कीधो नथी ।
कु तीर्थक थी ताहिरे, न चले एहिज अर्थ त्यां ।६८।
आनन्दा दिक साररे, असहेज्भा पाठ कह्यो तिहां ।
छ छंडी आगाररे, देवाभिउग पाठ में ॥ ६९ ॥
अन्य तीर्थी नें धाररे, तथा देव जे तेहनां ।
श्रद्धा भ्रष्ट अणगाररे, अन्य तीर्थी ग्रह्या तेहनैं ७०

नकरूं बन्दनां ताहिरे, नमस्कार पिण नहिं करूं।
पहलां बोलूं नांहिरे, अशणा दिक देवूं नहीं ।७१।
अभिग्रह यह विसेषरे, छ छंडी आगारत्यां ।
राजानें आदेशरे, तथा कुटम्ब आदेशथी ॥७२॥
बलवंत तणौं प्रयोगरे, देव तणौं परवश पणैं ।
कुटम्ब बडानें योगरे, अटवी विषेज कारणै ॥७३॥
ए खट तणौं प्रकाररे, अन्य तीर्थी दिक ग्रहुं भणीं।
बन्दे करि नमस्काररे, अशणादिक दे तेहनैं ।७४।
आपद उपजे आयरे, अथवा तेहनां भय थकी ।
बान्छै देव सहायरे, जाणै सावद्य तेहनै ॥७५॥
तसुं समकित किम जायरे, समकिततो श्रद्धा अछै।
हिये विचारो न्यायरे, श्रद्धा कार्य्य जुवा जुवा ७६
छ छंडी विन त्यागरे, ए पिण गुंण अधिकायछै।
अधकेरो बैरागरे, व्रत सांकडा जेहनां ॥७७॥
इक अशनां पच्चखाणरे, कीधां से श्रावक हुअे ।
शतक सतर में जांणरे, द्वितीय उद्देशे भगवती ७८
अनर्थ दंड परिहाररे, ए आठमूं व्रत है ।
अर्थ तणौं आगाररे, न्याय हिवें तेहनुं सुणों ।८६।
अर्थ दंडमैं यहरे, आठ आगारज आखिया ।
द्वितीय सुयगडांगेहरे, द्वितीय उद्देशे देखल्यो। ८०

आत्म ज्ञात घर तेथरे, परिवारनें मित्र कारणौं ।
नाग भूत यक्ष हेतरे, हिन्सादिक आरंभ करै ।८१।
अर्थ दंडरै मांहिरे, ए आठूंही आखीया ।
नाग भूत यक्ष ठायरे, श्रावकरै आगरछे ॥८२॥
धारणीनौं तिहवाररे, अकाले घन डोहला अर्थ ।
देखो अभय कुमाररे, ज्ञाता सुर आराधियो ॥८३॥
कृष्णो पिण सुविसेखरे, लघु बंधवरै कारणौं ।
देव आराध्यो देखरे, अंतगड मांही कह्या ॥८४॥
चक्री भर्त्त सु सोयरे, देवी देव भणीं तिणौं ।
जम्बू द्वीप पन्नत्ती जोयरे, अट्ठम करि आराधियो ८५
वलि मूंक्या छ बांणरे, नमस्कार सुरनें लिख्यो ।
ए प्रत्यक्षही पहिछाणरे, बन्छयो सहाय देवनूं ८६
वलि चक्री भर्तेशरे, चक्रतणीं पूजा करी ।
इम हिम्क सुर सम्पेखरे, पूजे स्वार्थ कारणे ॥८७॥
शान्ति कुंथु अरि जांणरे, चक्र रतन पूज्यो कै नां ।
खट खंड साधत पांणरे, अट्ठम् तेर कियाके नां ८८
लवण सुट्ठियो देवरे, कृष्णो पिण आराधियो ।
ज्ञाता सोलम भेवरे, सुर सहाय बंछयो तिणौं ।८९।
पूर्वोक्त पहिछाणरे, देव सहायज बान्छवै ।
सम्यक् दृष्टी जांणरे, सावज्भ लोकिक कृत करै ९०

समकित तास न जायरे, नहीं जाय श्रावक पणौं ।
जो सुर पूजे नांहिरे, तां गुण अधिकेरो अछै ।६१।
नारद केरा पायरे, द्रुपद सुता प्रणम्यां नथी ।
ए गुणछे अधिकायरे, पिण पंडू प्रणमत करी ६२
जाव शब्दरे मांहिरे, कृष्ण पिण नारद भणौं ।
प्रणमत कीधी ताहिरे,पिण तसु समकित नवि गई ६३
प्रत्यक्षही पहिछाणरे, सम दृष्टी श्रावक तिके ।
शीश नमावे जांणरे, म्लेछ नां राजा प्रते ॥६४॥
तिमहिज डरता तायरे, अथवा स्वार्थ कारणौं ।
प्रणमैं सुरनां पायरे, ते मार्ग लौकीकछे ॥६५॥
ते मांटे पहिछाणरे, पाखंडी थी नवि चले ।
दृढ भासता जांणरे, मूल अर्थ असहेज्भनूं ।६६।
वलि जे कहे इम वांणिरे, सुर सहाय नहीं वंछणौं ।
तो चोवीस जिननां जांणरे, चोवीस जच्च जच्चणी कहे ६७
शासण देव सहायरे, तसु थुई पडिकमणौं पढे ।
वलि शत्रुंजे त्हायरे, पूजे केम चक्केश्वरी ॥६८॥
तथा यती थकां प्रत्यक्षरे, काला गोरा भैरवे ।
मांणभद्र दिक यक्षरे, आराधै रक्षा भणीं ॥६९॥
ए लेखै तो जोयरे, सहाय देवनौं वंछवै ।
निज श्रद्धा अवलोयरे,तुम गुरू पिण नहीं समकती १००

पूजे भैरव आदिरे, श्रावक परखी जै तदा ।
शीतला दिक अहल्लादरे,तुम लेखे नहीं श्रावक पर्यो १०१
तिणसूं देवसहायरे, लौकीक खाते वंछता ।
सम्यक्त तास न जायरे, नहीं जावे श्रावक पर्यों १०२

॥ इति ॥

॥ अथ १२ मूं यात्रा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

यात्रा शेत्रुंजादिनीं, करवी केइक ख्यात ।
पिण ए यात्रा सूत्रमें, कही नथी जग नांथ ॥१॥
शतक अठारमें भगवती, दशमें उद्देशै सार ।
सोमल पूंछ्या वीर प्रते, प्रश्न यात्रादि प्रकार ।२।
हेभगवंत स्यूं थांहिरे, यात्रा अधिक उदार ।
इम सोमल पूछ्यां थकें, उत्तर दे जगतार ॥३॥
जिन भाषे सुंण सोमिला, छें मांहरे सुखकार ।
तप अणशणां दिक नियम, तेह अभिग्रह सार ।४।
संयम वलि सज्मायते, धर्म कथा दिक जांण ।
ध्यान आवश्यक आदि वर, जोग विमल पहिछांण५
ए पूर्वे कह्या तेहनें विषे, जयणा प्रते राखे जेह ।
ते मांहरे यात्रा अछे, कह्या पवर वच यह ॥६॥

पिण शत्रुंजय दिक तणीं, जिन यात्रा कही नांहि ।
देखोजी देखो तुम्हे, देखो हिवडा मांहि ॥७॥

॥ सोरठा ॥

वृत्ती विषै इम वायरे, यद्यपि प्रभु केवल पर्यौ ।
आवश्यकादि तायरे, वोल केइक नहीं छै तसुं ।८।
तथापि तप नियमादिरे, तसुफलनां सदभावथी ।
तप नियमादि संवाहिरे, कहिये फल ते आंशरी ६

॥ दोहा ॥

इमहिज पुष्फिया उपाङ्गमैं, तृतीय अध्येयन मझार ।
पार्श्वनाथ भगवंत प्रते, सोमल विप्र जिवार ॥१०॥
प्रश्न यात्रा दिक पूछिया, तप नियमादि प्रवृत्ति ।
पार्श्व प्रभू यात्रा कही, पिण गिरीनीं न कथित्त-११
ज्ञाताध्ययनें पंचमैं, मुनि स्थावरचा पूत ।
तेह प्रते शुक पूछिया, प्रश्न यात्रादि प्रभूत ॥१२॥
हे भदंत यात्रा किसी, शुख पूछें ए सार ।
कह्युं शावरचा पुत्र इम, जे मुझ ज्ञान उदार ॥१३॥
दर्शन चारित्र तप वलि, संयम आदि विचार ।
योगें यत्नी जीवनीं, ए मुझ यात्रा धार ॥ १४ ॥

इहां पिण यात्रा यहही, ज्ञाना दिकनीं जोय ।
पिण शेत्रुंजा आदिनीं, यात्रा न कही कोय ॥१५॥
उत्ताराध्यंन सु बारमें, हरकेशी प्रति सार ।
विप्र पूछियो थांहि रे, कुंण द्रह तीर्थ उदार ॥१६॥
धर्म रूप मुनि द्रह कह्यो, ब्रह्मचर्य अवलोय ।
तीर्थ शान्ति कारी कह्यो, पिण गिर नें न कह्यो कोय १७
शेतुंज्ज्के पव्वए सिद्धे, सूत्रमें इम गिरि ख्यात ।
पिण शेत्रुंजे तीर्थ सिध, इम न कह्यो गणि नांथ १८
जागां अलाहदी जांणिनें, कीधा तिहां संथार ।
बन्दनीक तो गुण अछै, जोवो हिय विचार ॥१९॥
जीव रहित तनुं तेहनुं, ते पिण नहिं बन्दनींक ।
तो जागां बंदनींक किम, न्याय विचारो ठीक ॥२०॥
नाज खला थी ले करी, घाल्यो जे कोठार ।
सूनां खला लार रह्या, चाढे तेह गिमार ॥२१॥
हुणडी जे लाखां तणीं, सिकार ता जे स्थान ।
काल केतले शेठजी, छोडी तेह दुकान ॥ २२ ॥
हिव हुणड़ी सिकै नहीं, तेह दुकानें जोय ।
तिम शेत्रुंजा दिक विषै, जिन मुनि सिद्धा सोय ।२३।
हिव ते पर्वत नें विषै, हुणडी तणूं ज सोय ।
सिकारण वालो नहीं रह्यो, वन्दनीक किम होय।२४।

वन्दनींक जो मिर हुअे, तो तिण ऊपर रहाय ।
पगदीधां आशातनां, हुअे तुम्ह श्रद्धा न्याय ।२४।
द्वीप अढाई नैं विषे, होय समुद्र विषेह ।
सहुठामें सीधा मुनीं, पन्नवणा सोलम यह ।२५।
जिहां येक सीधा तिहां, सीधा मुनी अनन्त ।
सूत्र उववाई नें विषे, भाख्यो श्री भगवन्त ।।२६।।
इण लेखे तुम्ह बंदवा, अढी द्वीप अवधार ।
कुन वे हाथ प्रति बंदवा, त्यां सीधा अण गार ।२७।
ते मांटे वन्दनींक छै, जिन मुनि महा गुण धार ।
पिण स्थानक वंदनींक नहीं, वाह न्याय विचार।२८।

॥ इति ॥

॥ अथ १२ मूं इकीशहजार वर्ष तीर्थ रहसी ते अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

सूत्र भगवती में कह्यो, वीसम् शतक विषेह ।
अष्टमुद्देशक वीर प्रति, गोयम प्रश्न करेह ॥ १ ॥
जम्बू द्वीपनां भरत में, ए अवशार्पिणी, मांहि ।
काल केतलुं आपरो, तीर्थ राहिस्यै ताहि ॥ २ ॥

जिन कहै जम्बू भरत में, एह अवशर्पिणी मंत ।
वर्ष सहस्र इक बीश मुक्ख, तीर्थ रहिस्यै तंत ॥३॥
तीर्थ कहिजै केहनें, इम को प्रश्न करेह ।
तसुं उत्तर तीर्थ तीको, आगम सूत्र कहेह ॥ ४ ॥
वर्ष सहस्र इक वीश लग, रहिस्यें सूत्र उदार ।
वहु द्वामें जे तीर्थ तुं, सूत्र अर्थ सुविचार ॥ ५ ॥

॥ सोरठा ॥

तीर्थ आगम धाररे, अमर कोष में आखियो ।
तीजा काण्ड मझाररे, थांत तवर्गे जाणवो ॥६॥
निपान आगम जेहरे, ऋषि सेव्यो जल गुरु विषे ।
ए चिहुं अर्थ विषेहरे, तीर्थ शब्द कह्यो तिहां ॥७॥

॥ श्लोक ॥

निपानाऽऽगमयो तीर्थ मृषि जुष्ट जले गुरौ ॥
इत्यमर तृतीय काण्ड़ थांततवर्गे ॥

॥ सोरठा ॥

तीर्थ शास्त्र अवधाररे, हेम अनेकार्थे अख्यूं ।
द्वादश नाम मझाररे, प्रथम नाम ए आखी यो ।८।

॥ श्लोक ॥

तीर्थं शास्त्रे १ गुरौ २ यज्ञे ३ पुण्य क्षेत्रा ४ वतार यो ५ ।
ऋषि जुष्ट ६ जले मांत्रिण्युं ७ पाये ८ स्त्रीरज-
स्यपि ९ ॥ योनौ १० पात्रे ११ दर्शनेषु १२ ॥

॥ इति हेम अनेकार्थे ॥

॥ सोरठा ॥

विश्व कोषरे मांहिरे तीर्थ नाम कह्युं शास्त्र तुं ।
नव नामां में ताहिरे प्रथम नाम ए पेखी ये ॥९॥

॥ श्लोक ॥

तीर्थं शास्त्रा १ ध्वर २ क्षेत्रो ३ पायो ४ पाध्याय ५
मंत्रिषु ६ अवता ऋषि ७ जुष्टांभः ८ स्त्री रजः ९
सु च विश्रुते ।

॥ विश्वे पांव वर्गे ॥

॥ सोरठा ॥

तीर्थ शास्त्र इम लेखरे कह्यो मेदनी कोष में ।
दश नामां में देखरे प्रथम नाम ए परखरो ॥१०॥

॥ श्लोक ॥

तीर्थं शास्त्रा १ ध्वर २ क्षेत्रो ३ पाय ४ नारीरजः ५ सु च । अवता र्षि ६ जुष्टांबू ७ पात्रो ८ पाध्याय ९ मंत्रिषु १०

॥ इति मेदनी थांत तवर्ग ॥

॥ सोरठा ॥

गुंण्ा तीसम उत्तराज्झयणारे, बोल गुनीसम वृत्ति में ।
तीर्थ शब्दे वयणारे, गणधर वा प्रवचन श्रुतः ॥११॥
भगवई वृत्ति मझाररे, तित्थ गणाणं नों अर्थ ।
तीर्थं प्रवचन साररे, इमाहिझ समवा यंग वृत्तौ ।१२।
तीर्थ प्रवचन साररे, तेहना अव्यति रेक थी ।
संघ तीर्थ सु विचाररे, तसुं कर्ता तीर्थंकरा ॥१३॥

॥ अत्र टीका ॥

तरंति वेन संसार सागरमिति तीर्थं प्रवचनं तद्ऽव्यतिरे काचेह संघः तीर्थं तत करण शीलत्वा तीर्थंकरः ।

॥ एहनों अर्थ वार्तिका करिइं कहू छै ॥

तिरै तिणकरी संसार सागर इति तीर्थ ते तीर्थ नें करिवानों शील पणा थकी तीर्थंकर कहियै, इम भगवती नीं वृत्ति में नमो-

त्थूणं में तित्थगरा नौं अर्थ कीधो, इमहिज समवायंग नीं वृत्ति नें विषे जाणवो, इहां तीर्थ नाम प्रवचन सूत्र नुं कह्युं ते पाठ अर्थ रूप सूत्र साधू साध्वी आधार रह्या छै अनें अर्थ रूप सूत्र श्रावक श्राविका नें आधारे रह्यो छै ते सूत्र तीर्थ तो आधेय छै अनें चतुर्विध संघ आधार छै ते आधेय नें आधार नां किण ही प्रकारे करी अभेदोपचार थकी संघ नें तीर्थ कह्युं तेह नें कारिवा नू शील ते माटै तीर्थंकर कहियै ।

इहां मुख अर्थ प्रवचननै तीर्थ कह्यूं ते प्रवचन रूप तीर्थ बहुल पणें संघनें विषे रह्युं छै तिण सुं संघनें तीर्थ कह्युं ते प्रवचन रूपी तीर्थ थी संघ जुदो नथी ते माटै ।

॥ सोरठा ॥

तीर्थ प्रवचन सारे, तत् करण शील तीर्थंकरा ।
नमोत्थूणं में धारे, राय प्रश्नेणी वृत्ति में ॥ १४ ॥

॥ अत्र टीका ॥

तीर्य ते संसार समुद्रोऽनेनेति तीर्थं प्रवचनं तत् करण शीला-स्तीर्थं कराः तेभ्यः ॥ इति ॥

॥ एहनुं अर्थ वार्त्तिका करीइं कहै छै ॥

तीरीयै संसार समुद्र इणे करी इति तीर्थ प्रवचन सूत्र ते सूत्र तीर्थकरिवा ना शील थकी तीर्थंकर कहियै, इहां राय प्रश्नेणी नीं वृत्ति में प्रवचन ते आगम नें तीर्थ कह्युं ते आगम

रूपी तीर्थ नां कर्त्ता तीर्थंकर छै ते माटे तीत्थयरे नों अर्थ तीर्थ कर कियो ।

॥ सोरठा ॥

पन्नवणा वृत्ति मझाररे, पनर भेद में तित्थ सिद्धा ।
प्रथम पदे अवधाररे, दाख्यो छै ते सांभलो ॥१५॥
सत्य प्ररुपक सोयरे, परम गुरू छै तेहनां ।
वचन विमल अवलोयरे, तीर्थ कहिये तेह नें ॥१६॥
ते निराधार नहिं होयरे, तसुं आधारज्ज संघ अति ।
तीर्थ कहिये जोयरे, वा धुर गणधर तिहां कह्युं ॥१७॥

॥ अत्र टीका ॥

तीर्यते संसार सागरो अनेनेति तीर्थं यथा अवस्थित सकल जीवाजीवादि पदार्थ परूपकं परमगुरु प्रणीत वचनं तच्च निराधार न भवति इति तदाधारं संघः प्रथम गणधरो वा तस्मिन् उत्पन्नाये सिद्धास्ते तीर्थ सिद्धा ।

॥ एहनुं अर्थ वार्त्तिका करीइं कहैछै ॥

तिरीये संसार सागर इणे करी इति तीर्थं यथावस्थित सकल जीव अजीवादिक पदार्थनां प्ररूपक परमगुरूनां कह्या वचन तेहनें तीर्थ कहिये अनें ते परम गुरूनां वचन रूप तीर्थ ते आधार विना न हुवे इण ते संघ नें आधारछै ते भणी संघनें तीर्थ कहिजे, अथवा प्रथम गणधरनें तीर्थ कहिये ते संघरूप

तीर्थनैं विषै ऊपना जे सिद्ध थया ते तीर्थ सिद्धः इहां पिण परमगुरूते तीर्थंकर तेहनां बचन ते आगम तेहनैं तीर्थ कह्यो, ते आगम आधार विना न हुवै ते आधार मांटै संघनैं तथा प्रथम गणधरनैं तीर्थ कह्यो ।

॥ सोरठा ॥

आवश्यक निर्युक्तिरे, तास अर्थ मैं भावथी ।
तीर्थ प्रवचन उक्तरे, समर्थ क्रोधादि जीपवा ।१८।

॥ अत्र टीका ॥

इह भाव तीर्थं क्रोधादि निग्रहं समर्थं प्रवचनं मेव गृहते ।

॥ एहनुं अर्थ ॥

इहां भाव तीर्थ क्रोधादि निग्रह समर्थ प्रवचन सूत्र हीज ग्रहण करियै, इहां पिण प्रवचन सूत्रनैं तीर्थ कह्यो ।

॥ सोरठा ॥

इत्यादिक बहु ठामरे, तीर्थ सूत्र भर्णा कह्युं ।
ते तीर्थ प्रवचन तांमरे, रहिस्ये इक बीश सहस्र वर्ष १६
प्रवचन तीर्थ सोयरे, संघ आधारे हुवै कदा ।
क्रिया हिक वेलां जोयरे, द्रव्य लिंगी आधार हूऔ ।२०।
जद को प्रश्न करंतरे, मुनिना गुण बिन जेहनुं ।
भणयूं सूत्र किम हुन्तरे, तसुं उत्तर हिव सांभलो. २१

धुर उद्देश ववहाररे, वहु श्रुत वहु आगम भरायुं ।
द्रव्य लिङ्गी जे धाररे, मुनि प्रायश्चितले तिण कनैं २२
इहां द्रव्य लिङ्गी आधाररे, सूत्रागम श्री जिनकह्या।
तसुं श्रद्धा आचाररे, विरूद्ध हुवे ते तो जुदो ॥२३॥

॥ वार्त्तिका ॥

ववहार उद्देशै पहलै कह्यो साधूनां रूप सहित भेप धारी वहुश्रुत वहु आगम नूं जांण ते कनैं साधू आलोवणा करै एहवुं कह्युं ए भेपधारीनैं आधार वहु श्रुत वहु आगम कह्यो छै ते माटे तेहनुं जेतलुं जेतलुं शास्त्रनां अर्थनूं शुद्ध जाण पणो ते श्रुत आगम रूप तीर्थ नूं अंस संभवै ते माटै किण इक काले चतुर्विध संघ न हुवै तो शिथलाचारी नैं आधारै प्रवचन रूप तीर्थ नौं अंस हुवै एहवुं संभाविये छै ।

॥ सोरठा ॥

वलि ववहार कथित्तरे, वहु श्रुत आगम भरायूं ।
श्रावक पश्चात्कृत्यरे, मुनी आलोवै तिणकनैं ।२४।
इहां ग्रहस्थ आधाररे, बहुश्रुत आगम जिन कह्या।
तसुं सावध व्यापारे, ए तो एहथी छे जुदो ॥२५॥
अर्थ रूप अवलोयरे, जाण पणुं छै जेहनुं ।
ते निर्वंध छै सोयरे, सुत्र तीर्थ छ जे भण्यों ॥२६॥

मिथ्या दृष्टी देखरे, देश ऊंगा दश पूर्व धर ।
उत्कृष्टा संपेखरे, नदी मांहि निहाल ज्यो ॥२७॥
मिथ्याती आधाररे, इहां प्रभु पूर्व आखीया ।
श्रद्धा तास असाररे, ते तो धुर आश्रव अछे ।२८।
इम छिन्न पंचम आरेरे, किण वेल्यां मुनि नहिं थया।
द्रव्य लिंगयाद्या धाररे, सूत्र रूप तीर्थ हुई ॥२९॥
संघ आश्रारे जेहरे, सूत्र रूप जे तीर्थ ते ।
निरंतर नहीं दीसेहरे, वर्ष सहस्र इकवीश लग ३०
कदही संघ आधाररे, कदही अन्य आधार हुवे ।
सूत्र तीर्थे सुखकाररे, वर्ष इकवीश हजार लग ३१
कोई कहे चिहुं विध संघरे, तेह भणी तीर्थ कह्यू ।
तसुं आधार सु चंगरे, प्रवच तीर्थ ते भणी ॥३२॥
पिण प्रवचन सु प्रशंसरे, द्रव्य लिङ्गी आधार तसुं ।
तीर्थे तणोंज अंशरे, किम कहिये?उत्तर तसुं ॥३३॥
पण्डित मरण विख्यातरे, शत दूजे उद्देश धुर ।
पाउवगमन सुजातरे, भत्त पच्चखाण ज दूसरो ।३४।
मुख बचनें करि न्हालरे, मरण पण्डित बे आखीया ।
मुनि अणशण विन कालरे, करै तिको पण्डित मृत्यु॥
बाल मर्ण फुन बाररे, मुख्यं बचन करि नें कह्या ।
बार मरण विन धाररे, असंयती नौं बाल मृत्क ।३५।

पूरण तापश ताहिरे, वलि जमाली तामली ।
बार मरण में नाहिरे, पिण बाल मरण ते जाणवो ३७
मुख्य बचन करि बाररे, बाल मरण आख्या प्रभु ।
तिम तीर्थ संघ च्याररे, मुख्य बचन करि जाणवा ३८
पण्डित मरण पिण दोयरे, मुख बचनें करिनें कह्या ।
तिम चिहुं तीर्थ जोयरे, मुख्य बचन करि जाणवा ३९

॥ एहिज अर्थ वार्तिका करिइं कहे छे ॥

जिम भगवती शतक दूसरे उद्देशे पहले मुख्य बचनें करी बाल मरण बारा प्रकार नों कह्यो अनें असंयती अविरती बारा प्रकार विना चालतोही मरजाय ते पिण बाल मरण हीज छै, तथा तामली जमाली प्रमुख नों बाल मरण हीज छै पिण ते बारा में नथी कह्यो ते मांटे ये बार प्रकार बाल मरण मुख्य बचनें करी जाणवो, वा वलि पण्डित मरण वे प्रकार कह्या येक तो पादोपगमन दूजो भत्तपच्चखाण ए पिण मुख बचनें करी कह्या, जे साधू संथारा विना आराधक पद पायो तेह पिण पण्डित मरण हिज छै जिम अवानुभूति तथा सु नक्षत्र मुनी नौं संथारो चाल्यो नथी ते भणी भक्त प्रत्याख्यान पादोपगमन तो नथी पिण पण्डित मरण हिज छै अनें पादोपगमन भक्त पच्च- खाण ए वे भेदें पंडित मरण कह्या ते मुख्य बचनें करी जाण वा, तथा अराधना ज्ञान दर्शन चारित्र ए तीन प्रकारनीं भग- वती शतक आठ में उद्देशे दशमें कही ते पिण मुख्य बचनें करी जाणवी, अनें वलि तिणहिज उद्देशे श्रुत ते समकित रहित

अनें शील क्रुया सहित नें देश आराधक कह्यो तिहां वृत्तीकार कह्यो ए बाल तपस्वी थोडो अंश मुक्ति मार्ग नौं आराधे एह वो अर्थ कियो छै जिम ज्ञान रहित शील सहित बाल तपस्वी मोक्ष मार्ग नौं अंश आराधे ते देश आराधक छै पिण तीन आराधनां में नथी तिम द्रव्य लिङ्गी नें आधार प्रवचन सूत्र ते तीर्थ नौं अंश संभवे पिण ते च्यार तीर्थ में नथी।

॥ सोरठा ॥

वर्ष इक्कीस हजाररे, तीर्थ रहिस्ये न्याय तसुं।
एम संभवे साररे, फुन वहु श्रुत कहे तेह सत्य ४०
वर्ष इक वीस हजाररे, तीर्थ रहिस्ये इम कह्यो।
पिण चिहुं तीर्थ साररे, रहिस्ये इम आख्यो नथी ४१
ते मांटे अवधाररे, तीर्थ प्रवचन सूत्र छै।
कदहि संघ आधाररे, द्रव्य लिङ्गी आधार कदि ४२

॥ दोहा ॥

सूत्र भगवती नौं पवर, मम कृत जोड विषेह।
वलि कर्म्म तीर्थं न्याय कह्यो, ते इहां ग्रहण करेह ४३

॥ इति ॥

॥ अथ चौदमूं आगमा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

पंच अनें चालीस में, जे चिहुं शरण विचार१ ।
नाम भक्त परिज्ञा२ वलि, फुन पईन्नो संथार३ ॥१॥
जीत कल्प४ पिंड निर्युक्ती५. पच्चखाण कल्प अवलोय।
ए खट नीं नन्दी विषे, साख नहीं छै कोय ॥ २ ॥
महा निशीथ विषे कह्यु द्वितीय अध्ययन मझार ।
कु लिखत दोष देवो नहीं, तसु कारण अवधार ॥३॥
एहिज महा निशीथ में, किहांयक अर्द्ध शीलोग ।
किहां श्लोक किहां अक्षर नीं, पंक्ती उंली प्रयोग ।४।
किहांयक पानों अर्द्ध ही, किहां पत्र बे तीन ।
गल्यो ग्रंथ इम आदि बहु, इह विध कह्यु सुचीन ।५।
वलि कह्यु तृतीय अध्ययन में, ए पुस्तक रे मांहि ।
चैंठ्ठो इक पानायकी । बीजो पानो ताहि ॥ ६ ॥
तेमाटे ए सूत्रनां, आलावा न पामेह ।
तिहां भणणहार सूत्रां तणां, वां अशुद्ध लिख्युं हुवै जेह ।७।
दोष न देवो तेहनों, खंड खंड थई एह ।
पत्र सड्या खाधा वलि, जीव उदेहि जेह ॥ ८ ॥

हरी भद्र निज मतिकरी, सांधी लिख्यूंज ताम।
इमकह्युं महा निशीथ में, वलि अन्य आचार्य नाम ९
तिणसूं महा निशीथ पिण, डोहलाणो छै एह।
सर्व मूलगो नहिं रह्यो, निपुण विचारी लेह ॥१०॥
सेषरह्या खंट तेह में, काइक काइक वाय।
अङ्गसूं न मिले तेहवच, किम मानीं जे ताहि ।११।
टीका चूरणि दीपिका, भाष्य निर्युक्ती जाण।
किणहीं करी दीसैंनथी, तिणसूंएह अप्रमाण ।१२।
एकादशजे अंगथी, मिलता वचन सुजाण।
सर्वमानवा योग्यसुभ्क, पइन्ना प्रमुख पिछाण ।१३।
धुर बे अंग नीं वृत्ति जे, शीलाचार्यें किद्ध।
अभय देव सूरें करी, नव अंग वृत्ति प्रसिद्ध ।१४।
फुन अभय देव सुरें रची, प्रथम उपाङ्ग प्रबंध।
चंद्र सूरि विरचित वृत्ति निरावलिया श्रुतस्कंध १५
शेष उपाङ्ग अरु छेदनीं, मलया गिरिकृत जाय।
हेमाचार्य वृत्तिकरी, अनुयोग द्वारनींसोय ॥ १६ ॥
हरी भद्र सूरे करी, दशवे कालिक वृत्ति।
भाष्य अनें वलि चूर्णिपिण, पूर्वाचार्यकृत्त ॥१७॥
तिम ए खंटनीं नाविकरी, पूर्वा चार्यें जोय।
तिणसूं तिणें नमानीया, एहवूं दीसे सोय ॥१८॥

शेष रह्यां बत्तीसजे, मानरा योग आरोग्य ।
एहथी मिलता अन्यपिण,छे मुक्त मानरायोग्य १६

॥ इति पैतालीस बत्तीस आगमाधिकार ॥

॥अथ पनरम मुख वस्त्रिका अधिकार॥

॥ दोहा ॥

इंद्रभूति नैं आखियो, मृगा राणी ताहि ।
मुहपोत्तिया ई करी, मुख बांधो मुनिराय ॥ १ ॥
तेमुखकहिये केहनैं, उत्तर तसुं अवलोय ।
नाकतणों ए नाम मुख, न्याय विचारी जोय ॥२॥
दुर्गन्ध आवे नाकनैं, तेमाटे सुविचार ।
नाक बांधवा नी कही, राणी मृगा जिवार ॥ ३ ॥
ज्ञाता अध्ययन आठमैं, दुर्गन्ध व्याप्यां ताहि ।
खट राजा मुख ढांकीया, ते दुर्गन्ध नाके आय ।
ज्ञाता नवम अध्येनमैं, दुर्गन्ध व्याप्यां न्हाल ।
मुख ढांक्या आख्यातिहां, जिनऋषनें जिन पाल।५
ज्ञाता अध्ययन बारमैं, जे जित शत्रूराय ।
मुख ढांके इम आखीया, दुर्गन्ध व्यापे त्हाय ।६।
मुखनों अवयव नाकछे, ते नाक भरणी मुखख्यात।
वारूंन्याय विचार नैं, समझो सुगरा सुजांत ।७।

होठ हडवडी नाक फुन, चक्षु गाल निलार।
मुखना अवयव ते भणी, मुखकाहिये सु विचार॥८॥
धुरअङ्ग प्रथम अज्झयण में, द्वितीय उद्देश उद्दंत।
पृथिवी छेदन ऊपरै, अंध पुरुष दृष्टन्त। ६।
पगसूं लेई शिरलगे, तनु द्वात्रिंशत् स्थान।
भालाधूं भेदै वलि, खडगें छेदै जान॥ १०॥
तिहां होठहडवटी नाक फुन, आंख जीभ नें दन्त।
गाल निलारअरु कर्ण फुन, जू जूआ नाम कथन्त ११
ए मुखनां अवयव कह्या, पिण मुख नों नकह्यो नाम।
ते माटे ए सहु भणी, मुख कहियै छै ताम॥१२॥
द्वादश आंगुल मुख कह्यो, नव मुख नोंसहु देह।
अनुयोग द्वारे आखियो देखो पाठ विषेह॥ १३॥
ललाटथी लेई करी, द्वादश आंगुल जाण।
नाक होठ नें हडवटी, ए मुख तणु प्रमाण॥१४॥
गर्गाचार्य ना कुशिष्य, मुखनें विषै विकार।
भृकुटी करे कह्या प्रभु, उत्तराध्ययन मझार॥ १५॥
मुख नों देश निलाड छै, ते निलाड नें मुख ख्यात।
भृकुटी ललाट नें विषै, प्रत्यक्ष ही देखात॥ १६॥
ठाम ठाम सूत्रें कह्युं, त्रिवलि भृकुटी ललाट।
निरावलियादिक नें विषे, प्रभुजी आख्या पाठ।१७।

तिमज मृगा सणी तदा, नाक भणी मुख ख्यात ।
ते दुर्गन्ध प्रति टालवा, पेखो तज पख पात ॥ १८ ॥
कर राखै मुख वास्त्रिका, जसु तीखो उपयोग ।
तो पिण नहिं अटकावतसुं, नहिं मुक्त खंच प्रयोग १६
तीखो नहिं उपियोग तसुं, जतना काज सुजोय ।
मुख बांधै मुख वास्त्रिका, तो पिण दोषन होय ॥२०॥
मुख बांधै दोरै करी, कोई कहै किहां ख्यात ।
सांचूंजी सांचु कहुं, सांचू प्रश्न सुजात ॥ २१ ॥
नहिं तीखो उपियोग तसुं, मुख बांधै सुविचार ।
वायु नीं जतना भणी, पिण नहिं छै शृङ्गार ॥२२॥
सूंठ तणों जे गांठिओ, गणी देवार्द्धि संवाद ।
भोगवणों भूली गया, संध्या आयो याद ॥ २३ ॥
जाण्यो बुद्धि हीणी पडी, लिख्या सूत्र सुख राश ।
वीर निर्वाण गयां पछै, नवसय अस्सी वाश ॥ २४ ॥
तिम तीखो उपयोग अति, रहतो जाणै नांहि ।
डोरा सूं मुख वास्त्रिका, बांधै छै मुनिराय ॥ २५ ॥
अशणा दिक प्रति बहिरतां, पांती करतां सोय ।
अन्य साधु प्रति धामतां, चरचा करतां जोय ॥२६॥
मुनि नें कार्य्य भलावतां, इत्यादिक सु प्रयोग ।
मुख बांध्यां विन किमरहै, अति तीखो उपियोग ।२७।

तिण सुं यत्तना कारणे, डोरो घाली सोय ।
मुख बांधे मुख वस्त्रिका, और कारण नाहिं कोय २८
जदि कहे डोरो किहां कह्यो, तसुं कहिये इम वाय ।
कान विषे घाले तिका, किसा सूत्रै मांहि ॥ २६ ॥
मुख बांधे डोरे करी, तसु करे निन्दा तात ।
कान बधावे प्रगट ए, आ किसा सूत्र नीं बात ३०
तर्क करे डोरा तणी, कहे किण सूत्रें ख्यात ।
कान बधावे तेहनी, क्यूं नहिं पूछे बात ॥ ३१ ॥
मोर पुच्छनां देश प्रति, घाली कर्ण मभ्कार ।
उदक थकी छांट्यां थकां, फूले तेह तिवार ॥३२॥
इम नित प्रति बहु खपकरी, कर्ण वधाय विशेख ।
इम घाले मुख वस्त्रिका, किसा सूत्र में लेख ॥३३॥
कहे बचन शुद्ध यतना अर्थ, घालां कर्ण मभ्कार ।
तो डोरो पिण यतना अर्थ, न्याय सरिषो धार ॥३४॥
उदक तणां घट नें विषे, डोरी बांधे तेह ।
किसा सूत्र में ते कह्युं, देखोजी चित देह ॥३५॥
तथा तर्पणी प्रमुख जे, डोरी बांधे तास ।
ते किण सूत्रें आखीयो, जोवो हिये विमास ॥३६॥
कम्बर बिछाणा नीं करे, तसुं डोरी बांधेय ।
ते पिण किण सूत्रें कह्युं, न्याय विचारी लेह ।३७।

वालि सीराणा बांधता, डोरी थकीज जोय ।
ते पिण किण सूत्रें कह्युं, उत्तर आपो मोय ॥३८॥
वालि चिरमली सूत्र में, आली श्री भगवान ।
तसुं डोरी बांधै तिका, किसा सूत्र में जान ॥३६॥
पुस्तक नें पूठा तणौं, पडलारै पाहिछाण ।
डोरी बांधे छै तिका, किसा सूत्र में बाण ॥ ४० ॥
वालि लेखणा राखवा, कलम दान कहिवाय ।
डोरी बांधै तेह नैं, किसा सूत्रैं म्हांयँ ॥ ४१ ॥
लिखवारी पाटी तणौं, डोरी प्रति बांधेह ।
किसा सूत्र में ते कह्युं, देखो तसुं लेखेह ॥ ४२ ॥
तथा लीक पाना तणौं, डोरी थी पाडेह ।
फांट्या नी पाटी करै, किसा सुत्र में तेह ॥ ४३ ॥
कारण में पग प्रमुखैं, पाटो बांधे देख ।
डोरी बांधे तेह नैं, किसा सूत्र में लेख ॥ ४४ ॥
गोछारै डोरयां थकी, पात्रा बांधे तेह ।
किसा सूत्र मांहीं कह्यो, उत्तर आपो एह ॥ ४५ ॥
डोरा सूं मुंह पोतिया, बांधै जयणा काज ।
तर्क करै तसुं पूछि ए, इतला बोल समाज ॥ ४६ ॥
कहै अष्ट पाहिर बांध्यां रहै, ते किण सूत्रैं ख्यात ।
तो एक पाहिर बांधै तिका, किण सूत्रें अवदात ।४७।

बखांग में इक पहिर लग, कर्ण घाल बाधंत ।
ते पिण किणी सिद्धान्त में, भाष्यो नहिं भगवन्त ४८
अष्ट पहोर बांध्यां थकां, दोष घणों जो होय ।
तो एक पहोर बांध्यां थकां, दूषण थोडो जोय ॥४९॥
जो एक पोहर बांध्यां थकां, दोष नहिं छै कोय ।
तो आठ पहर बांधै तसुं, दोषण किण विध होय ।५०।
डोरो घालै कर्ण में, तेहनों दोषण होय ।
तो कर्ण विषै मुखवास्त्रिका, घाल्यां दोषण जोय ।५१।
जो कर्ण विषै मुख वास्त्रिका, घाल्यां दोष न कोय ।
तो डोरो घालै कर्ण में, तो पिण दोष न होय ॥५२॥
कोई कहै मुख वास्त्रिका, अष्ट पहिर लग एह ।
बांध्यां कफ में ऊपजै, जीव असंखित जेह ॥ ५३ ॥
तो मुनि अञ्झा तनु विषै, थयो गुम्बडो कोय ।
राधि रुधिररै ऊपरै, पाटो बांधै सोय ॥ ५४ ॥
जीव समुर्च्छिम ते विषै, उपजै तिणरि लेख ।
पाटारै लागा रहै, रुधिर राधि संपेख ॥ ५५ ॥
जब कहै तनुनीं गर्म थी, जीव न उपजै आय ।
तो कफ में किम ऊपजै, एक सरिषो न्याय ॥५६॥
पाटै जीव न ऊपजै, तो कफनीं क्यूं ताण ।
समझो जी समझो तुम्हे, समझो चतुर सुजाण ।५७।

तनु असज्झाई मुनि तणों, इक विध त्रण संबेद ।
रजुश्वला नें त्रण फुन, अज्झा नें बे भेद ॥५८॥
ए तनु असज्झाइ विषे, मुनि अज्झा नें ताय ।
निज निज स्थानक नें विषे, करवी नांहि सज्झाय ५९
ए तनु असज्झाई विषे, मुनि अज्झा नें ताहि ।
देवी लेवी बांचणी, कल्पै मांहो मांहि ॥ ६० ॥
ववहार उद्देशे सात में, इम भाषी प्रभु वांणि ।
राखो जिन बच आस्था, चमको मती सुजाण ॥६१॥
तनु सलभ वस्त्र नें विषे, जो जंतु उपजेह ।
तो मांहों मांहीं बांचणीं, तसुं आज्ञा किम देह ॥६२॥
जो उघाड़े मुख बोलियां, न मरे वायु काय ।
तो बखांण में मुंह वस्त्रिका, ते बांधे किण न्याय ६३
फूंक देणी वरजी प्रभू, वायु नें अधिकार ।
दशवै कालिक देखलो, तुर्य अध्येन मझार ॥६४॥
मुख नें वायु करि मरे, वायु जीव विचार ।
दशमें अङ्ग देखलो, पाहिले आश्रव द्वार ॥ ६५ ॥
सूत्र भगवती नें विषे, सोलम शतक मझार ।
द्वितीय उद्देशे भाखीयो, कहिए ते अधिकार ॥६६॥
शक्र उघाड़े मुख लवे, भाषा सावद्य सोय ।
हस्त वस्त्र मुख दे वदै, निरवध भाषा होय ॥ ६७॥

वृत्तिकार इम आखीयो, जीव संरत्तण सोय ।
निरवध भाषा जाणवी, अन्या सावद्य होय ॥६८॥
विक्लेन्द्री नां पज्भत्तग्गा, तेहना स्थानक जेह ।
ते सुरलोक विषै नथी, पन्नवणा द्वितीय पदेह ।६६।
धर्म सम्बन्धी वार्त्ता, करै शक्र जेहवार ।
बोले मुख ढांकी तदा, ते निरवद्य बच सार ॥७०॥
संसारिक जे वार्त्ता, करै शक्र जेहवार ।
बदै उघाडे मुख तदा, ते सावद्य बच धार ॥७१॥
तिण कारण वायु तणी, दया अर्थ मुनि राज ।
मुख बांधे मुंह पोत्तिया, पिण अवर नहिं छै काज ७२

॥ इति ॥

॥ अथ सतरमूं स्याद्वाद अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे भगवंत नों, स्याद्वाद मत जोय ।
एकान्तिक कहिवूं नहीं, तसु उत्तर अवलोय ॥ १ ॥
स्याद् कथंचित जाणवूं, किण ही प्रकार करेह ।
वदवूं कहिवूं वादते, स्याद्वार छै एह ॥ २ ॥
कहिये किणी प्रकार करि, ते स्याद्वाद कहिवाय ।
न्याय कहुं छूं तेह नों, सांभलजो चितल्याय ॥३॥

सूत्र भगवती नें विषे, शतक सात में सोय ।
द्वितिय उद्देशै भाखीयो, जीव प्रश्न अव लोय ॥ ४ ॥
किणीं प्रकार करि प्रभू, जीव सास्वता स्यात ।
किण ही प्रकार असास्वता, आख्या श्री जगनाथ ५
द्रव्य थकी तो सास्वता, भाव थकी सु विचार ।
असास्वता प्रभूजी कह्या ए स्याद्वाद मत सार ॥६॥
सूत्र भगवती नें विषे, शतक चौद में सार ।
तुर्य उद्देशै भाखियो, परमाणु अधिकार ॥ ७ ॥
कह्यो परमाणू सास्वतो, किणी प्रकार करेह ।
किणी प्रकार असास्वतो, हिव तसु न्याय कहेह ॥८॥
द्रव्य थकी तो सास्वतो, परमाणू प्रति स्यात ।
न मिटे परम अणु पणों, किण ही काल विख्यात ।९।
वर्णादिक नें पज्जव करि, असास्वता अवलोय ।
स्याद्वाद वच एह छै, न्याय दृष्टि करि जोय ॥ १० ॥
बृहत्कल्प मांहि कह्युं, पंचमुद्देश मझार ।
प्रथम पोहर अशणादि प्रति, वहिरी नें अण गार ।११।
तुर्य पाहिर राखी करी, ते अशणादि प्रतेह ।
भोगवणो कल्पै नहीं, सुखे समाधे एह ॥ १२ ॥
गाढा गाढ आतंक करि, तुर्य पाहिर में तेह ।
भोगवणो कल्पै तसुं, स्याद्वाद वच एह ॥ १३ ॥

प्रथम पहिर बहिरी करी, कारण पडियां ताहि ।
रात्री विषै जे भोगवै, ए स्याद्वाद बच नांहि ।१४।
तुर्य पहिर आज्ञा कही, निश नीं आज्ञा नांहि ।
तिण सुं निश नहिं भोगवै, कारण पडियां ताहि ।१५।
द्वितीय उद्देशे नें विषै, बृहत्कल्परे मांहि ।
जल वा मदनां घट तिहां, रहिवुं कल्पै नांहि ।।१६।।
अन्य स्थान न मिलै कदा, तो इक बे निशि जांण ।
रहिवूं कल्पै प्रभु कह्यो, ए स्याद्वाद पहि छाण ।।१७।।
तिण हिज उद्देशे आखियो, जे आखी निशि मांहि ।
दीपक वा अग्नि बले, तिहां नहिं रहि वु ताहि ।१८।
जो अन्य जागां नहिं मिलै, तो इक बे निशि तिणस्थान
रहिवूं कल्पै प्रभु कह्यो, ए स्याद्वाद बच जान ।।१९।।
मुनि नें संघट्टो स्त्री तणो, करिवो बरज्युं स्वाम ।
सोलमां उत्तराध्ययन में, वलि बहु सूत्रे तांम ।।२०।।
बृहत्कल्प छटे कह्यु, नदी प्रमुख थी बार ।
अज्झा प्रति काढै मुनी, ए स्याद्वाद मत सार ।।२१।।
ग्रहस्थ पुरुष वा स्त्री भणी, नदी प्रमुख थी जोय ।
काढै मुनि बच एह वूं, स्याद्वाद नहिं कोय ।। २२ ।।
दशवै कालिक देखल्यो, तुर्य अध्ययन मझार ।
सचित उदक नहिं संघटै, ए जिन आज्ञा सार ।।२३।।

वृहत्कल्प तीजे कह्युं, विहार कारण थी जोय ।
नदी उतरणी प्रभूकही, ए स्याद्वाद वच होय ॥२४॥
मरणान्त कष्ट मुनि भणी, सचितोदक अवलोय ।
भोगवणुं प्रभू एहवुं, स्याद्वाद नहिं होय ॥२५॥
उत्तराध्ययन कथा विषे, परिशह द्वितीय प्रसिद्ध ।
मर्णान्त कष्ट क्षुलक शिष्य, सचितोदक नहिं पिद्ध २६
शत अष्टादश भगवती, दशम उदेशे देख ।
पूछ्यो सोमिल प्रभु प्रति, जे स्युं छो तुम्ह एक ॥२७॥
तथा तुम्हे स्यूं दोय छो, वा अक्षय तुम्ह होय ।
फुन स्यूं अव्यय छो तुम्हे, अव स्थित तुम्ह जोय २८
के तुम्ह अनेक भूत फुन, भाव भविक अव धार ।
वीर भणी खट प्रश्न ए, सोमल पूछ्या सार ॥२९॥
वृत्ति कार कह्यो तव प्रभु, स्याद्वाद प्रति ल्हाय ।
सर्व दोष गोचर रहित, अवि लंबी काहिवाय ॥ ३० ॥
इक पिण हूं छूं सोमिला, यावत वलि अनेक ।
भूत भाव भावी अपि, हूं छूं इम कह्युं पेख ॥ ३१ ॥
किण अर्थे प्रभु इम कह्युं, जाव भविक हूं सोय ।
प्रभु कहै द्रव्यार्थ करी, इक पिण छूं अवलोय ॥ ३२ ॥
ज्ञान दर्शन करि दोय हूं, प्रदेशार्थ करि ल्हाय ।
अक्षय हूं अव्यय अपि, अव स्थित पिण थाय ।३३।

अनेक भूत भावी अपि, हूं उपियोग करेह ।
न्याय सहित उत्तर छवूं, स्याद्वाद वच एह ॥३४॥
इमज थावरचा सुक प्रते, ज्ञाता पंचम् लेह ।
इमज पार्श्व सोमिल प्रते, पुष्फिया विषे कहेह ।३५।
सहु दोषण करि रहित छै, स्याद्वाद बच एह ।
पिण दोषण कर सहित बच, स्याद्वाद न कहेह ॥३६॥
पूर्वापर अविरुद्ध बच, स्याद्वाद मति मांहि ।
पिण पूर्वापर विरुद्ध बच, स्याद्वाद बच नांहि ॥३७॥
इत्यादिक प्रभू आखिया, किण ही प्रकार करेह ।
नित्य अनित्यादिक जिके, स्याद्वाद बच तेह ॥३८॥
पिण ज्यों किण ही प्रकार करि, कुशील में नांहि धर्म्म ।
वलि नहिं किण ही प्रकार करि, शील विषे अघ कर्म्म
अज हिन्सादिक में नहीं, किण ही प्रकारे धर्म ।
किण ही प्रकार बंधे नहीं, संवर थी अघ कर्म ॥४०॥
किण ही प्रकार हुवै नहीं, सावद्य मांहीं धर्म ।
किण ही प्रकार बंधे नहीं, निरवद्य थी अघ कर्म ।४१।
किण ही प्रकार हुवै नहीं, जिन आज्ञा विन धर्म ।
किण ही प्रकार नहीं बंधे, आज्ञा थी अघ कर्म ॥४२॥

॥ अथ १७ मूं विषंवाद अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै विषंवाद मत, प्रभू नौं समर्थ विषेह ।
किणा सूत्रै वच जे कह्युं, किहां अन्यथा तेह ॥ १ ॥
किणा सूत्रै वच जे कह्युं, ते वच अन्य सूत्रेह ।
विकटै ते विषंवाद कहै, उत्तर तास सुणेह ॥ २ ॥

शखर सप्त भङ्गी कही, जिन वाणी सुखदाय ।
सप्त नयें करि सत्य वच, तसु विषंवाद न कहाय ।३।
किणा ही सूत्र विषे प्रभू, आख्या वयण विख्यात ।
विगटै जे अन्य सूत्र थी, ते विषंवाद वच थात ॥४॥
विषंवाद वच एह तो, प्रभू नौं नहिं छै कोय ।
वच केवल ज्ञानी तणो, व्यभचारिक नहिं होय ।५।
विषंवाद जोगें करी, अशुभ नाम कर्म बंध ।
अष्टम शतकै भगवती, नवमें उद्देशै संध ॥ ६ ॥
विषंवाद ए अशुभ छै, तिणा थी अशुभज बंध ।
तो किम हुवै प्रभुजी तणों, विषंवाद वच मंद ॥७॥
अ विषंवाद योगें करी, नाम कर्म शुभ बंध ।
अष्टम शतकै भगवती, नवम उद्देशै संध ॥ ८ ॥

दशमां अङ्ग में देखलो, सप्तमध्येनें मांहि ।
सत्यवादी छै तेह नुं, विषंवाद वच नाहिं ॥ ९ ॥
सत्यवादी संसार का, तसुं विषंवाद वच नाहिं ।
तो प्रभूजी नां वयण ते, विषंवाद किम थाय ॥१०॥
पूर्वापर अविरुद्ध वच, प्रभू नां समवायङ्ग ।
वच अतिशय पैंतीस में, अतिशय नवम सुचङ्ग ।११।
उत्सर्ग में आज्ञा किहां, किहां आज्ञा अपवाद ।
इकसूं इक विगट न ते, पिण नहिं छै विषंवाद ॥१२॥
उत्सर्गे आज्ञा नथी, ते कार्य्य नीं जान ।
अपवादे आज्ञा कही, ते विषंवाद मत मान ॥१३॥
विषंवाद रे ऊपरे, कहिये हेतु सार ।
निपुण न्याय वच सांभली, द्वेष हिये मत धार ।१४।
बार मास हैं वर्ष नां, तेह विषे सुविधान ।
अधिक धर्म करिवा तणुं, मास भाद्रवो जान ।१५।
तेह विषे पण प्रगट है, अधिक धर्म नां दीह ।
पर्व पर्युषण प्रसिद्ध ही, पोसह प्रमुख सु लीह ॥१६॥
ते पर्युषण नें विषे, कल्प सूत्र व्याख्यान ।
तेह विषे वतका कही, सुण ज्यो सुगण सुजान ।१७।
प्रभू दशमां सुर लोक थी, भव स्थित भोगव तेह ।
चवियां पहलां नें पछे, जाणयुं अवधि करेह ।१८।

चवन समय नवि जांणियों, सूक्षम काल विशेख ।
इम हिज पनरमअझयणा में, द्वितीय आचाराङ्ग लेख१९
कल्प अनैं धुर अङ्ग मैं, चवन काल त्रहुं धार ।
एक सरिखा आखीया, हिव साहरण विचार ॥२०॥
गर्भ साहरण कियो तिहां, कल्प सूत्र मैं ख्यात ।
संहरियां पाहिलां पछै, जाणयुं श्री जगनाथ॥२१॥
संहरता वेलां प्रभू, वर्त्तमान कालह ।
जाणयुं नहिं एहवुं कह्युं, कल्प सूत्र वच एह ।२२।
आचाराङ्ग पन्नर मैं कह्यो, साहरण प्रथम पश्चात ।
वलि साहरतां वार पिण, जाणयुं श्री जगनांथ ।२३।
चवन काल तो समय इक, छद्मस्थ नों उपयोग ।
असंख समय नूं ते भणी, चवन न जाणयूं जोग २४
सुर कार्य्य साहरण ते, समय असंख सुजाण ।
तिण सूं साहरतां प्रभू, जाणयूं अवधि प्रमाण ।२५।
साहरतां जाणयुं नहीं, कल्प सूत्र मैं ख्यात ।
साहरतां जाणयुं कह्युं, धुर अंगे जगनांथ ॥२६॥
कल्प सूत्र धुर अङ्ग मैं, ए विहुं वच आख्यात ।
वच सांचो भूटो किसो, देखो तज पख पात ॥२७॥
वीर प्रभू तो एक छै, जाणयूं धुर अंग ख्यात ।
नवि जाणयूं कल्पे कह्युं, विहुं सांचा किम थात ।२८।

उभय मांहिलो एकतो, मिथ्या वचन विशेख ।
देखोजी देखो तुम्हे, देखो तज मत टेक ॥ २६ ॥
जाणयां धुर अङ्ग कह्या, तेह सत्य वच जांण ।
नवि जाणयुं कल्पैं कह्युं, ते वयण अप्रमाण ॥३०॥
बृहत्कल्परे पंच में, तनु कारण थी त्हाय ।
सूर्य ऊगो जाणि नैं, आहार लियो मुनिराय ॥३१॥
भोगवतां शङ्का पडी, रवि ऊगो के नाहिं ।
अथवा सूर्य आथम्यों, तथा आंथम्यों नाहिं ॥३२॥
शंक सहित इम भोगव्यां, रात्री भोजन पिण्ड ।
भोगवतो पामैं तिको, गुरू चौमासी दण्ड ॥३३॥
इम हिज कारण विन रवि, ऊगो जाणी त्हाय ।
आहार ग्रह्यो पिण शङ्क सहित, भोगवियां दंड आय ३४
दशम उद्देश निशीथ में, रात्री भोजन ताय ।
कारण सूं पिण भोगव्यां, दण्ड चौमासी आय ।३५।
निशीथ उद्देशे बारमैं, चुर्णी विषैं अवलोय ।
निशि भोजन कारण थकी, भोगवणो कह्यो सोय ३६
इम हिज बृहत्कल्प तणीं, चुर्णी वृत्ति विषेह ।
रोगादिक कारण मुनी, निशि भोजन जीमेह ॥३७॥
सूत्रें निशि भोजन प्रतै, वर्ज्यो ते तो शुद्ध ।
चूर्णी विषै ए स्थापियो, तेह प्रत्यक्त विरुद्ध ॥३८॥

निशीथ उद्देशे पन्नर में, आखी श्री जिन वांग ।
सचित अम्ब चूंसे मुनि, दण्ड़ चौमासी जांग ।३९।
आख्यो चूर्णी में तिहां, शिष्य अपंडित सोय ।
रोग मिटावा निमित्ते, वैद्य कथन थी जोय ।।४०।।
अथवा मारग चालतां, उणोदरी छै तेह ।
अणासरतैं जे भोगवे, विरुद्ध कहिजे जेह ।। ४१ ।।
सूत्रे वरज्यो सचित अम्ब, चूर्णीकार फुन तेह ।
कारण पडियां चूंसवूं, कह्युं विरुद्ध वच येह ।।४२।।
सचित रूंख मुनि जो चढे, तो चौमासिक दण्ड़ ।
निशीथ उद्देशे बारमैं, श्री जिन वयण सुमण्ड ४३
सूत्र निशीथ तणी जिका, चूर्णी विषे इम वाय ।
स्वान प्रमुख नां भय हरण, दण्ड़ ग्रहे मुनिराय ।४४।
प्रथम अचित दांडो ग्रहे, पछे मिश्र परि तेण ।
प्रथम परित्त यावत पछे, अनन्त काय नुं जेण ।४५।
रूंख ऊपर मुनि नवि चढे, ए जिन आज्ञा शुद्ध ।
चूर्णी कार कह्युं सचित दण्ड, ग्रहे ते वयण विरुद्ध ४६
ऋषभ भरत फुन बाहुबलि, ब्राह्मी सुन्दरी बेह ।
लख चौरासी पूर्व नूं, आयु तुर्य अङ्गेह ।। ४७ ।।
ऋष मण्डल मांहि कह्युं, ऋषभ देव भगवान ।
भरत विना बालि ऋषभ नां, पूत्र निन्नाणुं जान ।४८।

1880

भरत तणां वालि अष्ट सुत, अष्टोतरसौ एह ।
एक समय सीभ्का तीको, विरुद्ध वचन छै जेह ।४९।
ऋषभ बाहुबलि आउषो, पूर्व चौरासी लक्ष ।
किम तसुं शिव गति इक समय, पेखो तज मतपक्ष ५०
शत चौदश मैं भगवती, सप्तम उद्देश विपेह ।
वृत्ति विषे आख्यो तिको, सांभलजो चित देह ॥५१॥
पंदरसौ प्रति बोधिया, तापस गौतम सांम ।
प्रभूपै आवत पामिया, केवल युग अभिराम ।५२।
भो साधो वन्दो तुम्है, श्री जिन प्रति शिरनाम ।
इम गोतम आखै छतैं, जिन भापै गुण धाम ॥ ५३ ॥
ए केवल ज्ञानी तणीं, हे गौतम मुनिराय ।
लागै तुभ्क आशातनां, वृत्ति विषै ए वाय ॥५४॥
दशवै कालिक सूत्र मैं, नव मैं भ्क्यण विषेह ।
प्रथम उद्देशे ज्ञारमी, गाथा मैं इम लेह ॥ ५५ ॥
विप्र अग्निहोत्री तिको, अग्नि प्रतै शिरनांम ।
आहुती पद मंत्र पढ, घृतादि सींचै तांम ॥५६॥
आचार्य प्रतै इह विधे, वारूं शिष्य विनीत ।
वर अनन्त ज्ञानी छतौ, आराधै इह रीत ॥५७॥
हरीभद्र सूरि करी, वृत्ति विषे इम उक्ति ।
शिष्य केवल ज्ञानी छतौ, करै गुरू नीं भक्ति ।५८॥

कह्युं बृत्ति मैं जिन प्रते, वंदो गौतम ख्यात ।
तसुं प्रभु कही आशातनां, केम मिलै ए वात ।५९।
गुरु वंदै शिष्य केवली, सूत्र विषै इम ख्यात ।
तो प्रभु वंदो इम कह्यां, आशातन किम थात ।६०।
सचित आहार मुनि नैं अभक्ष, पंचम अङ्ग प्रबंध ।
ज्ञाता अध्येनैं पंच मैं, निजवालिया श्रुत स्कंध ।६१।
द्वितीय आचारङ्ग लागतां, आधा कर्मी आहार ।
अप्राशुक पिण बृत्ति मैं, भोगवणुं कह्यु धार ॥६२॥
कह्यो अफासु अभख जिन, बृत्ति विषै फुन तेह ।
कह्यु भोगवणो कारणों, विरुद्ध वचन छै एह ॥६३॥
शत पण वीसम भगवतीं, छट्ठा उद्देशा मांहि ।
बकुश उत्तर गुण तणों, पडि शेवी कह्युं ताहि ।६४।
तिणज उद्देशे बृत्ति मैं, बकुश प्रति इम ख्यात ।
मूल उत्तर पडिशेविये, तेह विरुद्ध संजात ॥६५॥
ठाणा अङ्ग ठाणें चतुर्थ, प्रथम उद्देशे पेख ।
सनत कुमार तणी कही, अंत क्रया सुविशेख ॥६६॥
आवश्यक निर्युक्ती मैं, उत्तराध्येन बृत्ति मांहि ।
तीजै स्वर्ग गयुं कह्यो, मिलै नहिं ए वाय ॥६७॥
अष्टम् शतके भगवती, द्वितीय उद्देशा मांहि ।
एकेन्द्री निश्चय करी, कह्या अज्ञानी ताहि ॥६८॥

कर्म्म ग्रन्थ मैं देखल्यो, एकेन्द्री रे मांहि ।
बे गुण ठाणा आखीया, तेह विरुद्ध कहाहि ।६९।
शतक सात मैं भगवती, छट्ठे उद्देश संवेद ।
छट्ठे आर वैताढय विन, सहु गिर हुस्ये विछेद ।७०।
प्रकरण मैं शत्रुंज गिरि, सप्त हस्त परिमाण ।
रहिस्ये आख्यो तेह वच, प्रत्यत्त विरुद्ध पिछाण ।७१।
अष्टम् शतके भगवती, नवम् उद्देश विपेह ।
माया गूढ माया करे, वचन अलीक वदेह ॥७२॥
कूडा तोला नें वालि, कूडा मांप करेह ।
ए च्यारूँई प्रकार करि, तीरि आयु बंधेह ॥ ७३ ॥
ए चिहुं कारण अशुभ थी, तीर्यंच आयु वन्ध ।
तिण कारण तिर्यंच नूं, आयु पाप कथिंध ॥ ७४ ॥
कर्म्म ग्रन्थ मांही कह्यो, तिर्यंच आयु पुन्य ।
ते मांटे ए सूत्र थी, वचन विरुद्ध जघुन्य ॥७५॥
पंच स्थावर विकलेन्द्रिया, ए पिण तीर्यंच जाण ।
तास आउषो पुन्य कहे, प्रत्यत्त विरुद्ध पिछाण ७६
जघन्य आउषा नुं धणीं, तीर्यंच मरि नें तेह ।
जो तीर्यंच मैं ऊपजे, कोडि पूर्व स्थित केह ॥७७॥
जघन्य आयु पंच तिरि तणां, मांठा अध्यव साय ।
कह्या भगवती ने विषै, शतक चोवीसमां मांहि ।७८।

अपसत्थ अध्यवसाय सुं, कोडि पूर्व तिरि होय ।
तिरण सुं ए तिरि आउपो, पाप कृत अवलोय ।७६।
कुल चाराडाले ऊपनौं, हरकेशी मुनिराय ।
उत्तराध्ययन विषै कह्युं, बारमां अध्येन म्हाँय ।८०।
कर्म्म ग्रन्थ मांहीं कह्यो, छट्ठे गुण ठाणेह ।
नींच गोत नो उदय नहीं, न्याय मिलै किम तेह ।८१।
अष्टम शतके भगवती, दशम उद्देशे इष्ट ।
जघन्य ज्ञान आराधनां, सत अठ भव उत्कृष्ट ।८२।
बृत्तिकार कह्युं यह विध, चरित सहित जे ज्ञान ।
तेहनी जघन्य आराधनां, तसुं भव ए पहिछान ।८३।
बीजा सम दृष्टी तणां, देश ब्रती नां जेह ।
भव उत्कृष्ट असंख हैं, न्याय बचन छै एह ॥८४॥
चंदा विजय ग्रन्थमें, आराधक नां सोय ।
आख्या भव उत्कृष्ट त्रण, यह मिलै नाहिं कोय ।८५।
अष्टम् अङ्ग नेम प्रभू, कृष्ण भणी आख्यात ।
तुं तीजी पृथ्वी विषै, जास्ये स्थित दधि सात ।८६।
तीजी थी अन्तर रहित, निकली सथ वारेह ।
अमम नाम द्वादशम् जिन, थास्ये महागुन गेह ८७
इहां आख्यो अन्तर रहित, तृतीय नरक थी ताहि ।
निकली तीर्थंकर हुस्ये, तिण सुं बिच भव नांहि ८८

प्रकरण रत्तन संचय विषै, आख्यो कृष्ण मुरार ।
वालू प्रभाथी नींकली, नर भव लही उदार ।८६।
ब्रह्म कल्प में सुर थई, हुस्ये तीर्थंकर देव ।
इम आख्या तसु पञ्च भव, केम मिले ए भेव ६०
इत्यादिक जे सूत्र थी, वृत्ति प्रमुखरे मांहिं ।
विरुद्ध वचन छै ते प्रतें, किम मानी जे ताहि ।६१।
द्वितीय आचारङ्ग नें विषै, दशम उद्देशे म्हाँय ।
मंस मच्छ कह्यो पाठ में, तास अर्थ कहि वाय ।६२।
टबो पार्श्व चंद्र सूरि कृत, तेह विषै इम ख्यात ।
वृत्तिकार ए मांस मच्छ, लोक प्रसिद्ध आख्यात ६३
विरुद्ध सूत्र सुं ते भणीं, नसंभाविये ए अर्थ ।
वलि गीतार्थ जे वदै, प्रमाण छे ज तदर्थ ॥६४॥
अस्थी शब्दे सूत्र में, कुलिया छे बहु स्थान ।
एगट्ठिया हरडे कह्युं, सूत्र पन्नवणा जान ॥६५॥
कह्या दाडिम प्रते बहुट्ठिया, एहवा शब्द प्रभूत ।
अस्थि शब्द कुलिया कह्या, तो मंस शब्द गिर हुन्त ६६
एहवो संभाविये अछै, ते माटे अवलोय ।
वनस्पतिज विशेष छै, मन्स मच्छ ए जोय ।६७।
भाव उघाडे मन्स मच्छ, चारित्रया नें जेह ।
कारण थी पिण आहार वो, योग्य नथी दीसेह ।६८।

वलि सूत्र मैं साधु नैं, उत्सर्ग भाव आख्यात ।
वृत्ति विषै अपवाद ए, भाव तणो अवदात ॥ ९९ ॥
तिण जे विशेख सूत्र नों, अर्थ उत्सर्ग पणेह ।
जेम अछै तिमहिज मिलै, इम कह्यु टबा विषेह १००
टबा कार पिण इम कह्यो, सूत्र थकी विगटेह ।
अर्थ प्रमाण तिको नहीं, तो मुझ दूषण किम देह १०१

॥ इति ॥

॥१८ मुं भगवती में निर्युक्ती कही तथा पन्नवणा सामाचार्य्य कृत कहै तसुत्तर अधिकार॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै निर्युक्ती कही, शत पण बीसमां मांहिं ।
तृतीय उद्देशे भगवती, तुम्हे न मानूं कांहिं ॥ १ ॥
तसुं पूछीजे निर्युक्ती, केहनी कीधी जेह ।
भद्र बाहु कृता तब कहै, चौद पूर्व धर तेह ॥ २ ॥
तसुं कहिये जे तुम्ह कही, भद्र बाहु कृत एह ।
तो भगवती सूत्र विषे तिका, केम कही छै तेह ॥ ३ ॥
वीर छतां ए भगवती, तेह विषे अवधार ।
किम कहि भद्र बाहु कृता, देखो न्याय विचार ॥ ४ ॥

भद्र बाहु मोटा हुवा, पञ्चम् अर्क सुजात ।
चौथ अरके भगवती, तेह विषे किम थात ॥ ५ ॥
ग्रामो नास्ति सीम कुतः, भद्र बाहु अणगार ।
नथी हुंता तो तसुं कृता, केम निर्युक्ति तिंवार ॥ ६ ॥
सूत्र भगवती नैं विषै, कही निर्युक्ति जेह ।
तेह मानवा योग अम्हे, पिण हिवडां नहिं तेह । ७ ।
तब कहै पट तेबीस मैं, सामाचार्य्य ताहि ।
सूत्र पन्नवणा तिण कर्‌युं, कह्यो पीठका मांहिं ॥८॥
गणधर कृत ते भगवती, तेह विषै सु विचार ।
नाम पन्नवणा नो कह्यो, ते किण विध अवधार ॥६॥
तसुं कहिये ते पन्नवणा, सामाचार्य्य जोय ।
मोटा नीं छोटी करी, एहवुं दीसै सोय ॥ १० ॥
पिण मूल थकी कीधी नवी, इसो संभवै नांहिं ।
दश पूर्वधर ते नहीं, तसु कीधी किम थाय ॥ ११ ॥
सम्पूर्ण दश पूर्व धर, चौदश पूर्व धार ।
तास रचित आगम हुवै, वारूं न्याय विचार ॥ १२ ॥
हेमि नाम माला विषै, धुर काण्डे अवदात ।
सुहस्ताद्या वज्रान्ता, दश पूर्व धर आख्यात ॥१३॥
सुहस्त सें लेई करी, वज्र स्वामी लग जोय ।
दश पूर्व धर दाखिया, अधिक पूर्व नाहिं होय ॥१४॥

स्वामी वज्र थयां पछै, बहु वर्षे सुविमास ।
सामाचार्य्य तो थया, दश पूर्व नहिं जास ॥१५॥
तसुं कृत आगम किम हुवै, न्याय नेत्र करि जोय ।
सूत्र वृहत् नौं लघु करै, तसुं कारथा नहि कोय ॥१६॥
इमाहिक्क सूत्र निशीथ प्रति, गणी विसाह विचार ।
मोटा नूं छोटो कर्‌यु‌ं, एहतुं दीसै सार ॥ १७ ॥
वलि कहे दशवै कालिक पिण, कर्‌यु‌ं सीजंभव एह ।
तास नाम नदी विषै, किम आख्यो गुण गेह ॥१८॥
गणधर कृत जे भगवती, तास विषै सुविचार ।
नाम नदी नूं पिण कह्यो, हिव तसुं उत्तर सार ॥१९॥
जेम पन्नवणा तिमज ए, वृहत् थकी लघू कीध ।
पिण मूल थकी कीधी नवी, नथी संभवै सीध ॥२०॥
चौदश पूर्व मांहि थी, अर्थ अनोपम सार ।
दशवै कालिक वृहत् पिण, पूर्वे रचित उदार ॥२१॥
ते मोटा नूं ए लघू, मनक पुत्र अर्थेह ।
सूत्र सीजंभव पिण कर्‌यु‌ं, न्याय संभवै एह ॥ २२ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ १९ मूं नदी थिरावली अधिकार ॥

कोई कहे नदी तणीं, थिरावली छै तेह ।
गणधर कृत के अन्य कृत, हिव तसुं उत्तर देह ॥१॥

नदी पीठका नैं विषे, सुधर्म जम्बू सांम ।
प्रभव सीजंभव आदि त्यां, पाठ बन्दे बहु ठांम ।२।
अनागत जिन तुर्य अङ्ग, वन्दे पाठ न ख्यात ।
तेह अनागत मुनि भणीं, किम बंदे गणिनांथ ।३।
तिण सूं यह थिरावली, देव वाचक कहिवाय ।
पिण गणधर कृत ए नहीं, निर्मल विचारो न्याय ४
थिरावली नें अन्त कह्युं, अन्य पिण सहु भगवंत ।
प्रणमी ज्ञान प्ररूपणा, कहस्युं तास उदन्त ॥ ५ ॥
नदी सूत्र नीं वृत्ति मैं, आख्यो इम अवदात ।
दुष्य गणी नौं शिष्य जे, देव वाचक इम ख्यात ।६।
इण लेखे नदी सूत्र, दुष्य गणी शिष्य देव ।
मोटा नूं छोटो कर्‌युं, ते जाणे जिन भेव ॥ ७ ॥
कथा तणी गाथा जिके, नदी सूत्रै मांहि ।
देव वाचक कीधी हुवे, एहवुं दीसै न्याय ॥ ८ ॥
दश चोंदश पूर्व धरा, आगम रचै उदार ।
ते पिण जिननी शाख थी, विमल न्याय सुविचार ।९।
पिण जिननीं जे शाख विन, आगम सूत्र अमोल ।
छद्मस्थ कृत किण विध हुवे, त्राजु न्याय सूं तोल ।१०।
चो नाणी गोयम गणी, चौदश पूर्व धार ।
ते पिण वचन खलाविया, सप्तम अंग मझार ११

दृष्टीवाद तणों धणी, बचन खलायां ताहि ।
अन्य मुनी नें हँसवो नहीं, दशवे कालिक मांहि ।१२।
पञ्चम अंग तृतीय शत, प्रथम उद्देशै त्हाय ।
वैक्रिय शक्ती सुर तणीं, अग्नि भूति कहिवाय ।१३।
वाय भूति श्रद्धी नहीं, प्रतीत नाणी तेह ।
प्रभु नें पूछ खमाविया, द्वादशाङ्ग धर एह ।१४।
ठाणा अङ्ग ठाणें सात मैं, हिन्सा भूट अदत्त ।
शब्द रूप गंध फर्श रस, आस्वादी हुवे रक्त ।१५।
वलि पूजा सत्कार प्रति, पामी नें हर्षाय ।
सावद्य इहवध कही, तास सेववूं थाय ॥१६॥
जेम प्ररूपे ते विषे, नथी पालवूं होय ।
सप्त प्रकारे जाणवूं, छद्मस्थ प्रति अवलोय ॥१७॥
चौद पूर्व धर पिण करे, पाडिक्रमणो विहुं काल ।
भूलता खामी तुं तिको, देखो न्याय निहाल ।१८।
तिण सुं चौदश पूर्व धर, वलि दश पूरव धार ।
जिन शाखें आगम रचे, इसो संभवे सार ॥१९॥
इम हिज प्रत्येक बुद्धि पिण, जिन शाखें सुविचार ।
आगम रचवुं संभवे, अमल न्याय अवधार ।२०।
इम सुज भ्यासे तिम कह्युं, अर्थ अनूप उदार ।
फुन केवल ज्ञानी कहै, तेहिज छै तंत सार ।२१।

जद कहै चौदश पूर्व धर, भद्र वाहु गुन गेह ।
निर्युक्ती तेहनी करी, किम मानूं नवि तेह ॥२२॥
हिव तेहनौं उत्तर सुणो, तेह निर्युक्ती मांहि ।
हूं वादूं वजू स्वामी प्रतै एम कह्युं छे ताहि ।२३।
जो भद्र वाहु कृत ए हुवै, तो वजू स्वामी प्रति जेह ।
नमस्कार किण विध करै, देखोजी चित देह ।२४।
वलि निर्युक्ती मैं कह्यो, वाल्य अवस्था मांहि ।
मेह वर्षतां देवता, आहार निमंत्र्यो ताहि ।२५।
पिण ते आहार वंछ्यो नहीं, सीख्यो विनय आचार।
एहवा वजू स्वामी प्रतै नमस्कार करूं सार ।२६।
नगर उज्जेणी नैं विषै, जम्बक नामैं देव ।
करी परीक्षा नैं पछै, स्तव्यो तास स्वयमेव ॥२७॥
लब्धि अक्षीण माहणसी, तेह तणौं धरण हार ।
सीह गिरी प्रशंसीयो, वन्दू ते अणगार ॥ २८ ॥
पदासारणी लब्धि जसु, दश पुर नगर मझार ।
महिमा कीधी देवता, करूं तासु नमस्कार ॥२६॥
जेह कुशुम पुर नैं विषै, धनौ शेठ जिवार ।
धन फुन कन्याइं करी, निमित्रियो धर प्यार ॥३०॥
नव जोबन वय नैं विषै, वज्र ऋषी गणधार ।
नमस्कार तेहनैं करूं, इम कह्यो निर्युक्ति मझार ।३१।

भद्र बाहु स्वामी पछै, बहु वर्षै अवधार ।
वज्र स्वामी मोडा हुवा, देखो न्याय विचार ॥३३॥
निर्मिंत्रीयो कन्या धने, एम इहां आख्यात ।
पिण निमंत्रसी इम नथी कह्यो, देखो सुगण सुजात
महिमां कीधी देवता, इम इहां आख्यो सोय ।
सुर करस्ये महिमां इसो, बचन कह्यो नहीं कोय ।३४।
तिण कारण ए निर्युक्ती, भद्र बाहु कृत नांहिं ।
वलि ए निर्युक्ती विषे, बचन बहु विरुद्ध दिखाहि।३५।
उववाई में आखीयो, उत्कृष्टी अव गाह ।
धनुष पंचसय नी तिको, सीझै ए जिन वाय ।३६।
आवश्यक निर्युक्ति में, मोरा देवी माय ।
सवा पांचसौ धनुष तनु, ए बच केम मिलाय ॥३७॥
ठाणांग तुर्यठाणा विषे, प्रथम उद्देशा मांहि ।
सनत्कुमार चक्री तणी, अंत कृया कही ताहि ।३८।
आवश्यक निर्युक्ति में, चक्री सनत् कुमार ।
तीजे सुर लोके गयो, ए बच विरुद्ध विचार ।३९।
ऋषभ बाहुबल आउषो, पूर्व चोरासी लक्ष ।
समवायंगमें आखीयो, पाठ मांहि प्रतक्ष ।४०।
आवश्यक निर्युक्ति में, ऋषभ बाहुबल राय ।
एक समय शिवगत लही, केम मिलै ए बाय ।४१।

ज्ञाताध्येनें आठ मैं, मल्ली नाथ जिन राय ।
पोह सुध इगारस दिनैं, चारित्र केवल पाय ।४२।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, चारित्र केवल नाण ।
मृगशिर सुध एकादशी, विरुद्ध वचन ए जान ।४३।
नेऊ गणधर अजित नां, समवायंग विषेह ।
आवश्यक निर्युक्ति मैं, कह्या पंचाणुं जेह ॥४४॥
तुर्य अङ्ग जिन सुविध नां, असी अरु खट गण धार ।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, अठयासी अधिकार ॥४५॥
तुर्य अङ्ग शीतल तणां, तीन असी सुविचार ।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, एक असी गणधार ॥४६॥
तुर्य अङ्ग बासट कह्या, बास पुज्य गणधार ।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, छासट्ठ कह्या तिंवार ।४७।
गणधर अनन्त प्रभू तणां, सूत्रे चौपन जास ।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, आख्या छे पचास ॥४८॥
गणधर धर्म्म प्रभुतणां, सूत्रे अड़तालीस ।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, तयां लीस फुन दीस ।४९।
नेऊ गणधर शान्ति नां, तुर्य अंग सुजगीस ।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, आख्या छे खट तीस ।५०।
पार्श्व प्रभु नां तुर्य अङ्ग, गणधर अष्ट उदार ।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, आख्या दश गणधार ॥५१॥

आवश्यक निर्युक्ती सुनि, कृत पंचक मैं काल ।
पञ्च डाभ नां पूतला करवा कह्या जु न्हाल ।५२।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, वातिका विरुद्ध अनेक ।
चतुर हुअै ते ओलखी, छांडै मतरी टेक ॥ ५३ ॥
तिण सुं चौदश पूर्व धर, भद्र बाहु अणगार ।
तेहनी कीधी किम हुवै, ए निर्युक्ती विचार ।५४।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, कारण थी अण गार ।
ग्रहण करै खट काय नैं, कहिये ते अधिकार ।५५।
शर्पादिक डसियां छतां, पृथिवी काय प्रतेह ।
प्रथम अचित्त मांगी लिये, ग्रहस्थ समीपे जेह ।६५।
जो मांगीलाधे नहीं, तो पोते आणेह ।
कदा अचित लाधे नहीं, तो मिश्र पृथ्वी मांगेह ५७
मिश्र पृथ्वी लाधे नहीं, तो पोते हिम्फ जाय ।
अटव्या दिक थी मिश्र प्रति, ले आवे मुनिराय ।५८।
मीश्र कदा लाधे नहीं, मांगे जई ग्रहस्थां पास ।
सचित पृथिवी काय प्रति, मांगी ल्यावे तास ।५६।
जो मांगी सचित मिले नहीं, तो पोतै हीज जाय।
खान प्रमुख आगर थकी, ले आवे मुनिराय ॥६०॥
जेह काम आणी तिको, कार्य्य करी नैं ताय ।
पृथिवी काय जे ऊगरे, तेह परिठुवै जाय ॥ ६१ ॥

इम कारण थी धुर अचित, मिश्र सचित अपकाय ।
मुनी दातार कनैं जई, मांगी ल्यावे त्हाय ॥६२॥
जो मांग्यो जल ना मिलै, तो पोतै हिष्क जाय ।
नदी तलावादिक थकी, अप आणैं मुनिराय ।६३।
शूलादिक कारण पड्यां, इम हिष्क तेऊ काय ।
अचित मिश्र फुन सचित प्रते, मांगे ग्रही पे जाय ६४
जो मांगी अग्नि मिलै नहीं, तो पोतै हिष्क जाय ।
कुम्भ कारादिक स्थान थी, लेइ आवे मुनिराय ।६५।
शूलादिक कारण पड्यां, इम हिष्क बाउ काय ।
अचित मिश्र फुन सचित प्रति, ग्रहण करे ऋषी त्हाय।
इम हिष्क बनस्पती अचित, मिश्र फुन सचित मुनिराय
गाढा गाढ कारण पड्यां, ग्रहे मूला दिकताय ॥६७॥
त्रश बेन्द्रिया दिक प्रते, तनु फोडा दिक होय ।
तास मिटावा मुनि ग्रहे, जलोक आदि सुजोय ।६८।
आवश्यक निर्युक्ती मैं, पारिट्ठावणिया समितेह ।
आखी छै ए वारता, किम मानी नै एह ॥६९॥

॥ अथ वीसमूं नदी अधिकार ॥

कोई कहै नदी उतरै, मुनि इर्य्या समितेह ।
तिहां जिन आज्ञा ते भणी, हिन्सक तसु न कहेह ।१।

तिम म्हे पिण प्रतिमां भणी, पुष्प चढावां तेह ।
म्हानें पिण जिन आंण छै, हिन्सा तसु न कहेह ॥२॥
तसुं कहिये साधू नदी, उतरै तिहां जिन आंण ।
जो पूजा में जिन आंण छै, तो मुनि केम न करै जांण
वंदनां नी पूछयां थकां, मुनि आज्ञा दे तेह ।
पुष्प चढावूं इम कह्यां, मुनि आज्ञा नाहिं देह ।४।
नदी ऊतरै जे मुनी, द्रव्य पूजा कहै तेम ।
हेतु तिण ऊपर कहूं, चतुर सुणो धर पेम ॥५॥
विहार विषै जल सहित इक, नदी देख मुनिराय ।
ते टालण रै कारणै, अवलाई पिण खाय ॥ ६ ॥
इक कोशादिक अन्तरै, सूकी नदी निहाल ।
तेह प्रते मुनि ऊतरै, उदक सहित दे टाल ॥७॥
तिम दश दिननां पुष्प जे, सूका ते अव लोय ।
एकण आडी पुष्प फुन, तत् खण चूंट्या होय ॥८॥
किसा चढावो पुष्प तुम्ह, तुम्ह लेखै इम न्हाल ।
सूका फूल चढावणा, हरिया देणा टाल ॥ ६ ॥
जो चढो तत्कालनां, शुष्क पुष्प न चढाय ।
जद तो पुष्प नदी तणो, मिल्यो न सरिषो न्याय १०
उदक सहित टालै नदी, मुनि अँवलाई खाय ।
तिण कारण दयावा तणुं, ते कामी नाहिं त्हाय ।११।

हरित पुष्प चाढो तुम्हे, शुष्क पुष्प न चढाय ।
इण कारण हणवा तणां, तुम्हे कामी इण न्याय ।१२।
तिण सुं पुष्प नदी तणों, नथी सरिषो न्याय ।
द्रव्य पूजा नीं आंण नहीं, नदी जिन आज्ञा म्हांय १३
जिन आज्ञा देवे जिको, निर्वद्य कारज जान ।
जिन आज्ञा देवे नहीं, ते सावद्य कार्य्य मान ।१४।
सुर सुर्याभ भणीं प्रभु, वन्दन आज्ञा ख्यात ।
नाटक नीं पूछ्यां थकां, आंण न दीधी नांथ ।१५।
मन में भलो न जाणियो, मौन रह्या अवलोय ।
तिण सुं ए नाटक कियो, ते सावद्य कार्य्य होय १६
प्रभुजी जे नाटक तणीं, आज्ञा दीधी नाँय ।
तो किम द्रव्य पूजा तणीं, आज्ञा दे जिनराय ।१७।
मुनि दिक्षा लेतां कीया, सावद्यरा पच्चखान ।
न करे द्रव्य पूजा तिको, सावद्य कार्य्य मान ।१८।
सावद्य कार्य्य प्रते मुनी, करे करावे नाँय ।
अनुमोदे पिण नहिं तिको, निमल विचारो न्याय १६
जेह कार्य्य अनुमोदियां, मुनीं नें लागे पाप ।
तो करण वालो तो धुर करण, तिण में धर्म्म न थाप २०
सावद्य कार्य्य सर्व ही, मुनि त्यागे विष जांण ।
आज्ञा तेहनी किम दिये, वारूं करो विनाण ।२१।

द्रव्य पूजा सावद्य छै, कै निर्वद्य कहिवाय ।
सावद्य छै तो तेह मैं, धर्म्म पुराय किम थाय ॥२२॥
जो पूजा निर्वद्य छै, तो मुनि न करै कांय ।
वलि सामायिक पोषह मझै, तुम्हे करो क्यूं नाँय ।२३।
सामायिक पोषा मझै, पचक्ख्या सावद्य जोग ।
निर्वध तो त्याग्या नहीं, देखो दे उपयोग ॥२४॥
द्रव्य पूजा आज्ञा मझै, कै जिन आज्ञा बार ।
जो आज्ञा बारे कहो, तो धर्म्म पुराय मत धार ।२५।
जो ए छै आज्ञा मझै, तो मुनि न करै कांहि ।
सामायिक पोषा मझै, तुम्हे करो क्युं नांहि ।२६।
द्रव्य पूजा छै विरत मैं, कै अविरत रै मांहि ।
जो अविरत मांहीं कहो, तो धर्म्म पुराय किम थाहि२७
द्रव्य पूजा छै विरत मैं, तो मुनि क्युं न करेह ।
सामायिक पोषा मझै, क्यों न करो तुम्ह तेह ।२८।
जो पूरी समझ पड़े नहीं, तो राखो प्रभू प्रतीत ।
जिन आज्ञा बाहर धर्म्म कही, न करणी यह अनीत२९

॥ अथ इक्कीस मूं दानाधिकार ॥

असंयती नैं जाण नैं, वा श्रावक नैं कोय ।
दान दीयां स्युं फल हुअे, तसु उत्तर अवलोय ॥१॥

अष्टम शतके भगवती, छट्ठे उद्देशे जोय ।
गौतम पूछ्यो वीर प्रति, हे प्रभु श्रावक कोय ॥२॥
तथा रूप जे असंजाति, तसुं सचित्त अचित अशणादि
अणेषणी फुन एषणीक, प्रतिलाभ्ये स्युं संवाद ।३।
तेहनैं स्युं फल सम्पजे, तब भाषे जिन राय ।
एकान्त पाप हुवे तसुं, निरजरा किञ्चित नाँय ॥४॥
एकान्त पाप कह्यो प्रभू, प्रगट पाठ मैं जोय ।
तो ते दान दीयां छतां, धर्म्म पुराय किम होय ।५।
वलि सातमां अङ्ग मैं, प्रथम अध्येन मझार ।
वीर भणी आणंद कह्यो, अन्य तीर्थी प्रति धार ।६।
अन्य तीर्थकनां देव प्रति, फुन जिन नां मुनिराय ।
अन्य तीर्थक मैं जई मिल्या, तिणे संग्रह्या त्हाय ।७।
ए त्रिहुं प्रति वंदू नहीं, वलि न करूं नमस्कार ।
पहली बोलाऊं नहीं, एक बार बहु बार ॥ ८ ॥
अशणादिक नांहिं द्युं तसुं, वलि देवावूं नांहिं ।
एहवुं अभिग्रह आदर्यो, देखो आगम मांहिं ।९।
छ छराडी आगार ते, राख्यो सावज्झ जांण ।
सामायिक पोषह मझै, तेहनां पिण पच्चखांण ।१०।
दीधां अन्य तीर्थक भणी, धर्म्म पुराय जो होय ।
तो आणन्द किम तज्यो, हिये विमासी जोय ।११।

उत्तराज्झयणे चौद में, गाथा बारमीं मांय ।
भृगु प्रते पुत्रां कह्यो, सांभल जो चित ल्याय ।१२।
वेद भण्यां सुत जान्मियां, त्राण शरण नहिं होय ।
दीधां जीमायां तम तमां, जावै इम कह्यो सोय ।१३।
वृत्तिकार इह विध कह्यो, नरक रौरवा देय ।
तो तेह नैं पोष्यां छतां, किण विध धर्म कहेह ॥१४॥
कोई कहै ए गृही हुंता, तसु उत्तर अवलोय ।
तेउनीं धुर गाथा विषै, तुर्य पदे कह्यु सोय ॥१५॥
कुमर आलोची नैं वदै, इम कह्यो गणधर देव ।
तं माटै तसुं सत्य वच, पिण नहिं कूड़ कहेव ।१६।
वेद भण्या सुत जान्मियां, त्राण शरण नहिं होय ।
ए पिण भृगुप्रते कह्यु, वेहुं पुत्रां अवलोय ॥१७॥
ए वच सांचा तेहनां, तुम्हे जाणो मन माहिं ।
तो दीधां जीमायां तम तमा, ए पिण सांची वाहि १८
द्वितीय सुगडांगे सखर, छट्ठाध्येनरे माहिं ।
निज श्रद्धा विप्रे कही, आद्र मुनि नैं ताहि ।१९।
जीमावै द्विज सहस बे, तसु पुण्य खंध बंधाय ।
तेह पुण्य थी सुर हुवै, वेद विषै ए वाय ॥ २० ॥
आद्र मुनि कह्यो सहस बे, दीहा जीमावै जेह ।
तेह नरक में ऊपजे, अति आभिताप विषेह ॥२१॥

प्रगट पाठ में बात ए, आद्र मुनि बच जोय।
तो असंजतीश दान में, धर्म्म पुराय किम होय ।२२।
कोई कहै छद्मस्थ था, आद्र मुनी तिह वार ।
कह्यु तांगा में तेह वच, किम कहिये तसु सार ॥२३॥
तसुं कहिये आदर मुनी, चरचा करी विशाल ।
बौद्ध मती गोशाल सूं, साग मती सुं न्हाल ।२४।
एक हंडिया प्रमुख नैं, उत्तर दिया विचार ।
तेह सत्य जाणो तुम्हे, तो ए पिण सत्य उदार ॥२५॥
जाव अन्य प्रति सत्य छै, ब्राह्मण प्रति अवदात ।
उत्तर असत्य कहो तुम्हे, आ किसा लेखारी बात ।२६।
सूत्र सुयगडा अङ्ग द्वार में, दान प्रशंसै शंत ।
वध बंछै षट काय नों, इम भाष्यो भगवन्त ।२७।
तृतीय करण प्रशंसियां, हिन्सक कहिये ताहि ।
तो दान देवे ते धुर करण, ते हिन्सक किम नाहिं २८
करे प्रशंसा कुशीलरी, तासु कर्म्म बंध होय ।
तो सेवे ते तो धुर करण, स्युं कहिये तसुं सोय ।२९।
तिम सावद्य दान प्रशंसियां, कर्म्म तणों बंध थाय ।
तो दान दिये ते धुर करण, तसु अघ बंध अधिकाय ३०
दान निषेध्यां वृत्ती नों, छेद करे इम ख्यांत ।
कह्यो अर्थ में काल ए, वर्त्तमान में थात ॥ ३१ ॥

मिलतो अर्थ ए सूत्र थी, देखो न्याय विचार ।
ठाम ठाम सूत्रें कह्यो, सावद्य दान असार ॥ ३२ ॥
असंजती नैं दान दै, पाप एकन्त आख्यात ।
सूत्र भगवती नैं विषै, देखो तज पख पात ॥ ३३ ॥
ते माटै वर्त्तमान ज, काल विषै जे मून ।
मून कहै विहुं काल मैं, श्रद्धा तास जबून ॥३४॥
द्वितीय सुगडा अङ्ग विषै, पंचम् ज्झयणे पेख ।
देतो लेतो एहवो, वर्त्तमान मैं देख ॥ ३५ ॥
पुण्य पाप नहिं कहै तिहां, एहवुं वच अवलोय ।
ते माटै वर्त्तमान हीज, कालै मून सु जोय ॥ ३६ ॥
कह्यो उपाशक अङ्ग मैं, सुत सकडाल उदार ।
गोशालक नैं आपीया, फलग सेज्झा संथार ॥३७॥
कह्यो प्रभुना गुण करया, तिणस्युं आपूं सोय ।
पिण निश्चय नाहिं धर्म्म तप, इम कह दीधा जोय ३८
दीधां गोशालक भणी, नाहि धर्म्म तप सद्य ।
तिमज अनेरा नैं दीधां, केम हुवै पुण्य बंध ॥३९॥
दुःख विपाक मांहीं कह्यो, मृगा लोढो देख ।
गौतम पूछ्यो वीर प्रति, पूर्व भवे इण पेख ॥ ४० ॥
स्यूं दीधो स्यूं भोगव्यो, इम पूछयो गणिराय ।
तिण सुं दान कुपात्र नां, फल अति कडुक कहाय ४१

प्रदेशी केशी भणी, बोल्यो एह वी वाय ।
च्यार भाग ए राजरा, हूं करस्युं मुनिराय ॥ ४२ ॥
एक भाग राख्यां निमित्त, दूजो भाग खजान ।
तीजो हय गय अर्थ ही, चोथो देवा दान ॥४३॥
च्यारू सावज्झ जाण नैं, मौन रह्या मुनिराय ।
तीन भाग जिम तुर्य पिण, जाणी सावद्य ताय ।४४।
पिण न कह्यो त्रण भाग तो, हेतु अघनीं राश ।
तुर्य भाग तो पुण्य बंध, इम न कह्यो गुण तास ।४५।
च्यारूं भाग बोलाय नैं, प्रदेशी राजान ।
निज लफरो मेटी थयो, धर्म्म करण सावधान ।४६।
तुर्य भाग दान सालके, नित प्रते धान रंधाय ।
वणी मग रांक जिमायिवै, तिहां जीव हिन्सा अधिकाय
सप्त सहस्र जे ग्राम नाँ, च्यार भाग तसुं कीध ।
दान सालकै थापीयो, चौथो भाग प्रसिद्ध ॥४८॥
दान सालकै ग्राम था, साढ सतरै सौ जेह ।
तसुं हासल धान रंधाय नैं, दान शाला मँडेह ।४९।
नित्य हजारां मण तदा, धान राँधता जाण ।
हुवै हजाराँ मण तिहाँ, अग्नि पाँणी घमसाण ॥५०॥
उदक विषै फूँदारादि फुन, वालि वनस्पती जल माँय ।
लूण मणाँ बंध लाग तो, अनेक मूवा तशकाय ।५१।

वायु जीव विराधना, ते पिण तिहाँ विशेख ।
मोटो आरंभ ए सही, दान शाला में देख ॥५२॥
दिन दिन प्रति षटकाय हण, अनन्त जीवां री घात ।
न गीणे पाप हिन्सा तणो, तसुं घट मांहि मित्थ्यात ५३
असंयती बहु पोषियां, करे षटकाय विणाश ।
धर्म्म पुराय किम तेह में, जोवो हिये विमास ॥५४॥
धर्म्म हेतु प्राते जीव नें, हणयां दोष न कोय ।
कह्युं अनार्य्य वचन ए, आचाराङ्ग जोय ॥ ५५ ॥
कह्यो धर्म्म रे कारणें, जीव न हणवूं कोय ।
ए आर्य्य नों वचन है, धुर अङ्ग अवलोय ॥५६॥
तिण सूं प्रदेशी तणी, दान शाला पहिछाण ।
श्री जिन आज्ञा बार हैं, समझो चतुर सुजाण ।५७।
ज्ञाता अध्येनें तेर में, जे नन्दन मणिहार ।
नन्दा पुष्करणी तणो, आख्यो बहु विस्तार ।५८।
चिहुं दिश च्यारूं बाग फुन, चिहुं बाग चिहुं शाल ।
पूर्व बाग विषे प्रवर, चित्र शभा सुविशाल ॥५९॥
विविध रूप चित्र्या तिहां, नयना नें सुखदाय ।
नाटक नां धुंकार बहु, जन मन हुलसत थाय ।६०।
दान शाला दक्षण बनें, दिये दान दगचाल ।
जीमायें बणी मग रांक बहु, भोजन विवध रसाल ६१

तीगच्छ शाला पश्चिम बनें, राख्या वैद्य सुताम ।
औषध करी रोगी भणी, करे अधिक आराम ।६२।
शुभ अलङ्कार उत्तर बनें, नाई प्रमुख बैशाय ।
रोगी प्रमुख भणी तिहां, खिजमत स्नान कराय ।६३।
इम वहु असंयती भणी, सुख साता उपजाय ।
उपना छेहडे सोल गद, नन्दनरे तनु माँय ।६४।
काल करी मींडक हुओ, निज पुष्करणी माँय ।
सावज्झ कार्य्य नां कटुक फल, निमल विचारो न्याय
ज्ञाताज्भेणां आठ में, देखो चतुर सुमर्म्म ।
चोखी शन्याशण कह्युं, दान धर्म शुचि धर्म्म ।६६।
दान धर्म शुचि धर्म्म कर, निर विघ्न स्वर्गे जाय ।
मल्लि भणी चोखी कही, ए निज श्रद्धा ताय ।।६७।।
तब मल्लि कह्यो चोखी भणी, रुधिरे खरड्यो जेह ।
वस्त्र लोही सूं धोवीयां, शुद्ध हुअे किम तेह ।६८।
तिम अष्टादश पाप प्रति, सेवै जे कोई जंत ।
तेह निर्मल किण विध हुअे, दीधो एह दृष्टान्त ।६६।
रुधिरे खरड्यो वस्त्र जे, जलादि करि शुद्ध होय ।
तिम हिन्सादिक अघतज्यां, जीव निमल हुवे सोय ।
सचित अचित सहु नें दीयां, पुराय कहै छै जेह ।
केहायत चोखी तणां, न्याय विचारी लेह ।।७१।।

दश मैं ठायौं देखल्यो, प्रभु कह्या दश दान ।
संक्षेपे कहिये तिके, सुणजो चतुर सुजाण ॥७२॥
सचित अचित जल अन लवण, अग्नि जमीं कंद जान
अनुकम्पा आणी देवै, ते अनुकम्पा दान ॥७३॥
द्वितीय दान संग्रह कह्यो, पोषे वन्दी वान ।
तथा छुडावे दाम दे, चोर प्रमुख नैं जान ॥७४॥
ग्रह करडा जाणी करी, थावरिया नैं जांन ।
देवै भय आणी करी, ते तीजो भय दान ॥७५॥
खर्च करै मृत केड वा, जीवत बारियो जान ।
आध छमासी प्रमुख ते, तुर्य कालूणी दान ॥७६॥
बहु नीं लज्भाइं करी, सचित अचित धन धान ।
दिये असंजती नैं जिको, पंचम् लज्भा दान ।७७।
मुकलावो पैरावणी, जस अहंकारे जांन ।
दिये रावलिया प्रमुख नैं, छट्टो गार्व दान ॥७८॥
कुशील नों अर्थी जिको, गणिका दिक नैं जांन ।
दियै द्रव्य तेह नैं कह्युं, सप्तम् अधर्म दान ॥७९॥
धर्म दान वर आठ मुं, तीन भेद है तास ।
सूत्र सुपात्र दान फुन, अभय दान गुण राश ।८०।
आगम अर्थ बताय नैं, तसुं मिथ्यात्व मिटाय ।
शुद्ध समकित पमावियै, सूत्र दान कहिवाय ।८१।

वर महाव्रत धारी मुनि; दियै सुज तो :तास ।
दान सुपात्र तसुं कह्यो, द्वितीय भेद सुविमास ।८२।
भय नहिं दे जंत्तू भर्गों, दुग्गवारा पञ्चखाग ।
ते अभय ए भेद त्रण; धर्म्म दानरा जांग ॥८३॥
सचिंतादिक जे द्रव्य बहु, दिये उधारा जेम ।
स्थान पाछो लेवा तणौ, नवम् काएन्ती एम ।८४।
लेगायत नें जिम दिये, ह्रांती नैंता देय ।
दियां पछै पाछो लिये, दशम् कयन्ती रहेय ॥८५॥
धुर वोहरा जिम उभय ए, दियां प्रथम दे तेह ।
ते नवमुं फुन दशम् जे, दियां पाछो दे जेह ॥८६॥
धर्म दान अष्टम् तिको, श्री जिन आज्ञा मांहि ।
शेष दान नव छै जिका जिन आज्ञा में नांहि ८७
असंजती नें दान दे, तसुं कह्यो अघ एकन्त ।
नव ही दान तेह नैं विषै, देखोजी बुद्धिवन्त ।८८।
ए दश दान कह्या तिके, गुण निप्पन्न तसुं नांम ।
पिण जिन आज्ञा वाहिरो, ते सावध अघधाम ।८९।
वेश्यानैं देवै तिको, प्रत्यक्ष अधर्म पेख ।
दीशै लोक विषे तसुं, अधर्म नांम संपेख ॥ ९० ॥
धर्म दान विन शेष अठ ते पिण अधर्म जान ।
गुण निप्पन्न ए नाम तसुं, भाष्या श्रीभगवान ।९१।

श्री जिनवर जे दानरी, आज्ञा नहीं दे कोय ।
धर्म पुराय नाहिं तेह में, हिये विमासी जोय ॥६२॥
दशमैं ठाणौं धर्म दश, पाषंड धर्म आख्यात ।
पिण ते नाहिं आज्ञा विषै, तिमहिज दान अवदात ६३
सूत्र चारित्र जे धर्म बे, श्री जिन आज्ञा मांहि ।
तिमहिज जिन आज्ञा विषे, धर्म्म दान कहि वाय ६४
जिन आज्ञा जे धर्म्म नीं, ते निर्वद्य पहिछाण ।
आज्ञा नाहिं जिण धर्म्म री, ते तो सावज्ज जांण।६५।
जिम आज्ञा जे दान नीं, ते निर्वद्य अवलोय ।
आज्ञा नाहिं जे दानरी, ते सावद्य छै सोय ॥ ६६ ॥
दशमैं ठाणौं स्थिवर दश, भाष्या श्री भगवान ।
सावद्य निर्वद्य-ओलखो, जिन आज्ञा कारिजान ।६७।
तिम हिज जिन आज्ञा करी, सावज्ज निर्वद्य दान ।
ओलख नैं निर्णय करे, ते कहिये बुद्धिवान ॥६८॥
नवमैं ठाणौं पुराय बंध, नव विध समुच्चे ख्यात ।
अन्न पुराय फुन पांण पुराय, लेण पुराय विख्यात ६६
सयण पुराय फुन वस्त्र पुराय, मन पुराय वच पुराय काय।
नमस्कार पुराये नवम, समुच्चे ही कहिवाय॥ १०० ॥
कोई कहै अन्न पुराय इम, समुच्चय आख्यो साम ।
ते माटे सहुनैं दीयां, पुराय बंध छै तांम ॥ १०१ ॥

इम कहै तेहनैं पूछिये, अन्न पुराय आख्यो सोय ।
के कोरो दीधां पुराय हुअै, के काचो दीधां होय १०२
कै अन्न पुराय रांध्यो दियां, सचित दियां पुराय थाय।
तथा अचित्त दीधां थकां, पुराय बंध कहिवाय ।१०३।
दियां सूझतो पुराय है, वा असूझतो दियेह ।
पात्र प्रति दीधां पुराय है, तथा कुपात्र विषेह ।१०४।
मुनि प्रति दीधां पुराय है, तथा अ साधू प्रतेह ।
चोर कसाई नैं दियां, वलि गणिका प्रतेज देह १०५
समुच्चय आख्यो अन्न पुराय, ते माटे अवलोय ।
सहु नैं दीधां पुराय नौं, तुम्क लेखे बंध होय ।।१०६।।
इम तसकर गणिकादि जे, सहु नैं दीधां पुराय ।
तिण सुं सघला पात्र है, नहिं कुपात्र जघुन्य ।१०७।
पांण पुराय समुच्चय कह्यो, ते अचित्त पायां पुराय होय।
के सचित्त उदक पायां थकां, पुराय बंध तसुं जोय१०८
जो सचित्त पायां थी पुराय हुवै, तो छाणयो पावेह।
अथवा अछाणया उदक प्रति, पायां पुराय कहेह १०९
वलि सूझता उदक प्रति, पायां तसुं पुराय होय ।
अथवा उदक असूझतो, पायां पुराय अवलोय ।११०।
पात्रें दीधां पुराय हैं, तथा कुपात्र विषेह ।
मुनि प्रति दीधां पुराय है, तथा असाधु प्रतेह ।१११।

चोर कसाई नैं दियां, वाले गणिका प्रति जोय ।
तुम्ह लेखे सहुनैं दियां, पुण्य बंध अवलोय ।।११२।
लयण पुण्य समुच्चय कह्यो, ते जागां नवी कराय ।
छकाय हणी दे तासु पुण्य, के सीधी दीधां थाय ११३
पात्र नैं दीधां पुण्य है, तथा कुपात्र विषेह ।
मुनि प्रतै दीधां पुण्य है, तथा असाधु प्रतेह ।।११४।
गणिका चोर कसाई प्रते, दीधां पुण्य बंधाय ।
समुच्चय लयण पुण्ये कह्यो, उत्तर देवो त्हाय ।।११५।
सयण पुण्य समुच्चय कह्यो, रूंख कटाय कटाय ।
पाट बाजोट कराय नैं, दीधां पुण्य बंधाय ।११६।
के सीधा दीधां पुण्य है, पात्र कुपात्र भणीज ।
साधु असाधु नैं दियां, ते किणमैं पुण्य कहीज ११७
गणिका चोर कसाई प्रते, दीधां पुण्य अवलोय ।
समुच्चय सयण पुण्ये कह्यो, उत्तर देवो सोय ।११८।
वस्त्र पुण्य समुच्चय कह्यो, कपड़ा नवा वणाय ।
धोवाय दीधां पुण्य है, के सीधा दीधां त्हाय ।।११९।।
पात्रेज दीधां पुण्य है, तथा कुपात्र विषेह ।
साधु असाधु नैं दियां, किण मैं पुण्य कहेह ।१२०।
गणिका चोर कसाई प्रते, दीधां पुण्य बंधाय ।
समुच्चय वत्थ पुण्य कह्यो, उत्तर देवो न्याय।१२१।

मन पुराये समुच्चय कह्यो, सावज्भ अशुद्ध जवून्य ।
मन प्रवर्त्तायां पुराय छै, कै निर्वंद्य मन थी पुण्य ।१२२।
पंच आश्रव सेवरा तराां, मनथी पुण्य वंधाय ।
पंच आश्रव छोडगा तणां, मनथी पुण्य वंधथाय १२३
समुच्चय मन पुण्ये कह्यो, सावद्य मन प्रवर्त्ताय ।
ते थी पुण्य वंधै कै नाहिं, उत्तर देवो ताय !! १२४ ॥
वच पुण्ये समुच्चय कह्यो, सावज्भ अशुद्ध जबुन्य ।
वच वोल्यां थी पुण्य छै, कै निर्वद्य वचथी पुण्य १२५।
समुच्चय वच पुण्ये कह्यो, मुख से वोलै गाल ।
एक गुणौं नवकार शुद्ध, किण थी पुण्य वंध न्हाल १२६
काय पुण्ये समुच्चय कह्यो, सावज्भ तन प्रवर्त्ताय ।
तेह थकी पुण्य वंध हुवै, कै निर्वद्य तनु थी थाय १२७
शीत तप्त तनु थी खमैं, ते थी पुण्य वंधाय ।
गेहुं पीसै छेदै हरी, तेथी पुण्य वंध थाय ॥१२८॥
हिन्सा भूट अदत्त फुन, चौथो आश्रव ताहि ।
समुच्चय काय पुण्ये कह्यो, इण थी पुण्य कै नाहिं १२९
नमस्कार समुच्चय कह्यो, सिद्ध साधु प्रति जाय ।
नमस्कार कियां पुण्य छै, कै अन्यमते कीधां होय १३०
कुत्ताभाई रांम राम, कागा भाई रांम ।
इम च, चंडाल भणी नम्यां, पुन्य छै कै नाहिं तांम ।१३१।

विनय करै सघला तर्णौं, विनय वादी अवलोय ।
तसुं पाषण्डी प्रभु कह्यो, सूत्रैं ए वच जोय ।१३२।
जो नमस्कार सहु नैं कियां, पुण्य कहै मति मंद ।
ते केडायत जाणवा विनय वादीरा अंध ।।१३३।।
अन्न पुण्य समुच्चय कह्यो, ते माटे अवलोय ।
सहु नैं अन्न दीधां थकां, पुण्य कहै जे कोय ।१३४।
तसुं लेखे समुच्चय कह्या, मन पुण्य वच पुण्य काय ।
ए पिण अशुद्ध तीनौं थकी, पुण्य तणो बंध थाय १३५
जो सावद्य मन वच कायथी, पुण्य बंध नहिं थाय ।
अन्न पिण दियां कुपात्र नैं, पुण्य बंधै किण न्याय १३६
नमस्कार पुण्ये अपि, समुच्चय कहिये पेख ।
सहुनैं नमण कियां थकां, पुण्य बंध तसुं लेख ।१३७।
गणिका चोर कसाई प्रति, कर जोडी नमस्कार ।
कीधां पिण पुण्य बंध हुवे, जसु लेखै अवधार ।१३८।
सर्व भणी जो अन्न दियां, वलि सहुनैं नमस्कार ।
कीधां पुण्य तो देखलो, सप्तम् अङ्ग मझार ।।१३९।।
अन्य तीर्थी नैं नहिं करूं, वंदना ने नमस्कार ।
अशणादिक पिण द्युं नहीं, आणंद कह्युं उदार ।१४०।
मुनि विन अन्य प्रति अन्न दियां, वलि कियां नमस्कार।
पुण्य हुवे तो किम लियो, आनन्द अभिग्रह सार१४१

जसुं अन्न दीधां पुण्य हुअै, तेहनैं पिण शिरनांम ।
नमस्कार कीधां छतां, पुण्य हुवे छै तांम ॥१४२॥
ते नवही निर्वद्य छै, साधू नैं नमस्कार ।
कीधां पुण्य छै तो तसुं, अन्न दीधां पुण्य सार ।१४३।
जल पिण निरदोषण तसुं, दीधां पुण्य सु देख ।
जागां पिण तसुं सूझती, आप्यां पुण्य सु पेख ।१४४।
सयण पाट प्रमुख तसूं, दीधां पुण्य सु जोय ।
वस्थ पिण निरदोषण तसुं, दीधां थी पुण्य होय ।१४५।
मन वच काया पिण वलि, निरवद्य थी पुण्य वंध ।
नमस्कार पद पंच प्राति, कीधां पुण्य सु संध ॥१४६॥
निरवद्यैर लेखै नवूं, बोल शरीषा शुद्ध ।
नवूं शरीषा नवि कहै, श्रद्धा तास विरुद्ध ॥१४७॥
साधू नैं कल्पै जिके, तेहिज द्रव्य आख्यात ।
द्रव्य अनेरा नवि कह्या, देखो तज पख पात ॥१४८॥
अन्न साधुरे जोईये, जल पिण मुनि रै तहाय ।
चाहिजे तिण कारणै, पाँण पुण्य कहिवाय ॥१४९॥
जागां पाट बाजोटादि नौं, पडै साधुरै कांम ।
कपडो पिण साधू तणै, अवश्य चाहिजे तांम ।१५०।
इम कल्पै साधू भणी, आख्या तेहिज बोल ।
देखोजी देखो तुम्हे, आंख हीयारी खोल ॥१५१॥

साधू विन जो अन्य प्रते, दीधां पुण्य जो होय ।
तो गाय पुण्य किमनवि कह्यो, भैंश पुण्य पिण जोय
सुवरण पुण्य रूपो पुण्य, हीरो पुण्य उदार ।
मोती नें माणक पुण्ये, खेती पुण्य विचार ।१५३।
इत्यादिक मुनिवर भणीं, नांहिं कल्पे ते बोल ।
सूत्र विषे ते नावि कह्या, देखोजी दिल खोल ।१५४।
मुनि प्राति नांहिं कल्पे तिको, इक ही बोल कहंत ।
तो तुम्हे कहता अन्य प्रति, दीधैं पिण पुण्य हुन्त१५५
जब को कहै कह्यो अर्थ में, पात्रे अन्न दीधेह ।
तीर्थंकर नामादि जे, पुण्य प्रकृति बंधेह ॥१५६॥
पात्र थकी जो अन्य प्राति, दीयां अनेरी ताहि ।
पुण्य प्रकृति बंधै इसो, कह्यो अर्थ रे मांहिं ।१५७।
तसुं कहिजे ज पात्र नें, दीधैं छतां जु तेह ।
तीर्थंकर नामादि जे, पुण्य प्रकृति बंधेह ॥१५८॥
आदि शब्द में तो जिके, पुण्य प्रकृति सहु आय ।
इक ही बाकी नवि रही, निमल विचारो न्याय।१५९।
ऋषभादिक कहिवें इहां, जिन चउ वीस सु आय।
गौतमादिक गुण वे करी, चउद सहस्र मुनिराय।१६०।
तिम तीर्थंकर नामादि इम, आदि शब्दरै मांहिं ।
पुण्य प्रकृति आवी सहु, बाकी रही न कांय ।१६१।

पात्र थकी जो अन्य प्रति, दीयां अने री आंग ।
पुण्य प्रकृति बंधे तिको, अर्थ विरुद्ध पाहिछाण ।१६२।
आदि शब्द में तो जिके, पुण्य प्रकृति सहु आय ।
वलि अने री पुण्य नीं, प्रकृति किसी कहिवाय ।१६३।
क्रियाहिक ठाणा अङ्ग में, छै ए अर्थ जघून्य ।
सहु ठाणा अङ्ग में नहीं, पाठ विना अर्थ शुन्य ।१६४।
अन्य प्रति दीधां अन्न जे, पुण्य प्रकृति बंधेह ।
वृत्ति विषे ए नावि कह्यो, अभय देव सूरेह ।१६५।
पात्रें अन्न देवा थकी, जे तीर्थंकर नामादि ।
पुण्य प्रकृति नों बंध ते, अन्न पुण्य संवाद ।।१६६।।
वृत्ती विषे इतरोज छै, पिण अन्य प्रति दीधां सोय ।
बंधै अनेरी पुण्य प्रकृति, एहवुं कह्यो न कोय ।१६७।
पाठ विषे पिण ए नहीं, वृत्ति विषे पिण नांहि ।
सूत्र थकी पिण नहिं मिले, ए विरुद्ध अर्थ इणन्याय ।
अन्न पुण्ये को अर्थ शुद्ध, वृत्ती विषे कह्युं सोय ।
पात्रे दीधां पुण्य कह्युं, प्रत्यक्ष ही अवलोय ।१६६।
वृत्तिमानैं तसुं लेख पिण, पुण्य पात्रें ज दीयेह ।
अर्थ न मानैं एह तिण, वृत्ति न मानी तेह ।१७०।
सूत्र भगवती सुगडाङ्ग, उत्तराध्ययन उजास ।
असंजती प्रति दान दे, कह्या अशुभ फल तास ।१७१।

इम जाणी उत्तमा नरां, राखो सूत्र प्रतीत ।
श्रीजिन आंण उथाप नैं, मती को करो अनीत १७२
ठाणा अङ्ग ठाणों तुर्य वर, तुर्य उद्देशा मांथ ।
च्यार मेह प्रभू आखिया, सांभल ज्यो चित्त ल्याय १७३
इक वर्षे जे खेत्र में, अखेत वर्षे नांहिं ।
अखेत वर्षे एक पिण, खेत्र न वर्षे ताहिं ॥१७४॥
इक खेत्रे पिण वर्ष तो, अखेत्रे पिण वर्षाय ।
इक खेत्रे नाहिं वर्ष तो, अखेत वर्षे नांहिं ॥ १७५ ॥
इण दृष्टान्ते पुरुष नीं, च्यार जाति कहिवाय ।
देवे पात्र विषे जु इक, दियै कुपात्रे नाहिं ।१७६।
इह विध कह्या कुपात्र नैं, कु खेत्र सु वर न्याय ।
बायो जिहां ऊगे नहीं, ते कु खेत्र कहिवाय ॥१७७॥
ते माटे जु कुपात्र नैं, दीधां शुभ अंकूर ।
ऊगे नांहिं तिण कारणे, कह्या कु खेत्रे भूर ॥१७८॥

॥ इति ॥

॥ अथ बावीसमूं श्रावक नैं दीयां स्यूं थाय ते अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे श्रावक भणी, अशणादिक आपेह ।
तेहनैं स्यूं फल संपजे, हिव तसु उत्तर लेह ॥ १ ॥

द्वितीय सुगडाअङ्गे कह्यो, द्वितीय अध्येन विषेह ।
अथवा प्रथम उपङ्ग में, प्रश्न वीस मैं लेह ॥ २ ॥
खाणो नैं फुन पीवणो, श्रावक तणो सु जोय ।
अव्रत मांहे आखियो, वलि गहणो अव्रलोय ॥ ३ ॥
त्याग त्याग सहु व्रत है, राख्यो जे आगार ।
तेहनै अव्रत आखियै, वारूं न्याय विचार ॥ ४ ॥
दूजो आश्रव दाखियो, अव्रत नैं जिनराय ।
ठाणांगठाणें पांच मैं, वलि समवायाङ्ग मांहि ॥ ५ ॥
भावं शस्त्र अव्रत भणी, भाष्यो श्री जग भांण ।
शङ्का हुवे तो देखल्यो, ठाणाङ्ग दश मैं ठाण ॥ ६ ॥
तिण सूं हिये विचारियै, श्रावक नैं अवलोय ।
अव्रत सेवायां छतां, धर्म पुराय किमहोय ॥ ७ ॥
श्रावक ते विरतें करी, देव वैमानीक थाय ।
कह्यूं भगवती प्रथम शत, अष्टमोद्देशक मांहि ॥८॥
ग्रहस्थ नैं देवो तज्यो, स्यूं जाणी मुनिराय ।
ते संसार भ्रमण तणो, हेतु जाणी त्हाय ॥ ९ ॥
सुयगडांग नवमें कह्यो, गाहा तेवीसम् ताहि ।
तिण सूं श्रावक आवियो, प्रत्यत्त ग्रहस्थ मांहि ।१०।
पनरमोद्देश निशीथ मैं, मुनि अन्य तीर्थी प्रतेह ।
अथवा ग्रहस्थ प्रते वली, अशणादिक आपेह ।११।

वस्त्र पात्र फुन कम्बली, रजोहरण सुविचार ।
ए आठ बोल देवै तसुं, दंड चौमासी धार ॥१२॥
देतां प्रति अनुमोदियां, दंड चौमासी आय ।
ते माटै ग्रहस्थ विषै, श्रावक पिण इहां आय ॥१३॥
तसुं मुनि पोतै दै नहीं, वलि जसुं देवै कोय ।
अनुमोदै नहिं तेह नैं, ऋषि आचार सु जोय ॥१४॥
तृतीय करण अनुमोदियां, दंड चौमासी आय ।
तो प्रथम करण देवै तसुं, धर्म पुण्य किम थाय ॥१५॥
पडिमाधारी पिण इहां, आयो ग्रहस्थ विषेह ।
तसुं अशणादिक नहिं दियै, महा मुनी गुण गेह ॥१६॥
ते पडिमाधारी प्रते, ग्रहस्थ दियै को आहार ।
तो मुनि अनुमोदै नहीं, देखो न्याय विचार ॥१७॥
देता प्रति अनुमोदियां, मुनिवर नैं दंड आय ।
तो देणवाला नैं धर्म किम, तसुं खाणो अव्रत मांहि ॥१८॥
गौतम प्रति संथार मैं, आनन्द आख्यो एम ।
हे भदन्त हूं गृहस्थ छुं, गृहि मज्झ वसूं ज तेम ॥१९॥
ते गृही मज्झ वसता भणी, इतरो अवधि उप्पन्न ।
पूर्व दिशि लवणो दधी, जोयण पंच सय जन्न ॥२०॥
देखूं ते हूं क्षेत्र प्रति, दक्षिण पश्चिम एम ।
वलि उत्तर दिशि नैं विषै, चूल हेमवंत तेम ॥२१॥

ऊंचो सौधर्म कल्प लग, अधो नरक धुर तास ।
सहस्र चौराशी वर्ष स्थिति, लोलुच नरका वास ।२२।
गौतम बोल्या एवडो, मोटो अवधि उदार ।
ग्रहस्थ भणी नहीं ऊपजै, हे आनन्द विचार ।२३।
ते माटै तूं एहनी, लै आलोवण सार ।
जाव प्रायश्चित एहनो, पाडि वर्जीये धरण्यार ॥२४॥
तब आनन्द पूछ्यो भदंत, जे वर सत्य वदेह ।
आवे छै दंड तेह नै, श्री जिन वयण विषेह ॥२५॥
गौतम कहे नाहिं दंड तसुं, वलि आनन्द कहे वाय ।
सत्य प्रवर वच कहे तसूं, प्रायश्चित जो नाँय ।२६।
तो तुम्ह हीज आलोवणा, जाव प्रायश्चित लेह ।
इत्यादिक इधकार छै, देखोजी चित्त देह ॥ २७ ॥
इम सप्तम अङ्ग कह्यो, अण शणमैं सुविशेख ।
आनन्द आख्युं ग्रहस्थ हूं, तो पडिमानो स्यूं पेख २८
व्यावच ग्रहस्थ तणी कही, दशवै कालिक मांहि ।
अणाचार अट्ठवीसमो, तृतीय अध्येनें ताहि ॥२६॥
गृही व्यावच मुनि नहीं करै, नथी करावै जाण ।
करतां अनुमोदे नहीं, त्रिविध २ पच्चखाण ॥ ३० ॥
ग्रहस्थ प्रति पूछे मुनि, सुख साता छै तोय ।
अणाचार ते सोलमों, दशवै कालिक जोय ॥३१॥

सुख पूछयां वंछी तिणे, साता तसुं अणाचार ।
तो गृही नें साता कियां, किम हुवे धर्म उदार ॥३२॥
दशाश्रुत स्कंधे इग्यारमी, पडिमा में संपेख ।
पेज्ज बंधण तूटो नहीं, ज्ञात तणों सुविशेख ॥३३॥
ते माटै कल्पै तसूं, ज्ञात तणों जे आहार ।
इम पेज्ज बंधण खाते कही, भिक्षाचरी तसुं धार ।३४।
पेज्ज बंधण नां अशुभ फल, ते माटै अवलोय ।
तसुं खाते भिक्षाचरी, ते पिण सावज्ज जोय ।३५।
भगवती अष्टम् शत विषे, पंचमुद्देशक जान ।
गौतम पूछ्यो गृही करी, सामायक मुनिस्थान ।३६।
तसुं भंड तस्कर अपहर्यां, सामायक चीतार ।
भंडनी करे गवेषणा, श्रावक तेह तिवार ॥ ३७ ॥
हेप्रभु ते निज भंड तणी, करे गवेषणा सोय ।
के पर भंडनी ते करे, गवेषणा अवलोय ॥ ३८ ॥
प्रभु कहे करे गवेषणा, निज भंड तणीज तेह ।
पिण जे परना धन तणी, गवेषणा न करेह ।३९।
वलि-गौतम पूछ्यो प्रभु, सामायिकरे मांहि ।
ते भंड नें वोसिरावीयां, भंड अभंड कहाहि ।४०।
जिन कहे हंता गोयमा, भंड अभंड कहाय ।
वलि गौतम पूछ्यो प्रभु, तसुं भंड कहो किण न्याय ४१

प्रभु कहै सामायक विषे, ते इसी भावना भाय ।
हिरण्य नही ए माहरो, वलि मुझ सुवर्ण नाहिं ।४२।
कांसी नहीं ए माहरी, नहीं वस्त्र मुझ एह ।
नहिं माहरो विस्तीर्ण धन, कनक रत्न मणी जेह ।४३।
मोती नें वलि शंख शिल, प्रवाल मूंग कहाय ।
पद्म रत्न आदिक छतां, सार द्रव्य मुझ नांहि ॥४४॥
एवी चिन्तवना प्रवर, सामायक मैं जान ।
पिण ममत्व भाव जे धन थकी, न कियो तिण पच्चखाण
तिण अर्थे इम आखीयो, निज भंड तणीज जेह ।
गवेषणा पिण परतणा, भंड नी नणी करेह ॥४६॥
प्रगट पाठ में इम कह्यो, ते माटै अवलोय ।
सामायक मैं धन थकी, ममत्व भाव तसुं जोय ।४७।
ममत्व भाव पच्चख्यो नथी, गृही सामायक मांहि ।
तो पडिमा मैं धन तणो, ममत्व तजी किम ताहि ४८
ममत्व तजी नहीं ते भणी, धन तेहनो ज कहाय ।
तिण सुं सामायक मझै, मुनि प्रति द्रव्य वहिराय ४९
द्रव्य अनेरा नों हुवे, ते मुनि प्रति जो देह ।
तो तेहनी आज्ञाथकी, वहिरावै गुन गेह ॥ ५० ॥
पिण ममत्व भाव पच्चख्यो नहीं, तिण सुं तसु द्रव्य जोय
वहिरायां आज्ञा तणों, कारण नांहिं छै कोय ।५१।

तिण ज उद्देशे पूछियो, गृही सामायक मांहि ।
कोई पुरुष सेवै तदा, तसु भार्या प्रति आय ॥५२॥
हे प्रभु ते श्रावक तणी, भार्य्या प्रति सेवेह ।
तथा अभार्या प्रति तदा, सेवै इम पूछेह ॥ ५३ ॥
जिन कहै ते श्रावक तणी, भार्या प्रति सेवंत ।
अभार्या प्रति सेवै नहीं, वलि गौतम पूछंत ।५४।
हे प्रभु सामायक विषै, भार्या अभार्या होय ।
जिन कहै हंता गोयमा, भार्या अभार्या जोय ।५५।
किण अर्थे प्रभु इम कह्युं, भार्या प्रति सेवंत ।
अभार्या प्रति सेवै नहीं, तब भाषै भगवंत ॥५६॥
जिन कहै सामायक विषै, इसी भावना भाय ।
माता नांहिं छै माहरी, पिता न म्हारो ताहि ।५७।
भ्राता ते म्हारो नहीं, भगिनी माहरी नांहि ।
भार्या माहरी को नहीं, सुत म्हारो नहिं ताहि ।५८।
नहिं छै म्हारी पुत्रिका, सुतनीं बहू विमास ।
ते पिण माहरी को नहीं, करै इम चिन्तवणा तास ५९
प्रेमरूप बंधन वलि, तसु वोछिन्न न हुन्त ।
तिण अर्थे करि तेहनी, भार्या प्रति सेवन्त ॥६०॥
इह विध प्रभुजी आखियो, सामायक रै मांहि ।
प्रेम बंधन छेद्यो नथी, मात प्रमुख नूं ताहि ।६१।

इम हिज पडिमा नैं विषै, मात प्रमुख नूं सोय ।
प्रेम बंधन तूटो नथी, न्याय विचारी जोय ॥६२॥
इग्यारमी पडिमा मभ्मै, न्यातीला नों धार ।
प्रेम बंधन छूटो नथी, तिणसुं ले तसुं आहार ६३
कह्युं दशाश्रुत स्कंध इम, ते माटे अवलोय ।
पेज्झ बंधन खाते तसुं, आहार लेवूं पिणहोय ॥६४॥
पूछ्यां जिन आज्ञा न दे, लेण वाला नैं जोय ।
देण वाला नैं पिण नहीं, जिन आज्ञा अवलोय ६५
जिन आज्ञा बारै नहीं, धर्म पुण्यरो अंश ।
धर्म कहै आज्ञा विना, तसुं कहिये मति भ्रंश ।६६।
सूत्र भगवती नैं विषै, सप्तम् शतके भेव ।
प्रथम उद्देशा नैं विषै, दाख्यो श्री जिन देव ।६७।
सामायक मांहे कही, श्रावकनी संपेख ।
आत्म ते अधिकरण इम, प्रगट पाठ में लेख ।६८।
शस्त्र जे षट् काय नों, अधिकरण कहिवाय ।
तसुं तीखो कीधां छतां, धर्म पुण्य किम थाय ।६९।
इमहिज पडिमा नैं विषै, श्रावक आतम जांण ।
अधिकरण न्याये करी, वारु करो पिछांण ॥७०॥
सामायक में आत्मा, तसुं अधिकरण आख्यात ।
तो जे सामायक विना, तेह तणी सी बात ।७१।

षट् पोसा इक मास में, अष्ट पोहरिया करेह ।
थया बोहित्तर वर्ष में, संवत्सरि इक लेह ॥ ७२ ॥
एह तीहोत्तर दिन तणों, व्याज तसुं घर आय ।
वालि तोटादि नफा तणौं, ते हिज धणी कहाय ।७३।
घर पुत्रादिक जन्मीयां, हर्ष हिये तसुं आय ।
चित्त उदास हुवे मूंआ, पेज्म बंधन इम थाय ।७४।
तोटो सुण विलखो हुवे, नफो सुणी विकसाय ।
सामायक पोषह मझै, ममत्व भाव इण न्याय ।७५।
इमहिज पडिमारे विषे, हर्ष सोग चित्त आय ।
पेज्म बंधण आख्यो प्रभु, न्यातीला सुं ताय ७६
एक लखपती शेठ जसुं, मात पिता परिवार ।
स्त्री पुत्रादिक को नहीं, एकलडो अवधार ॥७७॥
लाख रूपईया रोकडा, मित्र भणी ज भलाय ।
श्रावक नीं पडिमा वहै, एकादश लग ताहि ।७८।
मित्र तणो व्रत पंचमें, निज पोताना जाण ।
सहस्र दाम उपरन्त छै, राखण रा पच्चखाण ।७९।
पडिमा धारी ना जिके, लाख दाम राखंत ।
तेह तणी अव्रत तणों, अघ किण नैं लागंत ॥८०॥
तथा रुपइया लाख जे, किणरा परिग्रह मांहिं ।
पोते रुखवाली करे, पिण तसुं परिग्रह नांहिं ।८१।

पाडिमा धारीना प्रगट, परिग्रह मांहि पिछाण ।
अविरत नौं लागै तसुं, पाप निरन्तर जाण ॥८२॥
ममत्व भाव पच्चख्यो नथी, पाडिमा मैं इण न्याय ।
सामायक जिम तेहनुं, तनु अधिकरण कहाय ।८३।
तथा लखपती शेठ इक, पुत्रादिक नहिं कोय ।
गुमास्ता बहु तेह नैं, विणज करै अवलोय ॥८४॥
दुकान बाणोत्तर भणी, शेठ भलावी सोय ।
श्रावक नी पाडिमा वहै, एकादश लग जोय ।८५।
ब्याज आवै रुपइया तणौं, ते किणरा घर मांहि ।
वलि तोटारु नफा तणौं, कँवण धणी कहिवाय ।८६।
पाडिमाधारी ना प्रगट, घर मैं आवै ब्याज ।
नफा अनै तोटा तणौं, एहिज धणी समाज ।८७।
लाख तणा बे लाख थयां, परिग्रह इणरो हीज ।
सहस्र पचास रह्या छतां, तोटो तास कहीज ।८८।
पाडिमा मैं पिण पंचमुं, देश व्रत गुण ठाण ।
जे जे तसु आगार छै, ते ते अव्रत जाण ॥ ८९ ॥
खाणों पीणों तेहनों, अविरत मांहिं जोय ।
तसुं अव्रत सेवा वियां, धर्म पुण्य किम होय ।९०।
पाडिमा धारी आहार ल्ये, तेह नैं तो कहै पाप ।
तो देवै तसु धर्म किम, देखो थिर चित्त थाप ॥९१॥

जो लेणा वाला नैं पाप छै, पाप लगायो जास ।
धर्म पुराय किण विध हुश्रै, जोवो हिय विमास ।६२।
लेणा वाला नैं जे हुवे, देणा वाला नैं तेह ।
जिन श्राज्ञा नाहिं बिहुं भणी, बिहुं नैं श्रघ बंधेह ६३
जे पडिमा धारी विना, श्रन्य तणो पिण देख ।
खाणों पीणों पहिरणों, श्रविरत में संपेख ।।६४।।
ते माटे मुनि दे न तसुं, दीधां श्रावे दंड ।
श्रनुमोद्यां पिण दंड है, सूत्र निशीथ सुमंड ।६५।
श्रावक जिमावण तणी, जिन श्राज्ञा दे नांहि ।
श्राज्ञा विन नहिं धर्म पुराय, देखोजी दिल मांहिं ६६
समँदृष्टी श्रधे समों, जिन श्राज्ञा में धर्म ।
श्राज्ञा बारैं धर्म नहीं, ए जिन शासन मर्म ।।६७।।
कहि कहि नें कितरो कहुं, धर्म न श्राज्ञा बार ।
श्राज्ञा मांहीं पाप नहीं, श्रध्यां सम्यक्त्व सार ।६८।
इम सांभल उत्तम नरां, राखो जिन सु प्रतीत ।
श्राज्ञा बारै धर्म कहीं, करवी नहीं श्रनीत ।।६९।।

॥ इति ॥

॥ अथ तेवीसमों श्रनुकम्पा श्रधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे श्रसंजती भणी, जेह बचावे जाण ।
स्युं फल तास समुपजे, तसुं उत्तर पहिछाण ।।१।।

जीव छोडावे दाम दे, जिन मुनि नहिं दे आंण।
अनुमोदे पिण नहिं तिके, सावज्भरा पच्चखाण ॥२॥
मुनि दीक्षा लीधी तदा, सर्व सावद्य पच्चखेय।
जीव छोडावे नहिं तिके, निज वस्त्रादिक देय ॥३॥
ग्रहस्थ छोडावे दाम दे, जो मुनि अनुमोदेह।
तृतीय करण भागे तसुं, पाप कर्म बंधेह ॥ ४ ॥
तृतीय करण अनुमोदवे, लागे पाप जबून।
तो दाम दिये ते धुर करण, केम हुवे तसुं पुण्य ॥५॥
सामायक पोषह विषै, सावद्य प्रति पच्चखेह।
जीव छोडावे नहिं तिके, निज वस्त्रादिक देह ॥६॥
खोटो सावद्य जाण के, जे त्यागो मुनिराय।
ग्रहस्थ ते सावद्य क्रियां, धर्म पुण्य किम थाय ॥७॥
अवद्य पाप सहित जे, सावद्य कहिये तास।
अंतर आंख उघाड नैं, वारूं न्याय विमास ॥८॥
निशीथ उद्देशे बार मैं, मुनि अनुकम्पा आंण।
तृणादिके पाशे करी, जो बांधे त्रश प्राण ॥ ९ ॥
अथवा बांधतां प्रतै, जो अनुमोदे ताय।
चौमासी तसुं प्रायश्चित, प्रगट पाठ मैं वाय ॥१०॥
इमहिज बंध्या जीव नैं, छोडे तो दंड पाय।
छोडता प्रति जे वली, अनुमोद्यां दंड आय ॥११॥

ए प्रत्यत्त पाठ विषे कह्यो, अनुकम्पा ए जान ।
सावद्य छै तिण कारणे, दण्ड कह्यो भगवान ।१२।
छोडे तसुं अनुमोदियां, तृतीय करण दण्ड ख्यात ।
तो छोडे ते धुर करण, तास धर्म किम थात ।१३।
असंजतीरो जीवणो, वंछै नाहिं मुनिराय ।
मरणो पिण नाहिं वंछणो, ए राग द्वेष कहिवाय ।१४।
असंजतीरो जीवणो, वंछयां धर्म जु होय ।
तो ए अनुकम्पा तणो, प्रायश्चित किम जोय ।१५।
सावद्य ए अनुकम्प छै, तिण सुं दंड छै तास ।
निर्वद्य नो दंड हुवे नहीं, जोवो हिय विमास ।१६।
अनुकम्पा नें अर्थ ही, कृष्णो ईंट उपाड़ ।
मूंकी वृद्ध तणे घरे, अंतगड़े अधिकार ॥ १७ ॥
राणी धारणी गर्भ नीं, अनुकम्पा नें अर्थ ।
पथ्य अनादिक भोगव्या, ज्ञाता माहि तदर्थ ।१८।
सुलसांनी अनुकम्प करि, देवकी नां सुत आण ।
मूंक्या हरण गवेषी सुर, अंतगड में जांण ॥१९॥
अभय कुमार तणी वली, अनुकम्पा चित्त आंण ।
दोहलो पूरयो मित्र सुर, ज्ञाता में जिन वाणि ।२०।
रत्तन द्वीप देवी तणी, जिन ऋषि करुणा कीध ।
ज्ञाता नवम् अध्येन कह्युं, सावद्य पह प्रसिद्ध ।२१।

इत्यादिक अनुकम्प नीं, जिन आज्ञा दे नाहिं ।
ते माटे सावद्य तिके देखोजी दिल मांहिं ॥ २२ ॥
जीव हणै मुज कारणे, चिन्तव नेम कुमार ।
तोरण थी पाछा फिरया, ए अनुकम्पा सार ॥२३॥
जीव हणान्ता नेम नां, विवाह निमत्त पिछाण ।
ते टाल्यो पाप पोता तणों, जिन आज्ञा तिहां जांण २४
गज भव सुशलो नावि हणयो, कष्ट भोगव्यो आप ।
निर्वद्य ए अनुकम्प छे, गज टाल्यो निज पाप ।२५।
उत्तराज्झयण इक बीस में, चोर देख समुद्र पाल ।
छोडायो आख्युं नथी, चरण लियो सुविशाल २६
दूजो श्रुतस्कंध अङ्ग धुर, तृतीय अध्येन विचार ।
प्रथम उद्देश कह्यो मुनि, बैठो नाव मझार ॥२७॥
छेद्रकरी जल आवतो, देखी ग्रहस्थ प्रतेह ।
बतावणो नाहिं जिन कह्यो, प्रत्यक्ष पाठ विषेह २८
उदक भराती नाव ए, देवूं तुरत बताय ।
एह तुं पिण नवि चिन्तवै, मन माहीं मुनिराय ।२९।
आप अनें बहु अन्य जन, डूबै उदक करेह ।
सम भावे बैठो रहै, राग द्वेष टालेह ॥ ३० ॥
द्वितीय अङ्ग में आखियो, श्रुत खंध द्वितीय विषेह ।
पंचम अज्झयणे प्रगट, तीसमी गाथा जेह ॥३१॥

जीव सिंह व्याघ्रादि फुन, हिन्सक देखी संत ।
यह मारवा जोग छै, इम न कहे गुणवंत ॥ ३२ ॥
अथवा हिन्सक देख नैं, यह हणवा जोग ज नाहिं ।
एहवुं पिण कहिवुं नहीं, निपुण विचारो न्याय ।३३।
वृत्तिकार एहवुं कह्युं, वधवा जोग ज नाहिं ।
इम कहतां तसु कर्म्म नीं, अनुमोदना जु आय ३४
कह्या सिंह वाघादि जे, आदि शब्द रे मांहिं ।
घातक जे षट्कायना, ते सहु आव्या ताहि ।३५।
हणै कसाई अज भणी, तसु तारण अण गार ।
त्याग करावै वध तणां, दे उपदेश उदार ॥ ३६ ॥
पिण बकरा नुं जीवणो, वंछै नाहिं मन मांहिं ।
असंजम जीवत वंछणो, वर्ज्यो छै जिनराय ।३७।
दश मैं अज्झयण द्वितीय अङ्ग, च्यार वीसमी गाह ।
जीवित मरण न वंछणो, असंजम जीवित ताह ।३८।
तेरमे झयणे द्वितीय अङ्ग, तीन वीसमी गाह ।
जीवत मरण न वंछणो, असंजम जीवित ताह ३९
पनरम अज्झयणे द्वितीय अङ्ग, दशमी गाथा मांहि ।
असंजम जीवित प्रतै, मुनि आदर न दिये ताहि ४०
तृतीय अज्झयणे द्वितीय अङ्ग, तुर्य उद्देश विषेह ।
जीवित मरण न वंछणो, असंजम जीवित तेह ।४१।

इत्यादिक बहु स्थानके, असंजम जीवित ताय ।
बाल मरण नाहिं वंछणो, भाख्यो श्री जिनराय ।४२।
आप तणों नाहिं वंछणो, असंजम जीवित सोय ।
तो पर नुं वंछ्यां थकां, धर्म पुण्य किम होय ४३
बाल मरण पिण आपरो, वंछै नाहिं मुनिराय ।
परनुं पिण वंछै नहीं, वंछ्यां धर्म न थाय ॥४४॥
पंडित मरण ज आपरो, वंछै महा मुनिराय ।
परनुं पिण वंछै तिको, विमल विचारो न्याय ४५
कह्यो सातमा अङ्ग में, पोषह विषे पिछाण ।
मात वचावण ऊठियो, चूलणी पिया जाण ।४६।
अमा तसुं इम आखियो, भागो पोसह सोय ।
वलि व्रत भागो कह्यो, भागो नियम सु जोय ४७
मात बचावा ऊठियो, भागो पोसह ताहि ।
तो साधु बचावे तेह नुं, चारित्र भागे किम नांहि ४८
जे कार्य्य कीधें छतें, पोषह चारित्र भागेह ।
ते कार्य्य में धर्म किम, न्याय विचारी लेह ।४९।
द्वितीय सुगडा अङ्ग पवर, छट्ठा अध्येनरे मांहि ।
अठारमी गाथा अमल, आर्द्र मुनी कहीवाय ।५०।
निज कर्म प्रतै खपायवा, वा अन्य तारण ताहि ।
धर्म देशना प्रभु दिये, निमल विचारो न्याय ।५१।

असंजती जे जीव छै, तास बचावा हेत ।
वीर प्रभू उपदेश दे, इमनवि आख्यो तेथ ॥५२॥
द्वितीय आचाराङ्ग ने विषै, द्वितीय अध्येने ताहि ।
प्रथम उद्देशै प्रभु कह्यो, ग्रहस्थलडै माहो मांहि ।५३।
देखी नवि चिन्ते मुनी, मारो एह प्रतेह ।
अथवा इण नैं मतहणो, राग द्वेष वर्जेह ॥ ५४ ॥
द्वितीय आचाराङ्ग ने विषै, द्वितीय अध्येन विषेह ।
प्रथम उद्देशै ग्रहस्थ वे, तेऊ आरंभ करेह ॥ ५५ ॥
देखीमन चिन्ते न मुनि, अग्नि उजालो एह ।
अथवा आग्नि उजाल मति इम पिण नवि चिन्तेह ५६
तथा बुझावो अग्नि ए, अथवा मत बुझाव ।
एहवुं पिण नवि चिन्तवे, राखै मुनि समभाव ५७
नवम उत्तराज्झयणो कह्यं, मिथला बलती देख ।
ताहमूं नवि जोयो नमी, टाल्यो राग विशेख ।५८।
दशवै कालिक सातवें, पचासमी जे गाह ।
माहो मांही सुरभिडे, इम मनु माहो मांहि ॥५६॥
तीर्यञ्च माहो मांहि लडै, एहनी थावो जीत ।
इणरी जय थावो मती, मुनि न कहे ए रीत ।६०।
दशवै कालिक सातवें, इकावनमी गाह ।
वर्षाने फुन वायरो, सीत उष्ण अधिकाह ॥ ६१ ॥

राज विरोध रहित फुन, थावो देश सुगाल ।
उपद्रव रहित हुवो वली, इम न कहे मुनिमाल ६२
ए सातों होवो तथा, ए सातों मत होय ।
ए विध पिण न कहे कदा, अमल न्याय अवलोय ६३
दिशा मुढ जे ग्रहस्थ नैं, मार्ग बतायां दण्ड ।
निशीथ उद्देशे तेरमैं, चौमासीक प्रचंड ॥ ६४ ॥
ठाणा अङ्ग ठाणे तीसरै, तृतीय उद्देशक माँय ।
आत्म रत्तक तीन जे, आख्या श्री जिनराय ६५
हिन्सादिक देखी करी, दीयै धर्म उपदेश ।
अथवा मौन रहे मुनी, समभावे सुविशेष ॥६६॥
अथवा ऊठी त्यां थकी, एकन्त जागां जाय ।
आत्म रत्तक ए कह्या, पिण छोडावणो कह्यो नाँय६७
निशीथ उद्देशे ग्यारमैं, परनैं भय उपजाय ।
डरावता प्रति अनुमोदे, दंड चौमासी आय ॥६८॥
ग्रहस्थ नी रक्षा करे, रत्ता कारि प्रतेह ।
अनुमोद्यां पिण दंड कह्यो, निशीथ तेरमैं लेह ६९
दशवै कालिक तीसरै, ग्रहस्थ तणी मुनिराय ।
साता पूछ्यां सोलमों, अणाचार कह्यो ताय ।७०।
ग्रहस्थ नी व्यावच कियां, आठ बीसमूं न्हाल ।
अणाचार मुनिवर भणी, दाख्यो परम कृपाल ७१

करे करावे जे नथी, करता प्रते अवलोय ।
मुनि अनुमोदे पिण नहीं, तो धर्म कहे किम सोय ७२
अशणादिक ग्रहस्थी भणी, दीयां मुनि नें दंड ।
अनुमोद्यां पिण दंड कह्यु, निशीथ पनरमें मंड ७३
शस्त्र है षटकाय नूं, ग्रहस्थ तणो जे शरीर ।
तसुं तीखो करवा तणी, किम आज्ञा दे बीर ७४
घातिक जे षट कायना, तास बचावे कोय ।
तसुं प्रते आज्ञा किम दीये, न्याय विचारी जोय ।७५।
॥ हिव साधूरी आज्ञा बाहररी ग्रहस्थ व्यावच करै तसुं उत्तर ॥
कोई कहे साधू तणी, व्यावच ग्रहस्थ करेह ।
तेह विषे स्यूं फल हुवे, तसुं उत्तर हिवलेह ॥७६॥
जे व्यावच मुनि नी करे, तसुं आज्ञा प्रभु देह ।
निरदोषण अशणादिकर, तेह विषे धर्म लेह ।७७।
जे व्यावच मुनि नी करे, प्रभु आज्ञा नाहिं देह ।
तेह विषे नाहिं धर्म पुण्य, न्याय विचारी लेह ७८
॥ साधूरी हरस छेद्यां पुण्य शुभ कृया कहै तेहनुं उत्तर ॥
सोलम शतके भगवती, तृतीय उद्देश विमास ।
हरस छेदे जे मुनी तणी, कृया कही प्रभुतास ।७९।

हरस छेदूं हूं तुम्ह तणी, इम पूछयां अणगार ।
आज्ञा न दियै गृही भणी, तिण सुं आज्ञा बार ।८०।
कार्य करावे नहि मुनी, ग्रहस्थ करें जे अंश ।
जबरी सूं जो को करे, तो न करे तास प्रशंस ।८१।

॥ सोरठा ॥

ग्रहस्थ मुनी नी पेखरे, हरस छेदवे धर्म पुराय ।
तो मुनि ना कार्य अनेकरे, तसुं लेखे कीधां धर्म ८२
मुनि पग कांटो जाणरे, वलि फांटो चक्षू थकी ।
गृही काढे विण आंणरे, तसु लेखे धर्म गृही भणी ८३
दूखे पेट अपाररे, मुनि चित व्याकुल दुःख घणो ।
गृही मशले कर साररै, तेह नैं पिण पुराय लेख तसुं८४
पेटूची अति दुःखरे, दूठी भूती समकही ।
गृही मशले कर सुक्करे, तेहने पिण तसुं लेख पुराय८५
अटवी विषै अचेतरे, हय खर सगट बैशाण नैं ।
आणें गृहीपुर तेथरे, तेह नै पिण पुराय तसुं मतै ।८६।
मुनिथाको मग मांहि रे, बोज घणो पोथ्यां तणों ।
पगभर खीस्यो न जायरे, तो बोज उठायां पिण धर्म८७
अरणय वलि पुर मांहि रे, संत तृषातुर चेत नहीं ।
सचित उदक गृही पायरे, तेहनैं लेखे धर्म तसूं ।८८।

इत्यादिक अवलोयरे, गृही मुनिनां कार्य करै ।
हरस छेद्यां धर्म होयरे, तसुं लेखै सहु मैं धर्म ।८६।
मुनि नी हरस छेदंतरे, तेह नैं अनुमोदै मुनी ।
दंड चौमासी हुन्तरे, तृतीय उद्देश निशीथ में ॥ ६० ॥
अनुमोद्यां ही पापरे, तो गृही छेद्यां पुण्य किम ।
जिन आज्ञा चित्त स्थापरे, आज्ञा विन नहीं धर्म पुण्य ।
सामायक पच्चखाणरे, निर्वद्य कार्य अन्य वलि ।
ग्रहस्थ करे को जाणरे, तो मुनि अनुमोदै तसुं ।६२।
निर्वद्य कार्य ताहिरे, गृही कीधें धर्म पुण्य तसुं ।
अनुमोदै मुनि रायरे, तेह नैं पिण धर्म पुण्य छै ।६३।
विणज अनें व्यापाररे, सावद्य कार्य अन्य वलि ।
ग्रहस्थ करे तिवाररे, धर्म पुण्य तेहनै नथी ॥ ६४ ॥
सावद्य कार्य ताहिरे, गृही कीधें पिण पाप छै ।
अनुमोदै मुनिरायरे, प्रायश्चित आवे तसुं ॥ ६५ ॥
हरस छेदणरी ताहिरे, आज्ञा जिन मुनी न दियै ।
अनुमोदै पिण नांहिरे, तिण सुं ते सावद्य अछै ।६६।
ग्रहस्थ पासे जाणरे, कार्य करावा मुनि तणो ।
जावज्जीव पच्चखाणरे, मर्यान्ते पिण नियम ए ।६७।
हरस गुम्बडा आदिरे, गृही पें छेदावण तणा ।
मुनि नैं त्याग संवादरे, गृही छेदै जबरी थकी ।६८।

मुनि अनुमोदे नांहि रे, तो तसु त्याग भागे नही ।
पिण कामी कहिवायरे, त्याग भगावानो गृही ।६६।
तिण सुं सावद्य एहरे, वलि अनुमोदे पिण नही ।
आज्ञा पिण नहिं देयरे, ते माटे नहिं धर्म पुराय ।१००।
जे कामी गृही थायरे, त्याग भगावा मुनि तणो ।
धर्म नहिं तिण मांहि रे, न्याय दृष्ट अवलोकिये १०१
किण गृही अट्ठम् कीधरे, आहार च्यार त्यागन कीया।
व्याकुल तृषा प्रसिद्धरे, थयां अचेतन् अन्य गृही ।१०२।
उसनोदक तसुं पायरे, कियो सचेतन अधिक सुख ।
नेम भङ्ग तसुं नांयरे, पिण कामी त्याग भांगण तणो
तेम इहां अवलोयरे. नेम भङ्ग मुनि नो नथी ।
पिण कामी गृही होयरे, त्याग भगावा मुनि तणो।१०४
किणही ग्रहस्थ पच्चखाणरे, हरस छेदावा नां किया।
जवरी सुं पहिछाणरे, वेद्य हरस छेदे तसू ॥ १०५ ॥
नेम भङ्ग तसुं नाहिं रे, पिण त्याग भङ्ग करवा तणो ।
कामी वेद्य कहिवायरे, तिण सुं धर्म न तेह नें ।१०६।
तिम मुनिरे पच्चखाणरे, हरस छेदावा गृही कनें ।
जवरी सुं पहिछाणरे, वैद्य हरस छेदे तसूं ॥ १०७ ॥
नियम भङ्ग तसुं नाहिंरे, पिण त्याग भङ्ग करवा तणो ।
कामी वैद्य कहायरे, तिण सुं नाहिं तसुं धर्म पुराय१०८

वैद्य हरस छेदेहरे, अनुमोदे नांहिं जे मुनि ।
किम तसुं धर्म कहेहरे, न्याय विचारी देखल्यो ।१०९।
अनुमोद्यां ही पापरे तो छेदे तसुं पुराय किम ।
तृतीय करण अघ स्थापरे, प्रथम करण तो अधिक अघ
पाप हुवै धुर करणरे, ते अघनी अनुमोदना ।
तीजे करण उच्चरणरे, तिण लेखे तसुं पाप है ।१११।
प्रथम करण पुराय होयरे, ते पुराय नी करणी प्रते ।
अनुमोदे जे कोयरे, तास पाप किण विध हुवे ।११२।
करण वाला नें पुरायरे, ते अनुमोद्यां पाप कहे ।
प्रत्यक्ष वचन जबून्यरे, न्याय दृष्ट कर देखीये ।११३।
छेदे तिण नें पुरायरे, ते पुरायरी करणी प्रते ।
अनुमोद्यां जो पुरायरे, तास पाप किण विधहुवे।११४।
धर्म विना पुराय नांहिरे, शुभ जोगां थी निरयरा ।
पुराय वंध पिण थायरे, ज्यूं गहूं लारे खाखलो ।११५।
द्वितीय आचारङ्ग माँयरे, तेरम अध्येन नें विषे ।
पाठ कह्या जिन रायरे, ग्रहस्थ करे साधू तणां ।११६।
मुनि तनु व्रणज थायरे, गृही छेदे शस्त्र करी ।
मुनि मनकर वान्छे नाँयरे, न करावे वचकाय करि११७
व्रण छेदी नें ताहिरे, रुधिर राधि काढे गृही ।
मुनि मनकरि वंछे नांहि रे, न करावे वच कायकरि११८

गृही मुनि पगवालि कायरे, तेल चोपडे मर्द्दने ।
मुनि मन कर वंछे नाँयरे, न करावे वच काय करि ११९
गृही मुनि पगथी ताहिरे, खीलो कांटो काडियां ।
मन करि वंछै नांहि रे, न करावे वचकाय करि । १२० ।
मुनि मस्तक थी ताहिरे, गृही काढे जूं लीख प्रते ।
मन करि वंछै नांहि रे, न करावे वचकाय करि ।१२१।
बोल इत्यादिक ताहिरे, ग्रहस्थ करे साधू तणां ।
वंछे नांहिं मुनि रायरे, द्वितीय आचारङ्ग तेरमें । १२२।
मुनि अनुमोदे नांहि रे, तो ग्रहस्थ करे ए ऋषि तणां ।
धर्म पुराय तिण मांहि रे, किण ही बोल विषे नथी १२३
मुनि तनु व्रण छेदंतरे, धर्म कहे इक बोल में ।
तो तसुं लेखे हुन्तरे, धर्म सर्व बोलां मझै । १२४ ।
धर्म पुराय नाहिं होयरे, ते सघला बोलां मझै ।
तो पाप गृही नें जोयरे, जिन आज्ञा नाहिं ते भणी १२५
तिम ते हरस छेदंतरे, अशुभ कृया ते वैद्य नें ।
मुनि नहिं अनुमोदंतरे, धर्म पुराय किण विध हुवे १२६
हरस छेद्यां शुभ कर्म रे, तो आचारङ्ग में कह्या ।
त्यां सघला में धर्म रे, कहवो तिणरे लेख ए ।। १२७।।
धर्म नहिं अन्य मांहिरे, तो छेदे व्रणादि गृही ।
तिण में पिण पुराय नांहि रे, ए सावद्य आज्ञा नथी १२८

हरस छेद्यां धर्म हुन्तरे, तो मुनि शिर सेती गृहीं।
जूंवा पिण काडंतरे, तिणमें पिण तसुं लेख पुराय १२६
वलि मुनिवरनीं सोयरे, पग चम्पी मर्द्दन करै।
करै जो औषध कोयरे, तसुं लेखे पुराय सहु मज्झै १३०
बृत्ति विषे इम वायरे, धर्म बुद्धि छेद्यां थकां।
कृया हुवै शुभ तायरे, अशुभ कृया लोभादि करि १३१
विरुद्ध अर्थ छै एहरे, सूत्र थकी मिलतो नथी।
मुनि नहीं अनुमोदेहरे, तास कृया शुभ किम हुवै १३२
इम शुभ कृया जो होयरे, तो औषध तेलादि करि।
मुनि तनु मर्द्दै कोयरे, तास कृया पिण शुभ हुवै १३३
वलि मुनि पगथी तायरे, खीलो कांटो काडीयां।
तसुं लेखे कहिवायरे, तेहनें पिण हुवै शुभ कृया।१३४।
वलि मुनि शिरथी सोयरे, जूवां लीखां काडीयां।
तसुं लेखे अवलोयरे, तेहनें पिण हुवे शुभ कृया १३५
मुनि अति तृषा अचेतरे, सचित अचित जल पाय करा।
कीधो ग्रहस्थ सचेतरे, तसुं लेखे हुवे शुभ कृया।१३६।
थाको मुनी उजाडरे, गाडे हय खर चाढ करे।
आणी ग्राम मझाररे, तसुं लेखे हुवे शुभ कृया।१३७।
इत्यादिक अवलोयरे, मुनि नें जे कल्पे नहीं।
ते करै कार्य्य गृही कोयरे, तसुं लेखै पिण शुभ कृया

जो यां बोलां रे मांहिरे, नहुवै गृही नैं शुभ कृया ।
तो हरस छेद्यां पिण ताहिरे, किम शुभ कृया कहिजीए
हरस छेदणारी तांमरे, जिन मुनि आज्ञा नाहिं दियै ।
जिन आज्ञा विन कामरे, कीधां नाहिं छे धर्म पुराय १४०

॥ इति ॥

॥ अथ चौबीसमूं सुभद्राधिकार ॥

॥ दोहा ॥

फांटो काढ्यो आंखथी, सती सुभद्रा जेह ।
किणी सूत्र मैं ए नहीं, कथा विषे छे एह ॥ १ ॥
जो सुभद्रा नैं धर्म छे, तो मुनिना अवलोय ।
अन्य कार्य्य बाई कीयां, तसुं लेखै धर्म होय ॥ २ ॥
दूखे पेट मुनी तणों, मोत घात अवलोय ।
बाई मशलै उदरतो, तसुं लेखै धर्म होय ॥ ३ ॥
नालि किणा ही साधू तणी, टली पेटूची ताम ।
वहु दुःख फेरोपी घणो, अन्न नाहिं भावै आम ॥४॥
ते पेटूची मुनि तणी, बाई मशलै कोय ।
तो उणरै लेखै तदा, तिण मैं पिण धर्म होय ॥५॥
किणाही मुनि रो गोलो चढ्यो, वहु दुःख बाई देख ।
गोलो मशलै तेहनूं, धर्म हुइ तसुं लेख ॥ ६ ॥

अग्नि त्रिषे पडता प्रतैं, बाई बांह पकडेह ।
बारे काडे तेहनैं, तो धर्म तसुं लेखेह ॥ ७ ॥
ऊंचा थी पडतो मुनी, बाई झेले तास ।
तिण मांही पिण धर्म छै, तेहनै लेख विमास ॥८॥
आखड पडतां मुनि भणी, बाई झाल राखेह ।
पडता नैं बैठो करै, हुवे धर्म तसुं लेखेह ॥ ९ ॥
मांथो दूखे मुनि तणों, बाई शिर दाबेह ।
मलम लगावे दूखणे, तसुं पिण धर्म कहेह ॥१०॥
पाटो बांधे दूखणे, मुर्च्छा फुन मुशलेह ।
इत्यादिक बहु मुनि तणा, बाई कार्य्य करेह ॥११॥
दुःखी देख साधू भणी, मरतो देखी ताय ।
पीडाणो देखी करी, साता करै सवाय ॥ १२ ॥
कांटो काढ्यो सुभद्रा, धर्म हुसी ज्यो तास ।
तो यानैं पिण धर्म छै, तिणरै लेख विमास ॥१३॥
साधूरा कारज करै, बाई जे जिण रीत ।
तिम कारज भाई करै, समणी नां धर प्रीत ॥१४॥
जो सुभद्रा नें धर्म छै, तो श्रमणी नों जोय ।
भाई कांटो आंख थी, काढ्यां पिण धर्म होय ॥१५॥
वलि कांटो पग मांहि थी, समणी तणोज सोय ।
भाई काढे तेह मैं, तसुं लेखै धर्म होय ॥ १६ ॥

वाले गोलो श्रमणी तणो, पेट पेट्टूची जोय ।
भायो मशले तेह मैं, तसु लेखे धर्म होय ॥ १७ ॥
शिर दाबै श्रमणी तणुं, भायो तसु दुःख देख ।
इम मुच्छी मशले तसुं, धर्म होसी तसु लेख ॥१८॥
मलम लगावे दूखणे, वलि अज्झा पडती जोय ।
भायो झेले तेह नैं, तसु लेखे धर्म होय ॥ १९ ॥
पडती नैं बैठी करै, इत्यादिक अवलोय ।
समणी नां भायो करै, तसु लेखे धर्म होय ॥२०॥
साधूरा बाई करै, तास धर्म छै सोय ।
तो श्रमणी नां भायो कीयां, तिणमैं अघ किम होय
सुभद्रा फांटो काडियो, जो तिण मैं धर्म होय ।
तो सारां मैं धर्म छै, न्याय सारिपो जोय ॥ २२ ॥
जो यां सहु बोलां मझे, जिन आज्ञा दे नांहि ।
तो धर्म पुण्य पिण को नहीं, धर्म जिन आज्ञा मांहि
जे मुनीवर नैं त्याग छै, ते कार्य्य अवलोय ।
ग्रहस्थ करै को मुनि तणां, तास धर्म नहिं होय॥२४॥
जिण रीतें जिणवर कह्यो, तिण रीतें अवलोय ।
अज्झा नैं मुनिवर भणीं, बचावियां धर्म होय २५
जे प्रभु सीखावै नहीं, न करै तास प्रशंस ।
आज्ञा पिण देवै नहीं, तिहां धर्म तणों नहिं अंस २६

॥ इति ॥

॥ अथ पच्चीसमूं गोशालाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै छद्मस्थ प्रभु, चौनाणी था जेह ।
किम चूका कहो वीर नैं, तसुं उत्तर हिव लेह ॥ १ ॥
वलि तुम्ह कहो गोशाल नैं दीक्षा दीधी स्वाम ।
ते किहां सूत्र विषे कह्युं, तसुं उत्तर पिण तांम ॥ २ ॥
वलि अनुकम्पा करि प्रभु, राख्यो जे गोशाल ।
तेह विषे पिण स्युं थयुं, तसुं उत्तर पिण न्हाल ॥३॥
शतक पनरमैं भगवती, आया सावत्थी स्वाम ।
उत्पति गोशाला तणी, गौतम पूछी तांम ॥ ४ ॥
वीर कहै सुण गोयमा, गौ नी शाला मांय ।
ए जन्म्यों तिण कारणै, नाम गोशाल कहाय ॥५॥
हूं तीस वर्ष घर में रही, अहुं चरण सुख राशि ।
प्रथम वर्ष पख पख सुतप, अट्ठी ग्राम चौमास ॥६॥
तप मास मास दूजे वर्ष, नगर राजग्रह वार ।
नालंदा पाडा मझै, चौमासो सुविचार ॥ ७ ॥
तंतुवाय शाला विषे, हूं तपकरत विशेष ।
आयरह्यो गोशाल पिण, ते शाला इक देश ॥८॥
प्रथम मास नूं पारणो, विजय तणै घर किद्ध ।
प्रगट हुआ जे पंच द्रव्य, महिमा देख प्रसिद्ध ।९।

गोशालो कह्यो मुझ भणी, थे धर्मा चार्य सोय ।
धर्मान्तेवासी प्रभु, हूं तुम्हनो अवलोय ॥ १० ॥
तब मैं तेहना वचन नैं, आदर न दियो कोय ।
मनमैं भलो न जाणियो, धारी मौन सु जोय ॥११॥
द्वितीय मास नों पारणो, आणंद नैं घर कीध ।
तिमहिज गोशाले कह्यो, मैं आदर नहीं दीध ।१२।
तृतीय मास नूं पारणो, कियो सुदर्शण गेह ।
तिमहिज गोशाले कह्यो, मैं आदर नहिं देह ॥१३॥
तुर्य मास नूं पारणो, कोल्लाक संनिवेश ।
ब्राह्मण वहुल तणे घरे, करि चाल्यो सु विशेष ।१४।
तंतु वाय शाला विषे, गोशालो तिहवार ।
मुज प्रति तिण देख्यो नहीं, जोयोभ्यन्तर बार ।१५।
मुज अण देख्यें निज उपधि, ब्राह्मण नें दे त्हाय ।
मूंडी दाढ़ी मूंछ प्रति, मिल्यो ज मुज सूं आय ।१६।
तीन प्रदत्तण दे करी, जाव नमी कहै मुज्झ ।
थे धर्मा चार्य माहरा, हूं धर्म अंते वासी तुज्झ ॥१७॥
तब मैं गोशालक तणां, एह अर्थ प्रति सोय ।
अङ्गीकार कीधो तदा, पाठ विषे इम जोय ॥१८॥
वृत्तिकार कह्यु एहवा, अजोग नैं पिण जेह ।
अङ्गीकार कीधो प्रभु, ते अक्षीण राग पणेह ॥१६॥

बलि तेहना परिचय थकी, ईषत् थोड़ी जाण ।
स्नेह गर्भ अनु कम्पनां, सद्भावे पहिछाण ॥ २० ॥
प्रभु छद्मस्थ पणे करि, जेह अनागत काल ।
तेह विषै जे दोषनां, अजाणवाथी न्हाल ॥२१॥
अवश्य होणहार भाव थी, कीधो प्रभु अङ्गीकार ।
अभय देव सूरे कह्यो, वृत्ति विषै ए सार ॥ २२ ॥

॥ ते टीका कहै छै ॥

अभ्युप गच्छामि यच्चेतस्य मयोगस्याप्यभ्युगमवं भगवत स्तदत्तीणराग तया परिचये नेषत्स्नेह गर्भानुकंपासद्भावात् छद्मस्थ तयाऽनागत दोषानवगमाद् ऽवश्यं भावीत्वाच्चे तस्यार्थेति भावनीय ।

॥ दोहा ॥

तदन्तर हूं गोयमा, गोशाला रे साथ ।
भोगविया षट् वर्ष लग, लाभ अलाभ संजात ॥२३॥
सुख दुःख नें सत्कार फुन, असत्कार फुन सोय ।
अनित्य जागरणा जाग तो, हूं विचरयो अवलोय २४
मृगशिरमासे एकदा, हूं गोशाला साथ ।
जे सिद्धार्थ ग्राम थी, कुर्म ग्राम प्रति जात ॥२५॥
तिल थूंटो इक देख नैं, मुज प्रति तब गोशाल ।
ए तिल नीपजसेक नहीं, इम पूछ्यो तिह काल ।२६।

सप्तजीव तिल पुष्प नां, मरी २ नें ताय ।
किहां उपजसे हेप्रभु, तब हूं बोल्यो वाय ॥ २७ ॥
नीपजसे तिल थंभ ए, फूल जीव जे सात ।
मरी मरी ए एह नैं, तिलथंभ विषै विख्यात ॥२८॥
एक फली जे तिल तणी, तेह विषे अवलोय ।
ए तिल सप्त हुस्ये सही, इम मैं भाष्यो सोय ॥ २९ ॥
तब गोशालै मुज वचन, श्रद्धयो नांहिं मन मांहि ।
प्रतीतीयो पिण नहीं तिणें, रोचावियो पिण नांहिं ३०
मुज नैं मूंटो घालवा, धीरे धीरे तास ।
पाछोवल नैं आवीयो, ते तिल बूंटा पास ॥ ३१ ॥
माटी मूल सहीत तिण, तुरत उपाडी जेह ।
एकन्ते न्हाख्यो तदा, ते तिल थंभ प्रतेह ॥ ३२ ॥
तत्त्विण थोडी वृष्टि करि, थंभ्यो तिल थंभ स्थान ।
थया सप्त तिल फूल चवि, एक फली मैं आण ।३३।
गोशाला साथै तदा, हूं आयो कूर्म ग्राम ।
तेहि नगरेरे बाहिरे, बाल तपश्वी ताम ॥ ३४ ॥
नाम वेसियायिण तिको, तप छट्ठ छट्ठ करेह ।
रवि सन्मुख आतापना, तिहां लेतो विचरेह ॥३५॥
तसु शिर थी रवि ताप करि, यूंका भूमि पडंत ।
तास दया अर्थे तिको, वलि २ शिरै धरंत ॥ ३६ ॥

तब गोशालो मुज पासथी, बाल तपस्वी पाहि ।
धीरे २ आय नैं, बोल्यो एहवी वाय ॥ ३७ ॥
स्युं तूं मुनि तपश्वी अछै, तथा तत्व नूं जाण ।
यती तथा तूं कदा अही, के जूं सिज्यातर माण।३८।
गोशालानां वचन नैं, तिण आदर नहिं दिद्ध ।
मनमैं भलो न जाणियो, साधी मौन प्रसिद्ध ।३९।
बे त्रण वार गोशाल तब, बोल्यो तिंमहिज बांण ।
स्यूं तूं मुनि तपश्वी अछै, जाव जूंआं रो स्थान ॥४०॥
बाल तपस्वी सीघ्र तब, कोप चढयो असराल ।
जे आतापन भूमि थी, पाछो वलियो न्हाल ।४१।
समुद्घात तेजस प्रतै, करै करी अवलोय ।
सात आठ पग ते तदा, पाछो उसरी सोय ॥४२॥
मंखलि पुत्र गोशाल नैं, हणवा काजे जाण ।
काढे तेज शरीर थी, ए तेजू उष्ण पिछाण ॥४३॥
तिण अवशर हूं गोयमा, गोशालक नी जेह ।
तेह मंखली पुत्र नीं, अनुकम्पा अर्थेह ॥ ४४ ॥
वेसियायण नामैं तिको, बाल तपश्वी जेह ।
तेह तणी जे तेज प्रति, दूर हरण अर्थेह ॥ ४५ ॥
तापस नैं गोशाल रै, इहां विचाले न्हाल ।
शीतल तेजू लेश्य प्राति, मैं मूंकी तिण काल ॥४६॥

॥ चोपाई ॥

जा मुज शीतल तेजुलेशं, तिण लेश्या करि नैं सुविशेषं । वेसियायण तापस नी जाणी, उन्ही तेजुलेश हणाणी ॥ ४७ ॥ वेसियायण तपश्वी तिह अवशर, मुज शीतल तेजु लेश्या करि । पोता नी जे उष्ण पिछाणी, तेजु लेश्यहणाणी जाणी ॥ ४८ ॥ गोशाला नां तनु नैं ताह्यो, जाण्यो किश्चित पीड न पायो । देख्युं छावि छेद अण करतो। ते उष्ण तेजु लेश्य संहरतो ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

उष्ण तेजु प्राति संहरी, मुज प्रति बोल्यो बाय ।
जाण्या भगवन् आपनैं, जाण्या २ ताहि ॥५०॥
आप तणा ज प्रशाद थी, दग्ध हुवो नहिं एह ।
संभ्रम थी गत शब्द नैं, बार २ उचरेह ॥ ५१ ॥

॥ गीतक छन्द ॥

कह्युं वृत्ति मैं गोशाल नों भगवंत संरक्षण कीयो।
सराग भावे करि प्रभु इक दयारस थी राखीयो ॥
जे उभय मुनि नवि राखस्ये ते वीत राग पणै

वृत्ती । फुन लब्धि अण फोडण थकी । वलि अवश्य भावी भाव थी ॥ ५२ ॥

॥ अत्र टीका ॥

इह च यद्गोशालकस्य संरक्षणं भगवताः कृतं तत्सरागत्वेन दयैकरसत्वाद्भगवतः यच्च सुनक्षत्रसर्वानुभूति मुनिपुङ्गवयोर्न करिष्यति तद्वीतरागत्वेन लब्ध्यनुपजीवकत्वाद् अवश्यं भावित्वाद्वे त्यवसेयं ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

गोशालो तिण अवशरे, मुज प्रति बोल्यो वाय ।
जूं सिय्यातरियो किसूं, तुज प्रति भाषे ताहि ।५३।
जाण्या भगवंत तो भणी, जाणय जाण्या सोय ।
तब हूं गोशाला प्रते, इम बोल्यो अवलोय ॥५४॥
हे गोशाला तूं इहां, वेशियायण नामेह ।
बाल तपश्वी प्रति तदा, देखी नेत्र करेह ॥ ५५ ॥
धीरे २ ऊसरी, मुज पासा थी ताहि ।
जिहां वेसियायण तिहां, जई बोल्यो इम वाय ।५६।

॥ चोपाई ॥

स्यूं तूं मुनी तपश्वी छे कोई, तथा तत्व नों जाण सु होई । स्यूं तूं यती कदाग्रही कहियो, के तूं जूं

नूं सिय्यात्तरीयो ॥ ५७ ॥ वेशियायण तपश्वी तिहवारं, तुज्ज बच आदर न दियै लिगारं । मनमैं पिण भलो न जाणै, रह्यो मून धरी तिह टाणै ॥ ५८ ॥ अहो गोशाला तूं तब हेर, तिण वाल तपश्वी प्रतेज फेर । तूं मुनी कै जाव जूं सेय्या तरियो, इम बे त्रण वार उच्चरियो ॥ ५६ ॥ तब बाल तपश्वी सीघ्र कोप्यो, जाव पाछो ऊशर चित्त रोप्यो । तुझ हणवा तेजू मुंकेह, तब हूं तुझ अनुकम्पा अर्थेह ॥ ६० ॥ तिणरी उष्ण तेजू हणवा न्हाल, मुंकी शीतल तेजू अंतराल । तब बाल तपश्वी चित्त ठाणी, उष्ण तेजू हणाणी जाणी ॥ ६१ ॥ पीड तुझ तनु नवि देखेह । उष्ण तेजु लेश्या संहरेह । तब मुज प्राति बोल्यो बाय, जाणया २ हे भगवन् ताहि ॥ ६२ ॥

॥ दोहा ॥

तिण अवंशर गोशालं ते, सांभल बच मुझ पास ।
बीहनो यावत पामियो, अतही भय मन त्रास ।६३।
मुज प्राति वन्दी नमण करि, इम बोल्यो अवलोय ।
संक्षिप्त विस्तीर्ण प्रभु, तेज लेश किम होय ।६४।

तिण अवशर हूं गोयमा, गोशाला प्रति ताहि ।
तेह मंखली पुत्र प्रति, बोल्यो इह विध वाय ।६५।
इक मूंठी उडदे करी, फुन जे उष्ण जलेह ।
इक पुशली तप छट छटे, अंतर रहित करेह ॥६६॥
ऊंची बांह आतापना, सूर्य सनमुख लेह ।
तसुं छेहडे षट् मासरे, तेजु लेश हुे तेह ॥ ६७ ॥
गोशालक तिण अवशरे, ए मुज अर्थ प्रतेह ।
सम्यक् प्रकारे विनय करि, अङ्गीकृत करेह ॥६८॥
तिण अवशर हूं गोयमा, गोशालक संघात ।
अन्य दिवश कुर्म ग्रामजे, नगर थकी विख्यात ।६९।
सिद्धार्थ फुन ग्रामजे, नगरे आवत तांम ।
जे तिल थंभ मुज पूछियो, झट आव्यो ते ठाम ।७०।
तब गोशालो मुज प्रते, बोल्यो एहवी वाय ।
मुज नें प्रभु तुम्ह जद कह्युं, तिल निपजसी ताहि ७१
तिमज सप्त पुष्फ जीव चवि, एक सङ्गली मांय ।
हुस्ये सप्त तिल तेह वच, मिथ्या प्रत्यक्ष दिखाय ।७२।
ते तिलस्थंभ न नीपनौं, सप्त पुष्फनां जीव ।
चवी सप्त तिल नवि थया, इक संगणी में अतीव ७३
तिण अवशर हूं गोयमा, गोशालक प्रति वाय ।
बोल्यो तैं मुज जद वचन, श्रद्धयो नांहि मन मांय ७४

प्रतीतियो नाहिं रोचव्यो, यह अर्थ अवलोय ।
मनमें अश्रद्ध तो छतो, फूटो घालसा मोय ॥७५॥
ए मिथ्या वादी हवो, इम मन करी विचार ।
मुज थी पाछो ऊशरी, धीरे धीरे धार ॥ ७६ ॥
जिहां तिलथंभ तिहां आयनैं, यावत एकान्त ठाम ।
न्हां रुयो ते उपाड नैं, हे गोशालक तांम ॥ ७७ ॥
तत्खिण बादल अभ्र दिव्य, प्रगट थयो तिहवार ।
अभ्र बदल ते सिघ्र ही, तिमहिज यावत धार ॥७८॥
तेह तिलनां स्थंभ नीं, एक संगली मांहि ।
तदा ऊपना सप्त तिल, जेम कह्युं तिम ताहि ॥७९॥
हे गोशाला तेह ए, तिल नूं स्थंभ निप्पन्न ।
नथी तेह अण नीपनूं, निश्चय करी सुजन्न ॥८०॥
तेह सप्त पुष्फ जीव चवि, ए तिलस्थम्भनीं जाण ।
एक संगली नें विषे, थया सप्त तिल आण ।८१।
इम निश्चय गोशालका, वनस्पतिरे माँहि ।
पउट्टपरिहार करे तिके, मरी मरि तसुंतन आय ।८२।

॥ टीका ॥

पारिहत्त २ मृत्वा २ यस्तस्यैव वनस्पति शरीरस्य परिहारः परिभोग स्तत्र वोसाहो सो परिहत्त पारिहारेसं ।

॥ वार्त्तिका ॥

वणस्पति कहतां वनस्पति नां जीव ने पारिहत्त २ क० मरी मरी नें पहिम वनस्पती ना शरीर नौं परिहार क० परिभोग ते तिहांइज उपजइं ते पारिहत्त परिहार कहिइं तेम.वे परिहरति कहतां करै, ॥

॥ दोहा ॥

तिण अवशर गोशाल ते, मुज इम कहौं छतेह ।
एह अर्थ श्रद्धे नहीं, नहिं प्रतीत न रुचेह ॥ ८३ ॥
यह अर्थ अण श्रद्धतो, जिहां तिल स्थम्ब त्यां आय ।
ते तिल थंभ थी तिल तणी, संगुली तोडे ताहि ।८४।
ते तिल संगली तोड नैं, करतल विषे ज सोय ।
सप्त तिल पाडे तदा, प्रगट पणौं सु जोय ॥ ८५ ॥
तिण अवशर गोशाल नैं, गिणतां ते तिल सात ।
एहवुं मन में चिंतव्युं, जाव समुत्पन्न जात ॥८६॥
इम निश्चय सहु जीव पिण, पउट परिहार करेह ।
हे गोतम गोशाल नूं, पउट वाद कह्यु एह ८७॥
हे गोतम गोशाल नूं, मुझ पाशा थी जेह ।
आतमई करिके तसुं, पहिवुं जुदो करेह ॥ ८८ ॥

॥ वार्त्तिका ॥

आयाए पाठ नौ अर्थ, वृत्तीकार आयाए पाठ नां बे अर्थ कीधाः—भगवंत कहै म्हारा पाशा थी आयाए कहतां आत्मइं

करी अपक्रम ते जुदो पड्यो नीसरयो अथवा आयाए कहतां आदाय तेजू लेश्या नूं उपदेश ग्रहण करी नैं जुदो पड्यो ।

॥ इति आयाए पाठ नूं अर्थ ॥

तिण अवशर गोशाल ते, इक मुंठि उडदेह ।
इक पुसली उष्णोदके, छट्ठ यावत विहरेह ॥८९॥
तिण अवशर गोशाल ते, षट् मासे अवलोय ।
संक्षिप्त विस्तीर्ण तिका, तेजु लेश्यवंत होय ।९०।
तिण अवशर गोशालपे, पार्श्व नाथ नां जोय ।
षट् साधु आगल हुंता, आवी मिलया सोय ।९१।
गोशाला नैं गुरु पणै, पडिवज्झ रहिता जेह ।
तेहाणै तिमहिज सहु, पूर्व कह्या तिम लेह ।९२।
यावत् ए अजिन छतो, पिण जिन शब्द उच्चार ।
प्रकाशमान छतो ज ए, विचरै छै इहवार ॥९३॥
मोटी प्रषध नैं विषे, वीर कही ए बात ।
गोशालो सुण कोपीयो, निज संघ प्रति ले साथ ९४
वीर समीपे आयनैं, बोल्यो एहवी वाय ।
भलो कहै रे काशवा, आछो कहै रे ताहि ॥९५॥
रे काशव तुं इम कहै, मंखली सुत गोशाल ।
धर्मान्ते वासी माहरो, पिण हूं नाहिं ते न्हाल ९६
मंखली सुत गोशाल ते, धर्मान्ते वासी तोय ।
ते तो काल करी गयो, सुरलोके अवलोय ॥९७॥

महाकल्प चौरासी लक्ष, सप्त देव भव सार ।
सप्त संयूथा. सन्नि गर्भ, सप्त पउट परिहार ॥६८॥
इत्यादिक निज शास्त्र नी, वात्तिका कही वखाय ।
जीव उदाई नाम हूं, पिण गोशालो नाँय ॥६९॥
गोशालारे तनु विषै, अम्हे कीधूं प्रवेश ।
सप्तम् पौट परिहार ए, इत्यादिक जे अशेश ।१००।
चौर तणो दृष्टान्त प्रभु, गोशाला नैं दीध ।
तब गोशालो बोलियो, अगल डगल बहु विधि १०१
अवानु भूत्ति मुनि तदा, गोशालापै आय ।
भगवन्त नैं अनुराग करि, बोल्यो एवी वाय १०२
समण माहण पै एक पिण, आर्य्य बच धारेह ।
तो पिण तसुं वन्दै नमै, यावत सेव करेह ॥१०३॥
तो स्युं कहिवो गोशाल तुम्ह, भगवंत प्रवर्या दीध।
निस्चय भगवंत मूंडियो, शिष्य पणै सुप्रसिद्ध १०४
बृत्ति पणो करिनैं वली, सेव्यो भगवन्त तोय ।
सीखावी भगवंत तुम्ह, तेजु लेश अवलोय ।१०५।
चलि भगवंत बहु श्रुत कियो; भगवन्त थकी ज सोय।
भाव अनार्य पडिवज्झियो, ते माटै अवलोय ।१०६।
मति इम हे गोशाल तुम्ह, करण योग्य नाहिं एह।
तेहिज छाया ताहरी, नाहिं अनेरी जेह ॥१०७॥

सुण गोशालो कोपियो, तेजु लेश करि तांम ।
श्रवानु भूति मुनि प्रतै, भस्म कीयो तिण ठाम १०८
द्वितीयवार गोशाल फुन, कठिन वचन अधिकाय।
नष्ट विणष्टादिक कह्या, तब सु नक्षत्र मुनिराय १०९
जिम श्रवानुभूत्ति कह्यो, तिमहिज कह्यो विचार।
गोशालो तब तेज करि, परितापे तिहवार ।११०।
प्रभुपे आवी वंदि नम, महाव्रत प्रति आरोप ।
संत सत्यां नैं खाम नैं, कीधो काल अकोप ।१११।
तृतीयवार गोशाल फुन, प्रभु प्रति निठुर वदेह ।
तब प्रभु गोशाला प्रते, मुनि कह्यो तिमज कहेह ११२
हे गोशाला तो भणी, मैं प्रवर्ज्या दीध ।
यावत मैं बहु श्रुति कियो, म्लेच्छ भाव तैं कीध।११३।
गोशालो सुण कोपीयो, तनु थी काढे तेज ।
प्रभु तनु परितापे तदा, पिण तनु नाहिं पेसेज ।११४।
गोशालारा तनु विषे, पाछी पेठी आय ।
लागी दाह शरीर में, बोल्यो प्रभु प्रति वाय ११५
छद्मस्थ थको छः मास मैं, काशव काल करेह ।
प्रभु कहै हूं वर्ष सोल लग, गंध गज जिम विचरेह ११६
तैं मूंकी तेजू तिका, पेठी तुम्फ तनु न्हाल ।
तेह थी सप्तम् निशि मम्फे, तूं करसी छद्मस्थ काल ११७

पुर मैं जन कहै उभय जिन, लवे माहो मांहि वाय ।
कुण साचो भूटो कँवण, आस्चर्य ए अधिकाय ११८
गोशालो निज स्थान जई, सप्तम् निशि सु विचार ।
सम्यक्त पामी आत्म निन्द, काल कीयो तेहवार ११९
प्रभु वेदन षट् माससही, पछै विजोरा पाक ।
लीधैं तनु आक्रम वध्यो, प्रभुजी होगया चाक ।१२०।
गोयम तब वे मुनी तणी, पूछी फुन पूछेह ।
अंतेवासी आपरो, कु शिष्य गोशालक जेह ।१२१।
काल करी नैं किहां गयो, प्रभु भाष्यो सुविशाल ।
अंतेवासी माहरो, कु शिष्य गोशालक न्हाल ।१२२।
श्रमण घातक छद्मस्थ थको, काल करी सु जगीस ।
अच्युत् कल्पे ऊपनों, स्थिति सागर बावीस १२३
भगवती पनरमैं शतक मैं, छै बहुलो विस्तार ।
इहां संक्षेप थकी कह्यो, गोशालक अधिकार ।१२४।
कही सूत्र मैं तिमज कह्यु, हिव तसु कहिये न्याय ।
प्रभु शिष्य कियो गोशाल नैं, वलि बचायो ताय १२५
गोशाला नीं वारता, प्रभुजी शुर सूं ख्यात ।
मास २ तप द्वितीय वर्ष, म्हे कीधो सुविख्यात ।१२६।
प्रथम मास नैं पारणै, विजय तणे घर किद्ध ।
गोशालो कह्यो आप गुरु, हूं तुम्म शिष्य प्रसिद्ध १२७

तसुं अङ्गीकार मैं नवि कीयो, द्वितीय मास नैं जाण ।
पारणा गोशालै कह्युं, तिणहिज रीत पिछाण ।१२८।
अङ्गीकार न कियो तदा, तृतीय मासरै जेह ।
पारणा फुन गोशाल कह्युं, पिण म्हैं अंगीकृत न करेह
जो शिष्य करवा नी रीत हुवे, तो प्रथम वार ही पेख ।
अंगीकार करता प्रभु, न्याय विचारी देख ॥१३०॥
तुर्य मास नैं पारणै, तिमज कह्युं गोशाल ।
मुझ धर्माचार्य तुम्हे, हूं धर्म अन्तेवासी न्हाल १३१
मैं अङ्गीकार कीधो तसुं, इम कह्यो सूत्र विषेह ।
वृत्तिकार एहवो कह्युं, सांभल जो चित्त देह ।१३२।

॥ गीतकछन्द ॥

अक्षीण राग पणा थकी, परिचय करी नैं जानीयं ।
ईषत् स्नेह अनुकम्पनां सद्भाव थी पहिछानीयं,
अच्छा अनागत दोषनां, अजाणवाथी आद्रतं, फुन
अवश्य भावी भाव थीज अजोग प्रति अङ्गीकृतं १३३

॥ दोहा ॥

अक्षीण राग पणै करी, अङ्गीकार प्रतिख्यात ।
ते राग भाव मैं धर्म किम, समझो सुगण सुजात १३४

वलि परिचय करी नें कह्यो, ईषत् स्नेह अनुकम्प ।
एह कार्य्य आछो हुवे, तो इह विधकेम पर्यम्प ।।१३५।
अक्षीणराग पणा विषे, परिचा विषय सु जोय ।
स्नेह अनुकम्पा नें विषे, भलो कार्य किम होय ।१३६।
वलि अनागत दोषनां, अजाणवा थी जोय ।
अङ्गीकार कीधो कह्यो, तें दोष किसो अवलोय १३७
ए तिल नीपजसे कह्यो, तिण दीधो तुरत उपाड़।
हिन्सा जीवां री हुई, ए अवगुण अवधार ।।१३८।।
वलि लब्धि फोड गोशाल नों, रक्षण कीधो ताय ।
तिण बहु मिथ्यात वधावियो, ए पिण अवगुण थाय
वलि तेजु लेश्या भणी, सीखावी भगवान ।
तिण लेश्याइं मुनी हणया, ए पिण अवगुण जान१४०
वलि प्रतापना प्रभु नें करी, तेजू लेश्य करेह ।
वेदन अति षट् मास सही, प्रत्यक्ष अवगुण एह १४१
वलि तिल बूंटो नीपनो, एम कह्यो भगवान ।
तात्तिण तिणे उपाडियो, ए पिण अवगुण जान१४२
एम अनागत दोषनां, अजाणवाथी न्हाल ।
प्रभु छद्मस्थ पणे कीयो, अङ्गीकृत गोशाल ।१४३।
जो ए अवगुण जाणता, तो केमकरे अङ्गीकार ।
पिण उपयोग दीयो नहीं, वारूं न्याय विचार ।१४४।

ज़ो अपर अनागत दोष हुवै, तो कहिये तसुं नाम ।
प्रगट वृत्ती में आखियो, दोष अनागत तांम १४५
कोई कहै गोशाल नैं, अङ्गीकार कृत ख्यात ।
पिण दिक्षा दीधी इसो, किहां पाठ अवदात १४६
अवानु भूत्ति मुनि कह्यो, हे गोशाला तोय ।
प्रवर्ज्या दीधी प्रभु, वलि प्रभु मुंडयो सोय ।१४७।
वृत्ति पर्यौ सेव्यो प्रभु, सीखायो भगवान ।
वलि बहु श्रुति प्रभु कियो, प्रगट पाठे पहिछान १४८
इमज सु नक्षत्र मुनि कह्यो, इम प्रभु कह्यो प्रसिद्ध ।
हे गोशाला तोभणी, म्हे ज प्रवर्ज्या दिद्ध ।१४९।
यावत म्हे बहु श्रुत कियो, मुझ सेती इहवार ।
भाव अनार्य्य पडिवज्यो, इम आख्यो जगतार १५०
तब गोशाले जिन ऊपरे, मूंकी तेजू लेश ।
प्रभु षट् मास लगे सही, वेदन अधिक विशेष १५१
जे षट् मास थयां पछै, प्रभु तनु थयो निराम ।
गौतम पूछ्यो कु शिष्य तुम्ह, मर उपनो किण ठांम
प्रभु कह्यो अंतेवासी मुज, कु शिष्य गोशाल जगीस ।
अच्युत कल्पे ऊपनौ, स्थित सागर बावीस ।।१५३।।
नव में शतके भगवती, तेतीसए उद्देश ।
गौतम पूछ्यो वीर प्रति, सांभल जो सु विशेष ।१५४।

अंतेवासी कु शिष्य तुम्ह, जमाली अणगार ।
काल करी किहां ऊपनों, प्रभु भाषै तिहवार ।१५५।
अंतेवासी कु शिष्य मुज, जमाली अणगार ।
लंतक कल्पे ऊपनों, किल्विष पणे विचार ॥१५६॥
जमाली नैं कु शिष्य कह्युं, तिमहिज कु शिष्य गोशाल।
ते माटै विहुं शिष्य हुंता, देखो नयण निहाल ।१५७।
अंतेवासी विहुं भणी, आख्या श्रीजगनाथ ।
वलि कु शिष्य विहुं नैं कह्या, देखो तज पखपात१५८
कु पूत कहिवे पूत धुर, तिणहिज रीत पिछाण ।
कु शिष्य कहिवे शिष्य धुर, समझो चतुर सुजाण१५६
अङ्गीकृत आख्यो प्रथम, श्रवानु भूति ख्यात ।
कह्यो सुनचत्र मुनि वलि, फुन प्रभु कह्यो विख्यात
तास कु शिष्य कह्यो वलि, ए पंचठाम पहिछान ।
दीचा गोशाला तणी, देखोजी बुद्धिवान ॥१६१॥
नवमें ठाणे वृत्ति में, जिन छद्मस्थ सु जोय ।
दिचा न दिये इमकह्यो, शिष्य वर्ग नैं सोय ॥१६२॥

॥ अथ ठाणाङ्ग नवमें ठाणे टीका मैं कह्यो छै तीर्थंकर छद्मस्थ थका दिचा न दियै ते गाथा लिखिए छै ॥

न परोवए सिया नय छउमत्था परोवए ।
संपि हिसिनय सीस वग्गां दिरकंति जिणा जहासव्वे

केवल उपजिया विना, दिक्षा दीधी आप ।
अक्षीण राग पणे करी, परिचय स्नेह प्रताप ॥१६३॥
वालि अजाण पणा थकी, जेह अनागत दोष ।
वृत्तिकार पिण इम कह्यो, तो मुजथी क्यूं अपसोस
अयोग नैं अङ्गीकार कृत, एम कह्युं वृत्तिकार ।
जे दिक्षा देवा जोग्य नहीं, तेह अयोग विचार १६५
अक्षीण रागपणे कह्यो, ते राग भावरे मांहि ।
आणाँ केवली नी अछै, अथवा आज्ञा नाहिं ।१६६।
वालि परिचय करि नैं कह्यो, ते परिचय पहिछान ।
आछो छै अथवा बुरो, न्याय विचार सुजान १६७
ईषत् स्नेह गर्भानु कम्प, सभावथी अवलोय ।
अङ्गीकृत कह्युं वृत्ति में, तास न्याय हिव जोय ।१६८।
जे अनुकम्पा नें विषै, स्नेह रह्यो छै ताय ।
स्नेह गर्भ अनुकम्पते, मोह अनुकम्प कहाय ।१६९।
भावें स्नेह अनुकम्प कहो, भावै मोह अनुकम्प ।
श्री जिन आज्ञा बार है, सावद्य तेह प्रपंच ।१७०।
मोह कर्म नां उदय थी, स्नेह राग ए होय ।
तिण सुं स्नेह अनुकम्प ते, मोह अनुकम्पा जोय १७१
स्नेह किणसुं करिवो नहिं, भाष्यो श्री जिनराय ।
उत्तराध्ययनैं आठ मैं, दूजी गाथा मॉय ॥ १७२ ॥

ईषत् स्नेह अनुकम्प कही, ते अनुकम्पा सोय ।
सावद्य पाप सहित छै, अथवा निर्वद्य जोय ।१७३।
जो निर्वद्य अनुकम्प ए, तो इषत् क्युं ख्यात ।
पूरण कृपा करि प्रभु, इमकहता अवदात ।१७४।
ईषत स्नेह अनुकम्प ए, जो सावद्य छै सोय ।
तो सावद्य में धर्म नहीं, हिये विमासी जोय १७५
ईषत लोभ भलो नही, ईषत भलो न मान ।
ईषत माया नहिं भली, तिम ईषत स्नेह जान १७६
ईषत कूट भलो नही, ईषत भलो न क्रुद्ध ।
ईषत अदत्त भलो नही, तिम ईषत स्नेह अशुद्ध १७७
गौतम नें जिन स्नेह थी, अटक्यो केवल ज्ञान ।
तो गोशालारा स्नेह थी, धर्म पुराय किमजान १७८
काल अनागत दोप पिण, वृत्तिकार आख्यात ।
तो प्रशंसवा योग्य ए, कार्य्य केम कहात ।१७९।
होणाहार निश्चय तिको, टल्यो नहिं टलंत ।
तिण कारण गोशाल नें दिक्षा दी भगवंत १८०
वृत्तिकार पिण इम कह्यो, तुम्ह नें पिण तिण रीत ।
कहिवुं तेहिज उचित छै, वारूं वचन वदीत ।१८१।
कोई कहै ए वृत्ति नें, तुम्हे न मानो कोय ।
तो बात वृत्ति नी किम कहो, हिव उत्तर अवलोय १८२

भगवती शतक अठार में प्रभुजी भणी प्रत्यक्ष ।
सोमिल प्रश्न न पूछिया, शरसव भक्ष अभक्ष ।१८३।
जिन कह्यो जे ब्राह्मण तणा, शास्त्र विषै आख्यात ।
शरसव नां बे भेद है, इत्यादिक अवदात ।१८४।
तो ब्राह्मण नां शास्त्र प्रते, स्युं मान्युं जगनाथ ।
पिण तेह नै समझायवा, तसु मतनी कही बात१८५
तिम मिलती ए वार्त्ता, वृत्ति तणी आख्यात ।
जे वृत्ति मानैं तेहनैं, समझावा कही बात ।१८६।
वलि प्रभु गोशाला तणी, अनुकम्पा चित्त ल्याय ।
शीतल तेजू फोडवी, रक्षा कीधो ताय ।।१८७।।
वृत्तिकार इण आखियो, तेह सराग पणेह ।
एक दया नैं रश थकी, रक्षा कीधो एह ।१८८।
बे मुनी नैं न बचावसी, तब वीत राग भावेह ।
लब्धि अण फोडवा थकी, अवश्य भावी एह १८९
इहां सराग पणै कह्यो, ते सराग पणारे मांय ।
धर्म पुण्य किण विध हुवै, देख विचारो न्याय १९०
सराग पणों कहिनें पछै, दया एक रश ख्यात ।
जिसो सराग पणों हुवै, तिसी दया ए थात ।१९१।
सराग भाव निर्वद्य नहीं, तिम दया न निर्वद्य एह ।
दोनूं सावद्य जाणवा, न्याय विचारी लेह ।।१९२।।

वे साधु नविराखीया, ते बीत राग भावेह ।
दयावंत पिण जद हुंता, पिण सावध दया न तेह १६३
बीत राग थयां पछै, भाव सराग न होय ।
तिम बीत राग थयां पछै, सावद्य दया न कोय १६४
कोई कहै सावद्य दया, किहां कही छै तांम ।
न्याय कहुं छूं तेह नों, सुण राखो चित्त ठाम ।१६५।
हेमि नाम माला विषै, आठ दया रा नाम ।
दया शूक कारुण्य फुन, करुणा घृणानु ताम ।१६६।
कृपा अनें अनुकम्प फुन, वलि अनुक्रोश कहाय।
नाम एकार्थ आठ ए, तृतीय काण्डरै मांय १६७

॥ अथ हेमिनाम माला में आठ दयारा नाम कह्या ते लिखीये छै ॥

सूरत्रोथ दयाशुकः कारुण्यं करुणा घृणा कृपानु कम्पानु क्रोशो ॥ इति ॥

जिन ऋष सामों जोवीयो, रत्तन द्वीप नीं जेण ।
देवी नी करुणा करी, ज्ञाता नवम् अज्झेण ।१६८।
करुणा नाम दया तणो, ते माटै सुविचार ।
एह दया सावद्य छै, श्रीजिन आज्ञा बार ॥१६९॥
उत्तराध्येन बावीस में, नेम नाथ भगवान ।
जीव देख अनुक्रोश मन, पाठ विषै पहिछान ।२००।

अनुक्रोश ते करुणा कही, अविचारि में अर्थ ।
ते माटै करुणा दया, निर्वद्य एह तदर्थ ॥ २०१ ॥
तिण सुं भाव सराग नी, दया ज सावद्य सोय ।
अष्टादश में देखलो, दशमूं राग सु जोय ।२०२।
लब्धि अण फोडववा थकी, वीत राग भावेह ।
वे साधु नवि राखस्ये, ए पिण वृत्ति विषेह ।२०३।
तिण सुं सराग भाव करि, सीतल तेजू लेश ।
लब्धि फोडवी राखीयो, गोशालक सुविशेष २०४
गोशालक हणवा भणी, बाल तपश्वी जेह ।
उष्ण तेजु लेश्या प्रते, मुंकी पाठ विषेह ॥२०५॥
भगवंत अनुकम्पा करी, लेश्या सीतल तेह ।
मूंकी गोशालक भणी, रक्षण करण कहेह ।२०६।
उष्ण तेजु लेश्या कही, सीतल तेजही लेश ।
तेजु लेश ए बिहुं कही, पाठ विषे सु विशेष २०७
उष्ण तेज लेश्या प्रते, तापस मूंकी सोय ।
लेश्या सीतल तेज प्रति, प्रभु मूंकी अवलोय २०८
तिण सुं तेजु लब्धि प्रति, फोडी नैं भगवान ।
गोशाला नैं राखीयो, छद्मस्थ थकां पिछान ।२०९।
केवल ज्ञान थयां पछै, लब्धि फोडवणी नांहि ।
बहु ठामैं वर्जी प्रभु, देखो सूत्र मांहिं ॥ २१० ॥

पद छत्तीसम् पन्नवणा, वैक्रिय लब्धिज ताय ।
फोडवां कृया जघन्य त्रण, उत्कृष्ट पंचही पाय ।२११।
इमहिज आहारिक लब्धि प्रति, फोड्यां थी पाहिछान ।
जघन्य तीन कृया कही, उत्कृष्ट पंच सुजान ॥२१२॥
इमहिज तेजू लब्धि प्रति, फोडे तेहनें जोय ।
जघन्य तीन कृया कही, उत्कृष्ट पंच ज होय ।२१३।
तेजु लब्धि जे फोडवी, प्रभु छद्मस्थ पयोह ।
केवल लह्यां कृया कही, वैक्रिय नीपरे एह ॥२१४॥
सराग भाव करि कार्य कृत, तास स्थाप स्युं होय ।
केवल लह्यां पछे कह्यो, तास स्थाप छे सोय ।२१५।
कोई कहे अनुकम्प करि, प्रभु राख्यो गोशाल ।
ते माटे इहां धर्म छे, उत्तर तास निहाल ॥२१६॥
वृद्ध तणी अनुकम्प करि, कृष्णे ईंट उपाड ।
तासघरे मेली कही, अंतगडे आधिकार ॥ २१७ ॥
सुलसां नी अनुकम्प करि, पुत्र देवकी नांज ।
मंक्या हरण गवेषि सुर, सूत्र अंतगड साज २१८
पथ्य धारणी भोगव्यो, गर्भ अनुकम्पा आंण ।
अभय अनुकम्पा सुरकरी, दोहलो पूर्‍यो जांण २१९
हरकेशी मुनिवर तणी, अनुकम्पा करि यत्त ।
रुधिर वमंता छात्र कृत, उत्तराध्ययन प्रतत्त ।२२०।

वाले मुनि नीं व्यावच अर्थ, छात्रां नैं दुःख देह ।
ए पिण सावद्य जाणवो, तिम अनुकम्प कहेह ।२२१।
अनुकम्पा त्रश जीवनीं, आंणी नैं मुनिराय ।
बांधे बांधतां प्रति, अनुमोद्यां दंड आय ।।२२२।।
इमहिज छोडे छोडतां प्रति, मुनि जे अनुमोदेह ।
निशीथ उद्देशे बारमैं, दंड चौमासी कहेह ।।२२३।।
अनुकम्पा ए सहु कही, पाठ विषे पहिछाण ।
जिन आज्ञा नाहिं तेह मैं, तिण सुं सावद्य जाण २२४
तिम प्रभु गोशाला तणी, अनुकम्पा चित आंण ।
तेजू लब्धिज फोडवी, तिण सुं सावद्य जांण २२५
आहारिक लब्धि फोडवे, अधि करण कह्यो तास ।
शतक सोलमैं भगवती, प्रथम उद्देश विमास ।२२६।
वैक्रिय लब्धि फोडवे, कह्यो विराधक ताहि ।
भगवती तीजे शतक मैं, तुर्य उद्देशा मांहि ।२२७।
जंघा विद्या चारणा, लब्धि फोडवी जाय ।
ते थानक विन पडिकम्यां, कह्या विराधक ताय।२२८।
भगवती गोतम गुण मझै, तेजु लेश्या प्रति ताहि ।
संकोचे ते गुण कह्यो, फोडयां गुण कह्यो नाहिं २२९
इत्यादिक बहु सूत्र मैं, तेजू वैक्रिय आदि ।
मुनि नैं लब्धि न फोडणी, देखो धर अहल्लाद ।२३०।

जो लब्धि फोड गोशाल नैं, राख्यां धर्मज होय।
तो बे मुनि प्रति राख्या न क्यूं, न्याय विचारी जोय॥
जब कहै बे मुनिवर तणों, मृत्यु जांण भगवान।
तिण कारण राख्या नहीं, हिव तसुं उत्तर जांण।२३२।
वृत्तिकार तो इमकह्यो, वीत राग भावेह।
लब्धि अण फोडयां थकी, वलि अवश्य भावी छै एह
सीतल तेजू लब्धि प्रति, अण फोडवाथी ख्यात।
तिण सुं सीतल तेजु पिण, किम फोडे जगनाथ २३४
ज्यो प्रभु बे मुनिवर तणों, जाणयों मृत्यु जिवार।
तो मुनि गौतम आदि त्यां, क्युं नहिं कीधी सार२३५
गौतम आदि विषे हुंती, सीतल तेजू लेश।
त्यां लब्धि फोड राख्या न क्युं, बे मुनि प्रति सुविशेष
जब कहै गौतम आदि प्रते, वर्ज्यां प्रभुजी ताय।
तिण सुं मुनि राख्या न बे, निसुणो तेहनों न्याय२३७
प्रभु तो आनन्द नैं कह्यो, तु मुनि प्रते कहेह।
धर्म प्रति चोयण मत करो, गोशालक थी जेह।२३८।
पिण मुनि प्रते न बचावणा, इम तो आख्यो नाँय।
तिण सुं गौतम आदि जे, मुनि नहीं राख्या काँय२३६
पिण जे लब्धि फोडण तणी, श्रीजिन आज्ञा नाँय।
तिण सुं सीतल तेजु प्राते, किम फोडे मुनिराय।२४०।

लब्धि फोड गोशाल नैं, राख्यो श्री भगवान ।
जद छद्मस्थ पणै हुंता, मोह स्नेह बस जान ।२४१।
जलथी नाव भरीजती, देखी नैं मुनिराय ।
गृही प्रते बतावणो नहीं, द्वितीय आचारङ्ग माँय २४२
डूबै आप अनें वलि, जे डूबै बहु जीव ।
तसुं अनुकम्प करै नहीं, रहै सम भाव अतीव ॥२४३॥
मात बचावा ऊठियो, चूलणि पिया पिछाण ।
तसुं पोशह भागो कह्यो, सप्तम् अङ्ग जाण ॥२४४॥
मिथला बलतीः देख नमि, स्हामों जोयो नाहिं ।
देखो उत्तराध्ययन में, नवमें अध्येनें ताहि ॥२४५॥
दशवै कालिक सातमैं, देव मनुष तिर्यञ्च ।
विग्रह लडता परस्पर, देखी नैं मुनि संच ॥२४६॥
एहनी होवै जीत फुन, एहनी होवै हार ।
एहवुं न कहै महामुनी, हिव तसु न्याय विचार २४७
हार जीत नवि वंछवी, तो तास विचै पड संत ।
केम करावै हार जय, देखोजी मति मंत ॥२४८॥
छेदै हरश मुनि तणी, कृया वैद्य नैं ख्यात ।
शतक सोलमैं भगवती, तृतीय उद्देश संजात ॥२४९॥
आज्ञा श्री जिनवर तणी, जेह कार्य मैं नाँय ।
तेह कार्य कीधां छतां, धर्म पुराय किम थाय ॥२५०॥

तिमज लब्धि फोडण तणी, श्रीजिन आंण न देह ।
धर्म पुराय किम तेह मैं, न्याय विचारो एह ।२५१।
कोई कहै छद्मस्थ प्रभु, फोडी लब्धि जिंवार ।
दराड लियो स्युं तेह नौं, हिव तसुं उत्तर सार ।२५२।
राजमती नैं बोलियो, विषय बचन रहनेम ।
प्रायश्चित चाल्यो न तसुं, पिण लियो हुस्ये धर पेम
जल विच पात्री नाव जिम, आदमुते ऋषि किद्ध ।
प्रायश्चित चाल्यो न तसुं, पिण लीधो हुस्ये प्रसिद्ध
मोह बसै सीहो मुनी, रोयो मोटे साद ।
प्रायश्चित चाल्यो न तसुं, पिण लीधो हुस्ये संवाद२५५
धर्म घोषनां संत जे, आंवी चोहटा मांहिं ।
नाग श्री हेली निन्दी तसुं दराड चाल्यो नाहिं २५६
हणसे हय नृप सारथी, नाम सुमङ्गल संत
प्रायश्चित चाल्यो न तसुं, शतक पनरम् उद्दंत ।२५७।
कोई कहै आलोयणा, प्रडिक्कमणा कही तास ।
तिण सुं ए दंड तेहनुं, हिव उत्तर सुविमास ।२५८।
चर्म समय नूं पाठ ए, खंधक धन्नो आदि ।
वहु मुनि नों समुच्चय कह्यो, तिम ए पिण संवाद२५९
जंघा विद्या चारणा, तस्स ठाणस्स सोय ।
आलोइय पडिक्कं मिय, एहवो पाठ सु जोय ।२६०।

लब्धि फोडी ते स्थान प्रति, आलोवी गुणवन्त ।
वलि पडिक्कमें ते मुनी, पद आराधक हुन्त ।२६१।
मुनी सुमङ्गल स्थानके, तस्स ठाणस्स नांहिं ।
तिण सुं लब्धि फोडण तणो, दण्ड कह्यो नहिं ताहि।
पिण नृप हय अरु सारथी, हणसे दण्डज तास ।
तेह मुनी लेस्ये सही, कह्युं सव्वठ सिद्धवास २६३
इत्यादिक बहु ठामही, प्रायश्चित चाल्या नांहिं ।
पिण लिया हुस्ये महामुनी, गुणी देखोजी दिल मांहिं
तेजु लब्धि जे फोडवे, तास क्रिया त्रण पंच ।
केवल लह्यां कह्यो प्रभु, तिण सुं दण्ड सुसंच ।२६५।
कल्पातीत हुंता प्रभु, छै ए सांची वांण ।
पिण किण गुणठाणे तिके, कहिये चतुर सुजाण२६६
प्रभुजी चारित्त लियां पछी, श्रेणि चढया पहलांज ।
सप्तम गुण छट्ठे वली, बे गुणठाण समाज ॥२६७॥
सप्तम् गुणठाणा तणी, उत्कृष्टी अवलोय ।
अन्तर महुरत स्थिति छै, छट्ठे बहु स्थित जोय ।२६८।
छट्ठा गुणठाणा विषे, आखी च्यार कषाय ।
षट् लेश्या संज्ञा चिहुं, अशुभ जोग पिण आय २६९
परिचय स्नेह अनुकम्प करि, अक्षीण राग पर्णेह ।
सराग भाव फुन लब्धि नूं, फोडव बुं पिण लेह २७०

प्रथम छट्ठा गुणठाणा नां, प्रगट भाव ए पेख ।
निर्वेध किम कहिये तसुं, न्याय विचारी देख ।२७१।
जेह कार्य नीं केवली, आज्ञा न दिये कोय ।
धर्म पुण्य नहिं तेह में, हिये विमासी जोय २७२
जेह कार्य नीं केवली, आज्ञा देवे आप ।
धर्म पुण्य छै तेह में, तिहां नहिं किञ्चित पाप ।२७३।
केई जिन आज्ञा में पाप कहे, धर्मजिन आज्ञा बार।
विहुं विध अशुद्ध प्ररुपवे, किम पामें भव पार ।२७४।
जिनधर्म जिन आज्ञा दिये, जिन धर्म सिखावे आप।
जे धर्म कहे आज्ञा विना, ते कँवण प्ररुप्यो थाप २७५
आज्ञा बारे धर्म रो, कँवण धणी अवलोय ।
हात जोडि पूछ्यां थकां, कुण आज्ञा दे सोय ।२७६।
देव गुरू तो मौन रहे, नहिं अनुमोदे अंश मातः।
तो आज्ञा बाहिर धर्म री, उत्पतिरो कुण नांथ ।२७७।
संवर नें वलि निरयरा, दोय प्रकारे धर्म ।
जिन आज्ञा में ए विहुं, ते थी शिवसुख पर्म ।२७८।
दोय प्रकारे धर्म वलि, श्रुत फुन चरित पिछाण ।
जिन आज्ञा ए विहुं विषे, समभो सुगण सुजाण २७६
पंच महाव्रत साधुरा, श्रावक नां व्रत चार ।
जिन आज्ञा में ए विहुं, आज्ञा बार असार ॥ २८० ॥

तिणसुं जिन आज्ञा तणी, राखो सुगण प्रतीत ।
धर्म जिन आज्ञा धारियो, ते गया जमारो जीत २८१

॥ अथ हितशिक्षा ॥

दुःख बहु नरक निगोदनां, सह्या अनन्ती वार ।
धर्म जिन आज्ञा शिर धरै, हुवै तास निस्तार २८२
मनुष जन्म दोहिलो लह्यो, लही सामग्री सार ।
पंच महाव्रत आदरी, आराध्यां भव पार ॥२८३॥
जो चरित धर्म ग्रही नहिं सकै, तो श्रावक नां व्रत बार।
निर अतिचारे पालियां, पामैं भव दधि पार २८४
जो बार व्रत ग्रही न सकै, तो समदृष्ट उदार ।
देव गुरू धर्म उंलख्यां, सुख पामैं श्रीकार ।२८५।
जो पूरी समझ पड़े नहीं, तो गुणवन्त रा गुण गाय ।
कोइक रशायण आवियां, पातिक दूर पुलाय २८६
पोतै व्रत पाले नहीं, पाले ज्यासुं द्वेष ।
दोय मूर्ख तिण नैं कह्यो, प्रथम आचाराङ्ग देख २८७
गुणवंतरी निन्दा कियां, कर्म तणु बंध होय ।
तेह कर्म थी दुःख लहै, नरक निगोदे सोय ॥२८८॥
तिण सुं हित सिक्षा भली, धारै सुगण सुजाण ।
राग द्वेष छांडी करी, आराधै जिन आंण ।२८९।

॥ कलश ॥

॥ चाल गीतक छन्द ॥

जिन वयण गुण मणी रयण सार उदार देखी संग्रह्या, अवि तथ्य पथ्य सु अर्थ जे मुझ भ्यासनां मैं जिम कह्या। अति श्रिष्ट मिष्ट गरिष्ट प्रवर विशिष्ट जिन बच आद्यतं। बच विरुद्ध को आयो हुवै मुझ तास मिथ्या दुःकृतं ॥ १ ॥ उगणीसै तेतीस वर्ष विद द्वादशी फागुण वही, वर शहर बीदाशर विषै हद श्रमण एकावन सही। फुन अर्जका इक शय तिहां गणी आंणा संप्रति सोभती। वर समय सार उदार निर्णय कीध जय जश गणपती ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

भिक्खू भारीमाल फुन, तृतीय पाट ऋषि राय ।
तास पसाए सुगण वृद्धि, जय जश हर्ष सवाय ॥१॥
तिण काले भिक्खू गणे, मुनिवर छिन्तर दोय ।
इक सह त्राणु अर्जका, गणी आंणा अवलोय ॥२॥
उत्तर तुम्हे मंगाविया, हमे लिखाव्या नाँय ।
ते माटे ए प्रश्न नां, उत्तर दोहा वणाय ॥ ३ ॥
दोहा ग्रहस्थ कंठे करी, निज मति थकी लिखेह ।
तिके खोट ज्यों को लिखी, तो मुझ दोषण मत देह ४

॥ इति ॥

॥ अथ छव्वीस मूं प्रतिमा वैराग नौं हेतु कहै तेह नुं उत्तर ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै वैराग्य नौं, हेतु प्रतिमा एह ।
जिन प्रतिमा देखी करी, वर वैराग लहेह ॥ १ ॥
ते माटै वन्दनीकहै, जिन प्रतिमा जग माँय ।
हिव तेहनुं उत्तर कहुं, सांभल जो चित्तल्याय ॥२॥
वृषभ देख प्रति बूझियो, कर कंडू नरराय ।
दुमुह इन्द्रध्वज स्यम्भ प्रति, देख सम्वेग सुपाय ।३।
चूडि सूं प्रति बूझियो, नमि नृपति तिह काल ।
अम्ब देख प्रति बूझियो, नगई नाम भूपाल ।४।
उत्तराध्ययन इक वीसमैं, समुद पाल सम्वेग ।
पायो तस्कर देख नैं, देखो तज उद्वेग ॥ ५ ॥
सम्वेग पाठ तणो अर्थ, अविचूरि में ख्यात ।
सम्वेग नां हेतु भणी, सम्वेग चोर कहात ॥ ६ ॥

॥ सूत्र गाथा ॥

तं पासि ऊण सम्वेगं, समुद्दपालो इण मब्बी, अहो असुहाणं कम्माणं, निज्झाणं पावगं इमं ॥ उत्तराध्ययन २१ वें गाथा ९ मीं ॥

॥ अत्र अविचूरी ॥

तमिति तथा विध द्रव्यं दृष्ट्वा संवेग ससार वैमुख्यतो मुक्त्य ऽभिलाषस्तद्धेतुत्वात्सोऽपि संवेगस्तं समुद्रपाल इदं वक्ष्यमाण अब्रवीत् यथा अशुभानां पापकानां कर्म्मणा मनुष्ठानानां निर्यानं अव-सानं पापकं अशुभ इदं मत्यक्ष अमौवराकौ वद्धार्थ मित्थं नीय ते इति भावः ।

॥ वार्त्तिका ॥

इहां कह्यो तं कहतां ते, तथा विध द्रव्य देखी नें सम्वेग ते संसार विमुखपणो मुक्तिनी अभिलाषा ते सम्वेग नां हेतु पणां-थकी, सोपि कहतां तिको चोर पिण सम्वेग, जिम पापकारी कर्म्म ते अनुष्ठान ना छेहडे अशुभ ए मत्यक्ष रांक वध नें अर्थे इह विध लेजाय छै, एटलै सम्वेग नौं हेतु चोर ते देखी नें समुद्रपाल बोल्यो अशुभ कर्म्म नां फल ए भोगवै छै।

॥ दोहा ॥

सम्वेग नौं हेतु कह्यो, तशकर नैं अवलोय ।
पिण गुण नाहिं छै ते भणी, वन्दन योग न कोय ।७।
वृषभादिक देखी करी, करकराड्ड आदेह ।
बूझया पिण वृषभादि ते, वन्दनीक न कहेह ॥८॥
मुनि वेसैं जे पासत्थो, तसुं देखी नैं सोय ।
वैराग पावै पिण तिको, वन्दन योग न कोय ।६।
तिम जिन प्रतिमा देख नैं, पावै जे वैराग ।
पिण ते वन्दन योग नहीं, देखो मत पक्ष त्याग ।१०।

ज्ञान दर्शन चारित तणा, गुण नाहिं छै जे माँय ।
ते सम्वेग नों हेतु हुवै, पिण वन्दनीक नाहिं थाय ।११।
मुनिवर प्रति देखी करी, द्वेष धरै मन कोय ।
द्वेष तणौ हेतु मुनी, पिण निन्दनीक नाहिं होय ।१२।
श्रवानु भुत्ति मुनि तणां, वचन सुणी गोशाल ।
कोप्यो सिघ्र उतावलो, भस्म कियो तेह काल ।१३।
कोप तणो हेतु मुनी, पिण गुण सहित सु शंत ।
ते माटै निन्दनीक नहीं, देखोजी बुद्धिवंत ।।१४।।
सु नक्षत्र नां वचन सुणि, धर्‍युं गोशालै द्वेष ।
द्वेष तणो हेतु तिको, पिण निन्दनीक नाहिं पेख ।१५।
वीर प्रभूनां वचन सुणि, कोप्यो सिघ्र गोशाल ।
कोप तणा हेतु प्रभु, पिण निन्दनीक मत न्हाल ।१६।
छद्मवीर प्रति देखि नें, जन वहु द्वेष धरेह ।
दुःख दीधा अति आकरा, आख्यो धुर अङ्गेह ।।१७।।
द्वेष तणा हेतु प्रभु, पिण ते गुण सहीत ।
तिणसुं ते निन्दनीक नाहिं, देखोजी धरप्रीत ।१८।
वस्तु जे गुण सहित प्रति, देखी द्वेष लहेह ।
द्वेष तणो हेतु तिका, पिण निन्दनीक नाहिं जेह ।१९।
वस्तु जे गुण हीण प्रति, देखि सम्वेग लहेह ।
संम्वेग नौं हेतु तिका, पिण निन्दनीक नाहिं तेह ।२०।

॥ अथ सत्तावीसम ब्राह्मी लिपि अधिकार ॥

18807

॥ दोहा ॥

कोई कहै अङ्ग पंच मैं, ब्राह्मी नीं लिपिसार ।
नमस्कार तेह नैं कर्‍युं, हिव तसु उत्तर धार ॥१॥
नमो बंभीए लिवी ए, लिपि कर्त्ता नाभेय ।
चरणा सहित जिन ध्रुलिपिक, अर्थ धर्मसी एह ॥२॥
प्राशा नां कर्त्ता भणीं, पायो कहिए तांहि ।
एवं भूत नय नैं मतै, अनुयोग द्वारै मांहि ॥ ३ ॥
अथवा लिपि जे भाव लिपि, जे मुनि नैं आधार ।
नमस्कार छे तेह नैं, एहवु दीसे सार ॥ ४ ॥
तीर्थं नांम जिम सूत्र नुं, ते संघ नैं आधार ।
तिण सुं सङ्घ नें तीथ कह्युं, तिम भावे लिपि सार ।५।
वृत्तिकार द्रव्य लिपि कही, तेह लिपि गुण सुन्य ।
नमस्कार तेहने करैइं, ते तो बात जघुन्य ॥ ६ ॥
द्रव्य निक्षेपो गुण रहित, वंदन जोग्य न तांम ।
समवायङ्ग देखल्यो, द्रव्य भाव जिन नाम ॥ ७ ॥
भरत एरवत खेत्र नां, अनागते जिन नाम ।
समचै चौवीस नाम जिन, वन्दे पाठ न तांम ॥८॥

वले एरवत खेत्र नीं, चउवीसी वर्त्तमान ।
ठाम ठाम वन्दे कह्युं, ए गुन सहित सुजान ॥९॥
वर्त्तमान चउ वीस ए, भर्त्त खेत्र नी ताहि ।
ठाम-ठाम वंदे कह्यो, जोवो लोगस्स मांहि ॥१०॥
ते लेखै द्रव्य लिपि भणी, द्रव्य सुत्र नैं सोय ।
नमस्कार किम किजीए, हिये विमासी जोय ।११।
वृत्तिकार द्रव्य लिपि भणीं, थाप्यो छै नमस्कार ।
सुत्र थकी मिलतो नथी, एह अर्थ अवधार ॥१२॥
तथा पत्र मैं जे लिख्या, अक्षर ना आकार ।
वन्दनीक जो ते हुवै, तो लिपि अष्टा दश धार ।१३।
अष्टादश लिपि नैं विषै, वेद पुराण संपेख ।
कुरान जोतिष पिण हुवै, वंदनीक तुम्ह लेख ।१४।
अष्टादश लिपि नैं विषै, वर्ण संज्ञा संपेख ।
सहु पुस्तक मैं जे लिख्या, वंदनीक तुम्ह लेख ॥१५॥
वैदकविकथा वारता, मन्त्र जन्त्र फुन तन्त्र ।
कोक सामुद्रिक शास्त्र ए, लिपि मैं सहु आवंत ।१६।
पाप शास्त्र गुन तीश फुन, वर्ण स्थापना पेख ।
ए अठारे लिपि विषै, वन्दनीक तुम्ह लेख ॥१७॥
वीतराग तो तेह नै, पाप शास्त्र आख्यात ।
द्रव्य लिपि कहिए तेह नैं, वन्दनीक किम थात ।१८।

जो बन्दनीक द्रव्य लिपि हुवे, द्रव्य लिपि कही अठार।
तेह विषे सहु आविया, किम बन्दे अणगार।१६।
ते माटे ते भाव लिपि, वा करता नाभेय।
ऋषभ चर्या गुण युक्त नैं, नमस्कार सुगुणेह।२०।

॥ वार्तिका ॥

कोई कहे भगवतीरे आदिमैं णमोबंभीए लिविए। ए शब्द कही पछे कह्यो णमो सुयस्स ते लिपि नैं नमस्कार करी सूत्र नैं नमस्कार कर्युं ते भाव श्रुत नैं नमस्कार कर्यें हुवै ते भाव सूत्र नैं विषै भावलिपी पिण आयगई तो पूर्वे भाव लिपि नैं नमस्कार कीधो तेहनुं स्युं कारण णमोबंभीए लिविए अनें नमो सुयस्स ए बेपद किमकह्या तेहनुं उत्तर॥दशवै कालिक अध्येन आठ में गाथा ४१ मीं में कह्यो कुम्मुवं अल्लिण पल्लिण गुत्तो, काछवा नीपरे अल्लीण ते इषत् गुप्त पल्लिण ते प्रकृष्ट लीन घणो गुप्त इहां बेपद कह्या तथा दशवै कालिक अध्ययन चौथे कह्यो पृथिवी काय ऊपर न लिहेज्जा कहितां थोडो सो अथवा एक वार लिखै नहीं, न विलिहेज्जा कहतां बहुवार लिखै नहीं इहां पिण बेपद कह्या, तथा उत्तराध्ययन पहले आलवंते लवंते वा न सिएज्जा कयाइवि गुरुई, आलवं ते कहतां एकवार बोलाव्यो वा ते अथवा लवंते कहतां वार वार बोलाव्यो नें शिष्य बैठो रहे नहीं कदाचित पिण इहां पिण बेपद कह्या. तथा उत्तराध्ययन इग्यारमें नासीले कहितां सर्वथा चारित्र नी विराधना नथी, विसीले कहतां देशथकी चारित्रनी विराधना नथी इहां पिण देश अनें सर्व ए बेपद कह्या, तथा वृहत्कल्प उद्देशे तीसरे अंतर घरनैं विषै साधू नैं न कल्पे निद्दा इत्यादि कहितां थोडी नींद लेवी

पयला इत्तएवा कहितां विशेप ऊंघवो इहां पिण वेपद कह्या, इत्यादिक अनेकठामें वेपद कह्या तिम इहां पिण वेपद जाणवा लिपि शब्दे भाव लिपि ते देशथकी श्रुत ज्ञान अनें नमो सुयस्स ते सर्व श्रुत ज्ञान कह्यो तथा लिपिना करता ऋषभ देवनैं लिपिक कहिए त चारित्र युक्त प्रथम जिननैं नमस्कार ।

॥ अत्र टीका ॥

अयं च भाग् व्याख्यातो नमस्कारादिकोग्रन्थ वृत्तिकृत्ता न व्याख्यातो कुतोपि कारणा दिति, ए भगवती नी वृत्ति में अभय देव सूरे कह्यो ।

॥ सोरठा ॥

नसमकारादिक ताहिरे, रचना पूर्व कही जिका ।
मूल वृत्तिरे मांहिरे, न कही किण कारण तिका ॥१॥
इम कह्यो वृत्तिकाररे, ते माटे हिव तेहनुं ।
प्रवर न्याय जे साररे, बुद्धिवन्त हिये विचार ज्यो ॥२॥

॥इति॥ श्रीमद्जयाचार्य कृत हित शिक्षावली प्रश्नोत्तर तत्वबोध॥



18807

[f] *Form adjectives from* —Vice, Use, Africa, King

[g] *Give the opposite genders of* —Poet, Hero, Governor, Monk.

[h] *Give the plurals of* —Mr., Louse, Englishman and Brahman.

III. *Parse the italicized in* —

[a] He told me *that*, *that*, '*that*' *that*, *that* man used, was incorrectly used.

[b] Have you *any* pens.

[c] He went *home*.

[d] *Thank* you.

[e] I think it *so*.

IV. [a] *Change the Voice of*—

1. The master punished him for speaking in class.
2. Who rang that bell ? Not I, Sir, Certainly not I.
3. She had been warned more than once.

[b] *Combine the following sentences* —

The Jains honour the name of Aklanka. He defeated the Buddhists. He defeated the Vedanties. He defeated the worshippers of Shakti. He defeated all the non-Jains many times.

[c] *Fill up the blanks in the following* —

1. Not only my sister, but Gopal..........been requested........give......pleasure............company......a dinner party.

2. Such a large house......you live......would not suit my......income.

3. ......five o'clock......morning the village watchman........his brother went.... ...the tank....... they found..........Ranga sitting ....hole.

V. Analyse any two of the following —

[a] His harp his sole remaining joy,
was carried by an orphan boy.

[b] After his schooling was finished, his father, desiring him to be a merchant like himself, gave him a ship freighted with various sorts of merchandise, so that he might trade about the world and grow rich.

[c] Lives of great men all remind us, we can make our lives sublime.

VI. [a] *Convert the following from Indirect to Direct* –

1. A farmer calling his sons to his deathbed told them that he was now departing from this life, and that all he had to leave them they would find in the vineyard.

2 I asked him how many miles he had travelled that day and whether he would not rest there for the night.

[*b*] *Canvert the following into the Indirect form.*—

1. He thus addressed the judge: "My Lord! Look at the sad state I am in. I was attacked and beaten on the high road by a wicked man, who has also robbed me of my bag of gold, all that I possessed in the world."

2 The monkey with a grave face replied: "The case cannot now be closed; you have asked me to make your two shares equal, and I am doing my best to make them so."

VII. [*a*] *Give the various meanings of the following sentence according as emphasis is laid upon the italicized words* —

Do you walk to *Surat to day* ?

[*b*] *Form sentences using the following idioms:*—

To put up with, to set out, to get to, to put forth, to catch sight, to take to.

[*c*] *What is the difference between.*

1. He expected you sooner than I, and He expected you sooner than me.

2. He can speak English only, and only he can speak English.